अखंड ज्योति

१९४०

मार्च
१९५०

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

'अखण्ड-ज्योति' कार्यालय,

फ्रीगंज, आगरा।

ता०————————१९४०

आदरणीय महोदय, सादर अभिवादन,

सेवा में "अखण्ड ज्योति" का नमूना भेजा जा रहा है इसे आद्योपान्त पढ़कर आप प्रसन्न होंगे। यों तो इसमें बहुत सी त्रुटियां हैं पर जैसी कुछ भी यह है अपने स्थान पर अकेली है। हम लोग इस प्रयत्न में निरन्तर लगे रहते हैं कि अपने पाठकों को अच्छी से अच्छी, अधिक से अधिक, सामग्री कम से कम मूल्य में दे सकें।

इन दिनों सभी चीजें मँहगी हो जाने के कारण कागज और छपाई के दाम बहुत ऊँचे चढ़ गये हैं। फिर भी इस बात का प्रयत्न किया गया है कि मूल्य जितना भी कम हो सके, रखा जाय। ऐसे सर्वाङ्ग सुन्दर पत्र का मूल्य १।।) सब दृष्टियों से कम है। हमें नम्रता पूर्वक यह कहने दीजिए कि इतना सस्ता और सुन्दर पत्र दूसरा मिल सकना कठिन है।

प्रायः सभी अच्छे मासिक पत्र नमूना मुफ्त देने का नियम नहीं रखते। क्योंकि उनकी लागत अधिक होती है और विषय बहुतों को रुचिकर नहीं पड़ते। "अखण्ड ज्योति" की एक प्रति का मूल्य ≈) है और डाक खर्च समेत और भी अधिक हो जाता है, इसमें विज्ञापन की आमदनी भी नहीं है। फिर भी इसका नमूना हम मुफ्त क्यों भेज रहे हैं? क्योंकि हमारा विश्वास है कि गुण की परख करने वाले अभी हैं, आत्मा और ईश्वर का अस्तित्व मानने वाले अभी हैं, परलोक और धर्म पर आस्था रखने वाले अभी हैं, योग विद्या, आत्मसंयम, त्याग और तपस्या को महत्व देने वाले अभी हैं। जिन्होंने कुछ कांचन को ही ईश्वर नहीं मान लिया है उनके लिये आध्यात्मिक विषय अब भी महत्व रखता है। और सच्चे धर्म के उपासकों के लिये 'अखण्ड ज्योति' प्राण-प्रिय हुये बिना रह नहीं सकती। जो इसकी एक प्रति मँगा लेगा वह ग्राहक अवश्य बनेगा।

इस आर्थिक संकट के जमाने में १।।) भी बहुत है। परन्तु हम यह भी जानते हैं कि जिसे इस महातत्व से प्रेम है वह यदि शरीर की भूख बुझाने में दो आना रोज खर्च करता है तो आत्मा की भूख बुझाने के लिये दो आना महीना भी कहीं से न कहीं से बचा लेगा।

अतएव इन्हीं विश्वासों के आधार पर हम अखण्ड ज्योति का नमूना मुफ्त भेज रहे हैं। यदि आप इसे उपयोगी समझें तो शीघ्र ही ग्राहक बनकर इस धर्मतरु को सींचने की कृपा करें। आप सज्जन जितना इसे अपनायेंगे उतना ही अधिक यह आपकी सेवा करने में समर्थ हो सकेगा।

कभी कभी अपने कुशल समाचार भेज दिया कीजिए, जिससे हम आप, आपस में एक दूसरे की आत्मा का चुम्बन कर लिया करें। ईश्वर आप पर आनन्द बरसावें।

आपकी मंगल कामना करता हुआ—

सम्पादक

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org
Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विषय-सूची

(१) जीवन-ज्योति (कविता) श्री जिज्ञासु ... १
(२) हमारी होली (संपादकीय) २
(३) सत्य (महात्मा गांधी) ४
(४) ईश्वर कहां है ? (श्री त्र्यंबकलाल पुरोहित) ६
(५) तुम अपरिचित (कविता) श्री० रघुनन्दनलाल प्रधान एम० ए० ६
(६) पहले दो तब मिलेगा ...श्री० एवजसिंह वर्मा ७
(७) धर्मतत्व का वैज्ञानिक महत्व—पं० हंसराज शास्त्री ६
(८) ज्यादा बक-बक मत करो ! कुं० उदयभान सिंह सिकरवार १२
(९) क्रोध से छुटकारा कैसे मिले ? डा० पूनमचंद खत्री १४
(१०) चंचल मन और उसका संयम ... श्री० रामसिंह चौहान १५
(११) स्मरण शक्ति और उसका विकाश श्री० गिरराज किशोर १८
(१२) मेस्मरेजम से हमें क्या फायदा ? ... प्रो० धीरेन्द्रनाथ चक्रवर्ती २०
(१३) योग महिमा—श्री० नारायणप्रसाद तिवारी २२
(१४) क्या मूर्तिपूजा अवैज्ञानिक है ... प्रो० पी० डब्ल्यू० रैलो २४
(१५) मरने के बाद हमारा क्या होता है ? श्री० प्रबोध चंद्र गौतम २६
(१६) मरघट में ... (कविता) मा० उमादत्त सारस्वत २७
(१७) प्राणायाम के लाभ ... पं० शिवराज शर्मा २९
(१८) शिथिलासन ... श्री० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा ३०
(१९) तंत्र विद्या का अधिकारी कौन ? ... (आचार्य आषुतोष मुखोपाध्याय) [illegible]
(२०) तपस्वी कौन है ? पं० तुलसीराम शर्मा ३३

❀ अखण्ड ज्योति के नियम ❀

(१) अखण्ड ज्योति का वार्षिक मूल्य १॥) और एक प्रति का ≈)। है।

(२) लेख या कविताएं केवल आध्यात्मिक विद्या योगशास्त्र, तन्त्र विज्ञान, मैस्मरेजम, मानसिक शक्तियों की विवेचना, प्राकृतिक चिकित्सा तथा सदाचार पर ही आने चाहिये। अन्य विषयों को स्थान न दिया जायगा। लेख जहां तक हो सके छोटे ही लिखने चाहिए।

(३) उपरोक्त विषयों की ही दो पुस्तकें समालोचना के लिये भेजनी चाहिये। एक पुस्तक आने पर केवल प्राप्ति स्वीकार हो सकेगी।

(४) समाचार पत्रों के विज्ञापन परिवर्तन में छापे जाते हैं। आध्यात्मिक पुस्तकों के विज्ञापन, नकद कीमत या उचित कमीशन काट कर दी हुई पुस्तकों के बदले में छापे जाते हैं। अन्य विषयों के विज्ञापन अखण्ड ज्योति में नहीं छपते।

(५) विज्ञापन दर इस प्रकार है—पूरा पेज १६) आधा पेज ९) चौथाई पेज ५) प्रतिमास। तीन मास या इससे अधिक समय तक छपने वाले विज्ञापनों पर एक चौथाई कमीशन काट दिया जाता है।

(६) विज्ञापन दर या अखण्ड ज्योति के मूल्य में कमी करने के लिए पत्र व्यवहार करना व्यर्थ है। एक वर्ष से कम के लिए अखण्ड ज्योति के ग्राहक नहीं बनाये जाते।

(७) अखण्ड ज्योति की एजेन्सी कम से कम ५ प्रति प्रति मास लेने पर दी जाती हैं। जिन्हें एजेंसी लेनी हो वे कमीशन आदि के बारे में पत्र व्यवहार करें।

(८) 'अखण्डज्योति' प्रतिमास २० तारीख को निकल जाती है। एक सप्ताह के अन्दर न मिले तो डाकखाने के उत्तर सहित हमें लिखना चाहिये।

पत्र व्यवहार का पता—

मैनेजर—अखण्डज्योति फ्रीगंज आगरा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धार्मिक जगत में क्रांति उत्पन्न करने वाला
मासिक पत्र

"नाम-माहात्म्य"

मँगाया करे ! इसमें श्री भगवन्नाम प्रेम सम्बन्धी उच्चकोटि के लेख- महात्माओं के अमूल्य उपदेश, श्री तुलसीराम, सूरदास, कबीर, मीरा जी, नारायण स्वामी आदि सन्तों की वाणियां, मानवजीवन को कल्याण कारी चेतावनी, नाम कीर्तन की सुमधुर ध्वनियां, प्रतिमास प्रकाशित होते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य श्रीभगवन्नाम प्रचार करना है। बढ़िया कागज पर सजधज के साथ निकलता है। इसका वार्षिक मूल्य डाक व्यय सहित लागत से भी कम केवल १) है। आज ही १) मनी आर्डर से लिखे पते पर भेज कर इसके ग्राहक बनिये।

—मेनेजर "नाम माहात्म्य" कार्यालय
पो० वृन्दावन यू० पी०

श्री धूतपापेश्वर पनवेल लि० द्वारा पुरस्कृत

सचित्र] आरोग्यमंदिर [मासिक

आर्यवैद्यक, व्यायाम एवं आरोग्य विषयों पर न्यौछावर किया हुआ।

हरेक आरोग्येच्छु के लिये उपयुक्त। फरवरी १९४० से तीसरी वर्ष शुरू।

वार्षिक मूल्य मय डाकखर्च के ३)।
विज्ञापन के निर्ख—
१ पृष्ठ १२), ½ पृष्ठ ७), ¼ पृष्ठ ४)। आयुर्वेदीय साहित्य के लिये आधा निर्ख

व्यवस्थापक—आरोग्यमन्दिर
पनवेल—को...
आयुर्वेदीय उच्चकोटि की सचित्र मासिक पत्रि...

"संकीर्तन" क्या है?

अशान्त, दुखी, क्षोभित तथा आध्यात्मिक मार्ग में अग्रसर होने के इच्छुक लोगों के लिये शान्ति, सुख एवं आनन्द का मार्ग बता कर भगवन्नाम के द्वारा पूर्ण आध्यात्मिक शिक्षा देने वाला एक मात्र पत्र। भारत के प्रसिद्ध महापुरुषों, योगियों तथा भक्त महात्माओं के उपदेश, सन्देश तथा उच्चतम धार्मिक लेख पवित्र ओजस्वी कवितायें, मनोहर धार्मिक नाटक तथा "संकीर्तन" जगत के धार्मिक समाचार सब आपको एकत्रित मिलेंगे। सचित्र मासिक पत्र का मूल्य केवल ३≡) वार्षिक इतने में ही लगभग ४०० पृष्ठों का विशेषांक भी मुफ्त मिलेगा। सभी धर्म एवं भगवन्नाम प्रेमियों के संग्रह की वस्तु है।) का टिकट भेजने पर नमूने की प्रति भेजी जावेगी।

—"संकीर्तन" कार्यालय, मेरठ

अनुभूत योगमाला

यह मासिक पत्रिका आज १७ वर्ष से आयुर्वेदीय चिकित्सा का चमत्कार दिखाने और हकीमों वैद्यों से निराश रोगियों के रोग का हाल छपा कर भारतीय प्रसिद्ध वैद्यराजों की सम्मति लेकर रोग मुक्त करने के लिए प्रगटित होती है। अनुभूत योगों एवं उत्तमोत्तम लेखों के द्वारा थोड़ा पढ़ा लिखा आदमी भी वैद्य बन जाता है, इसी कारण इसने इतने थोड़े समय में ही बहुत ख्याति प्राप्त की है, जो आज तक अन्य आयुर्वेदीय पत्रों ने नहीं प्राप्त कर पाई, इसके विषय में बहुत कुछ कहना अपनी तारीफ कहना है, बस एक बार अजमावें और मंगाकर अवश्य अवलोकन करें। वार्षिक पेशगी मूल्य मनीआर्डर ४) वी० पी० मंगाने से ४।≈) देना होगा। नमूना मुफ्त मंगा कर देखें।

—मिलने का पता—
श्री हरिहर प्रेस, बरालोकपुर-इटावा (यू० पी०)

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस अंक के कुछ प्रतिभाशाली लेखक

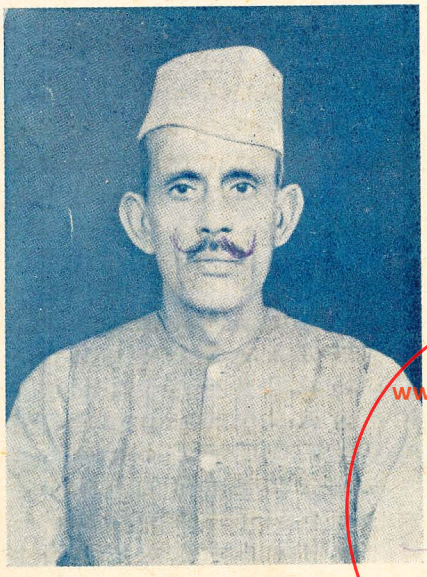

श्री एवजसिंह वर्मा आगरा

श्री नारायणप्रसाद तिवारी कान्हीबाड़ा

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

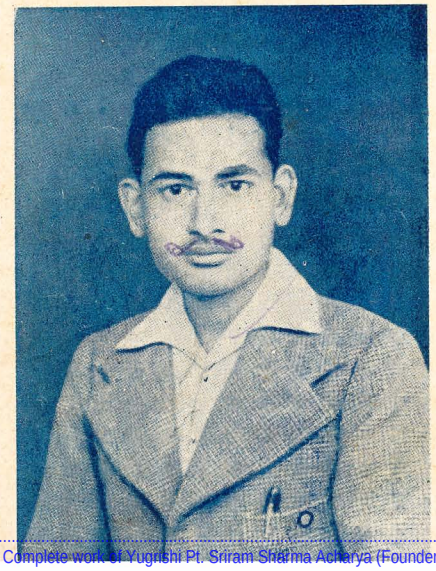

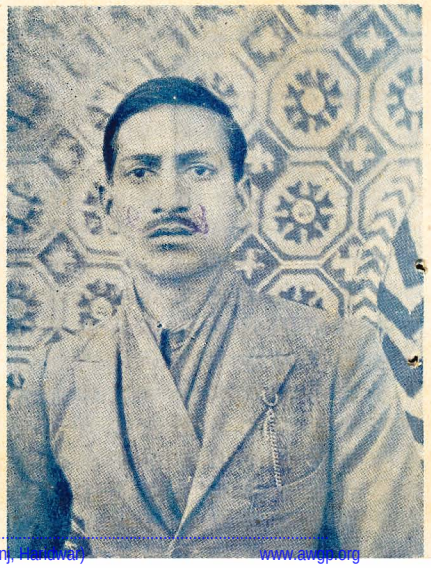

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

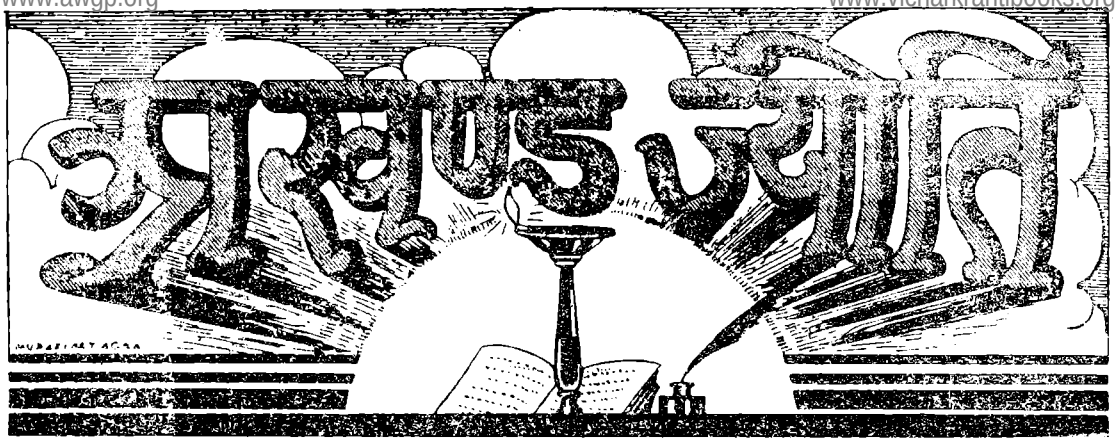

अखण्ड ज्योति

सुधा-बीज बोने से पहले, कालकूट पीना होगा।
पहिन मौत का मुकट, विश्व-हित मानव को जीना होगा॥

भाग १ } आगरा, २० मार्च १९४० { अङ्क ३

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

जीवन-ज्योति

(रचियता—श्री० जिज्ञासु)

वह जीवन ज्योति जगावेंगे।
करदे प्रदीप्त दिग् मण्डल को,
जिसकी उज्ज्वल प्रकाश रेखा।
भूले भटकों को मार्ग मिले,
वे ढूंढ सकें पथ का लेखा॥
अज्ञान विनाश हुआ मेरा,
अँधियारी सारी दूर हुई"—
सहसा यह बोल उठे जिसने,
उस ज्योतित रेखा को देखा॥
तम तोम न रहने पावेंगे।
वह जीवन ज्योति जगावेंगे॥

(२)

जिसका प्रकाश पाकर विकसें,
रोती मुरझाती सी कलियाँ।
जिस खंडहर में उल्लू बोले,
उसमें विहँसे दीपावलियाँ॥
युग युग के बन्द कपाट खुलें,
मग के कण्टक सब हटजावें।
सड़कें निर्धूलि निरापद हों,
आवाहन करती हों गलियां॥
शत शत रवि शीश झुकावेंगे।

(३)

दुख जिनकी वाणी से झरता,
चिल्लाती हैं जिनकी पीड़ा।
मरघट जिनका मन मानस है,
बन रही चिता जिनकी क्रीड़ा॥
करुणा से कंठ रुँधा जिनका,
आँखों के प्याले छलक रहे—
वे खिल खिल हँसते फिरें,
लगें करने आनंद मयी क्रीड़ा॥
ऐसा अमृत बरसावेंगे।
वह जीवन ज्योति जगावेंगे॥

(४)

पल पल पर जो मरते जीते,
क्षण क्षण में जो रोते गाते।
छट पटा रहा जिनका कण कण,
पर गरल पान करते जाते॥
वे मधुप पीछे को लौटें,
ऐसी एक दिव्य प्रभा देखें—
नर में नारायण देख सकें,
आँखें जिसको पाते पाते॥
इस भू को स्वर्ग बनावेंगे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अखण्ड ज्योति

सुधा-बीज बोने से पहले, काल कूट पीना होगा।
पहिन मौत का मुकट, विश्व हित मानव को जीना होगा॥

आगरा, २० मार्च सन १९४० ई०

हमारी होली

ऐसी होली जले ज्ञान की ज्योति जगत में भरदे।
कलुषित कल्मष जलें, नाश पापों तापों का करदे॥

\+ + + +

अखंड ज्योति का यह अंक जिस दिन पाठकों के हाथ में पहुँचेगा। प्राय: उसके दूसरे तीसरे दिन होलिका दहन का त्यौहार होगा। गरीब अमीर सभी अपनी स्थिति के अनुसार होली मनाने की तैयारी कर रहे होंगे। पक्वान्न, मिष्ठान्न, बनाने की तैयारियां होरही होंगी, नये कपड़े बन रहे होंगे, बच्चे होलिका दहन का तमाशा देखने और धूलि उड़ाने के लिए उस समय की घड़ियां गिन रहे होंगे। रंग खेलने के लिए, मुँह से गुलाल मलनेके लिए मित्र गण प्रेमी प्रेमकाएं व्याकुल होरहे होंगे। व्यापारी इस अवसर पर अधिक बिक्री होने की आशा से दुकानें सजा रहे होंगे मजदूर लोग, उस दिन काम न करना पड़ेगा यह सोच कर प्रसन्न होरहे होंगे, हंसते खेलते बालकों को देखकर माता पिता उत्फुल्ल होरहे होंगे। जगह जगह गाने बजाने का ठाठ जमा होगा। लोगों की इस प्रसन्नता को देखकर प्रकृति चुप न बैठेगी। बसंत महाराज अपना वैभव इस पीड़ित दुनियां के ऊपर बखेर रहे होंगे। नन्हें नन्हें पौदों से लेकर विशाल वृक्षों तक सब हरियाली से भरपूर होंगे। अपने फूलों की सुरभि दशों दिशाओं में उड़ाकर आनन्द का झरना बहा रहे होंगे। अखंड ज्योति के पाठक क्या इस उत्सव से अलग होंगे? नहीं। वे भी इस हंसी खुशी में भाग ले रहे होंगे उसकी प्रसन्नता में भाग लेता हुआ मैं भी आनन्दित होरहा हूं और अपनी शुभ कामना की लहरें उन तक भेजने का प्रयत्न कर रहा हूं।

होलिकोत्सव का यह त्यौहार उस प्यास की एक धुंधली तस्वीर है जिसकी इच्छा आदमी को हर समय बनी रहती है। मौज! आनंद! खुशी! प्रसन्नता! हर्ष! सुख! सौभाग्य! कितने सुन्दर शब्द है! इनका चिन्तन करते ही नसों एक बिजली सी दौड़ जाती है। आदमी युगों से आनन्द की खोज कर रहा है उसका अन्तिम लक्ष ही अखण्ड आनन्द है। यह राज हंस मोतियों की तलाश में जगह-जगह भटकता फिरता है। विभिन्न प्रकार के पत्तों पर पड़ी हुई ओस की बूँदें उसे मोती दीखती हैं, उन्हें लेने के लिए बड़े प्रयत्न के साथ वहां तक पहुंचता है, पर चोंच खोलते ही यह गिर पड़ती हैं और राज हंस अतृप्त का अतृप्त ही बना रहता है। एक पौदे को छोड़ कर दूसरे पर दूसरे को छोड़ कर तीसरे पर और तीसरे को छोड़ कर चौथे पर जाता है पर संतोष कहीं नहीं मिलता। वह भ्रम पूर्ण स्थिति में पड़ा हुआ है। जिन्हें वह मोती समझता है असल में ओस की वे बूँदें मोती हैं नहीं। वह तो मोतियों की एक झूठी तस्वीर मात्र हैं। तस्वीरों से आदमी टकरा रहा है। दर्पण की छाया को अपनी कार्य संचालक बनाना चाहता है। इस प्रयत्न में उसने असंख्य युगों का समय लगाया है। परन्तु तृप्ति अब तक नहीं मिल पाई है। मनोकामना अब तक पूरी नहीं हो सकी है।

आनंद की खोज में भटकता हुआ इंसान, दरवाजे दरवाजे पर टकराता फिरता है। बहुत सा रुपया जमा करें, उत्तम स्वास्थ रहे, रमणियों से भोग करें, सुस्वादु भोजन करें, सुन्दर वस्त्र पहिनें, बढ़िया मकान और सवारियां हों, नौकर चाकर हों, पुत्र, पुत्रियों, बधुओं से घर भरा हो, उच्च अधिकार प्राप्त हो, समाज में प्रतिष्ठा हो, कीर्ति हो, यह चीजें आदमी प्राप्त करता है। जिन्हें यह चीजें उपलब्ध नहीं होतीं वे प्राप्त करने की कोशिस करते हैं। जिनके पास हैं वे उससे भी अधिक लेने का प्रयत्न करते हैं। कितनी ही मात्रा में यह चीजें मिल जायँ पर वे पर्याप्त नहीं समझी जातीं जिससे पूछिये यही कहेगा 'मुझे अभी और चाहिये।' इसका एक कारण है, स्थूल बुद्धि तो समझ भी लेती है कि काम चलाने के लिये इतना काफी है, पर सूक्ष्म बुद्धि भीतर ही भीतर सोचती है यह चीजें अस्थिर हैं किसी भी क्षण इनमें से कोई भी चीज कितनी ही मात्रा में बिना पूर्व सूचना के नष्ट हो सकती है। इसलिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ज्यादा संचय करो ताकि नष्ट होने पर भी कुछ बच रहे। यही नष्ट होने की आशंका अधिक संचय के लिए प्रेरित करती रहती है। फिर भी नाशवान चीजों का नाश होता ही है। यौवन ठहर नहीं सकता, लक्ष्मी किसी की दासी नहीं है, मकान, सवारी, घोड़े, कपड़े भी स्थायी नहीं, भोजन और मैथुन का आनन्द कुछ क्षण ही मिल सकता है। हर घड़ी उसकी प्राप्ति होती रहना असंभव है। जिनकी आज कीर्ति छाई हुई है कल ही उनके माथे पर ऐसा काला टीका लग सकता है कि कहीं मुँह दिखाने को भी जगह न मिले। सारे आनंदों को भोगने के मूल साधन शरीर का भी तो कुछ ठिकाना नहीं। आज ही बीमार पड़ सकते हैं, कल अपाहिज होकर इस बात के मुहताज बन सकते हैं कि कोई मुँह में ग्रास रखदे तो खालें और कंधे पर उठा कर ले जाय तो टट्टी हो आवें।

इन सब तस्वीरों में आनन्द की खोज करते-करते चिर-काल बीत गया पर राजहंस को ओस ही मिली। मोती? उसकी तो खोज ही नहीं की। मानसरोवर की ओर तो मुँह ही नहीं किया। लम्बी उड़ान भरने की तो हिम्मत ही नहीं बाँधी। परों को फड़-फड़ाया, परन्तु फिर मटर के खेत में मोतियों का खजाना दिखाई पड़ गया। मन ने कहा, "जरा इसे और देखलें। आंखों से न दीख पड़े तो भी मानसरोवर में मोती मिल ही जायंगे इसी की क्या जल्दी है।" फिर ओस चाटी और फिर फड़-फड़ाया। फिर वही, यही पहिया चलता रहता है।

आप अपने जीवन में कितनी होलियां मना चुके, कितने दिवालियाँ बिता चुके, सावन, सलूने, दौज, दशहरे अबतक कितने बिता दिये, जरा उँगलियों पर गिन कर बताइये तो। कितनी बार आपने धूम-धाम से तैयारियाँ की और कितनी बार आनन्द सामिग्री को विसर्जित किया। आपने उनमें खोजा, कुछ क्षण पाया भी, परन्तु ओस की बूँदें ठहरी कब? वे दूसरे ही क्षण जमीन पर गिर पड़ीं और धूलि में समा गईं। इस बार की होली भी ऐसी ही होनी है। चैत बदी प्रतिपदा, दौज, तीज के बाद त्यौहार की एक धुँधली सी स्मृति रह जायगी। और चौथ, पांचें को ही कोई कष्ट आगया तो भूल जायँगे कि इसी सप्ताह हमने किसी त्यौहार का आनंद भी उठाया था। ऐसे अस्थिर आनंद पर मेरी बधाई कुछ ज्यादा उपयुक्त न होली पर यह छाया दर्शन भी कोई दुख की बात नहीं है।

मैं चाहता हूं कि आप इस होली पर खूब आनंद मनावें और साथ ही यह भी चिन्तन करें कि जिस की यह छाया है उस अखंड आनन्द को मैं कैसे प्राप्त कर सकता हूँ? मेरी युग-युग की प्यास कैसे बुझ सकती है? इस अँधेरे में कहाँ से प्रकाश पा सकता हूं जिससे अपना स्वरूप और लक्ष की ओर बढ़ने का मार्ग भली प्रकार देख सकूँ? सच्चे अमृत को मैं कैसे और कहाँ से प्राप्त कर सकता हूं?

आइये, उस अखण्ड आनन्द को प्राप्त करने के लिए हृदयों में होली जलावें। सच्चे ज्ञान की ऐसी उज्वल ज्वाला हमारे अन्तरोंमें जल उठे जिसकी लपटें आकाश तक पहुँचें। अन्तर के कपट खुल जावें और उस दीप्त प्रकाश में अपना स्वरूप परख सकें। दूसरे पड़ौसी भी उस प्रकाश का लाभ प्राप्त करें। चिरकाल के जमा हुए झाड़ झंखाड़ इस होलिका की ज्वाला में जल जावें। विकारों के राक्षस जो अँधेरी कोठरी में छिपे बैठे हैं और हमें भीतर ही भीतर खोंट खोंच कर खारहे हैं इसी होलिका में भस्म हो जावें। अपने सब पाप तापों को जला कर हम लोग शुद्ध स्वर्ण की तरह चमकने लगें। उसी निर्मल शरीर से वास्तविक आनंद प्राप्त किया जा सकेगा।

अखण्ड ज्योति-परिवार के हृदयों में ईश्वर ऐसी ही होली जलावें। यही आज मेरी प्रार्थना है।

आध्यात्म विद्या प्रेमियों से प्रार्थना

ऐसा निश्चय किया गया है कि 'अखण्डज्योति' में आध्यात्म विद्या प्रेमियों के चित्र भी हर अंक में दिये जाया करें। इसलिये आध्यात्म विद्या प्रेमी, सदाचारी, ईश्वर भक्त और लोक-सेवी भाई बहिनों से प्रार्थना है कि वे आपके संक्षिप्त परिचय भेजने की कृपा करें। परिचय पाकर अपनी आवश्यकतानुसार उन सज्जनों से हम चित्र मंगवालेंगे और पत्र में संक्षिप्त परिचय के साथ प्रकाशित करेंगे।

'अखंडज्योति' के पाठकों से भी प्रार्थना है कि उक्त प्रकार के किन्हीं आध्यात्म विद्या प्रेमी भाई बहिनों को जानते हों तो उनका पता और परिचय हमारे पास लिख भेजें, जिससे हम स्वयं उनसे फोटो की याचना करलें। आशा है कि इस विषय में पाठक हमारी सहायता करेंगे।

—सम्पादक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सत्य

(महात्मा-गांधी)

सत्य शब्द का मूल सत् है। सत् के मानी है होना, सत्य अर्थात होने का भाव। सिवा सत्य के और किसी चीज की हस्ती ही नहीं है। इसीलिये परमेश्वर का सच्चा नाम सत् अर्थात् सत्य है। चुनांचे, परमेश्वर सत्य है, कहने के बदले सत्य ही परमेश्वर है यह कहना ज्यादा मौजूँ है। राज चलाने वाले के बिना, सरदार के बिना, हमारा काम नहीं चलता, इसीसे परमेश्वर नाम ज्यादा प्रचिलित है और रहेगा। पर विचार करने से तो सत्य ही सच्चा नाम मालूम होता है और यही पूर्ण अर्थ का सूचक भी है।

जहाँ सत्य है वहाँ ज्ञान—शुद्ध ज्ञान है ही। जहाँ सत्य नहीं वहाँ शुद्ध ज्ञान हो नहीं सकता, इसीलिये ईश्वर नाम के साथ चित्-ज्ञान शब्द जोड़ा गया है। जहाँ सच्चा ज्ञान है वहां आनन्द ही हो सकता है, शोक हो ही नहीं सकता और चूँकि सत्य शाश्वत है इसलिये आनन्द भी शाश्वत होता है। इसी कारण हम ईश्वर को सच्चिदानन्द के नाम से भी पहचानते हैं।

इस सत्य की आराधना के लिये ही हमारी हस्ती हो और इसी के लिये हमारी हर एक प्रवृत्ति हो। इसी के लिये हम हर बार श्वासोच्छ्वास लें। ऐसा करना सीख जाने पर हमें बाकी नियम सहज ही हाथ लगेंगे और उनका पालन भी आसान हो जायगा। वगैर सत्य के किसी भी नियम का शुद्ध पालन अशक्य है।

आमतौर पर सत्य के मानी हम सच बोलना ही समझते हैं। लेकिन हमने तो सत्य शब्द का विशाल अर्थ में प्रयोग किया है। विचार में, वाणी में और आचार में सत्य-ही-सत्य हो। इस सत्य को सम्पूर्णतया समझने वाले को दुनिया में दूसरा कुछ भी जानना नहीं रहता, क्योंकि सारा ज्ञान इसमें समाया है, इसे हम ऊपर देख चुके हैं। इसमें जो न समा सके वह सत्य नहीं है, ज्ञान नहीं है, तो फिर उससे सच्चा आनन्द तो मिल ही कैसे सकता है? यदि हम इस कसौटी का प्रयोग करना सीख जायँ तो तुरन्त ही हमें पता चलने लगे कि कौनसी प्रवृत्ति करने योग्य है और कौनसी त्याज्य; क्या देखने योग्य है, क्या नहीं; क्या पढ़ने योग्य है, क्या नहीं।

लेकिन यह सत्य जो पारस मणि रूप है, कामधेनु रूप है, कैसे मिले? इसका जवाब भगवान ने दिया है, अभ्यास से और वैराग्य से। सत्य की ही लगन अभ्यास है; और उसके बिना दूसरी तमाम चीजों के लिये आत्यन्तिक उदासीनता, वैराग्य है। यह होते हुए भी हम देखा करेंगे कि एक का सत्य दूसरे का असत्य है। इससे घबराने की कोई जरूरत नहीं। जहाँ शुद्ध प्रयत्न है वहाँ भिन्न मालूम होने वाले सब सत्य एक ही पेड़ के असंख्य भिन्न दीख पड़ने वाले पत्तों के समान हैं। परमेश्वर भी कहाँ हर आदमी को भिन्न नहीं मालूम होता? तो भी हम यह जानते हैं कि वह एक ही है। लेकिन सत्य ही परमेश्वर का नाम है इसलिये जिसे जो सत्य लगे वैसा वह बरते तो उसमें दोष नहीं, यही नहीं, बल्कि वही कर्तव्य है। यदि ऐसा करने में गलती होगी तो वह भी सुधर ही जायगी। क्योंकि सत्य की शोध के पीछे तपश्चर्या होती है यानी स्वयं दुःख सहन करना होता है, उसके लिये मरना भी पड़ता है, इसलिये उसमें स्वार्थ की तो गन्धतक नहीं होती। ऐसी निःस्वार्थ शोध करते हुए आजतक कोई ऐसा न हुआ जो आखिर तक गलत साबित हुआ हो। रास्ता भूलते ही ठोकर लगती है और फिर वह सीधे रास्ते पर चलने लगता है। इसीलिये सत्य की आराधना भक्ति है और भक्ति तो 'सिरका सौदा है', अथवा वह हरिका मार्ग है अतः उसमें कायरता की गुंजायश नहीं। उसमें हार-जैसा कुछ है ही नहीं। वह तो 'मरकर जीने का मन्त्र है।'

इस सिलसिले में हरिश्चन्द्र, प्रह्लाद, रामचन्द्र, इमाम हसन, हुसेन, ईसाई सन्त वगैरा के चरित्रों का विचार कर लेना चाहिये और सब बालक, बड़े, स्त्री-पुरुष को चलते बोलते, खाते पीते, खेलते, मतलब हर काम करते हुए सत्य की रट लगाये रहनी चाहिये। ऐसा करते-करते वे निर्दोष नींद लेने लग जायँ तो क्या ही अच्छा हो? यह सत्यरूपी परमेश्वर मेरे लिये तो रत्नचिन्तामणि साबित हुआ है। हम सब के लिये हो।

—सप्त महाव्रत

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ईश्वर कहां है ?

[ले०—श्री त्र्यंबकलाल पुरोहित, खिलचीपुर]

ईश्वर को मानने और न मानने वाले आदमियों में ऐसी एक बड़ी संख्या मिलेगी जो ईश्वर अमुक स्थान पर है अमुक स्थान पर नहीं इसी प्रश्न को लेकर एक बड़ा मत भेद उपस्थित करते हैं और अपने अपने पक्ष का समर्थन कर के लोगों को भ्रम में डालते हैं। खुदा सातवें आसमान पर रहता है और भगवान विष्णु क्षीर सागर में शेषजी की शय्या पर विराजमान हैं यदि कोई इन बातों के मानने से इनकार करता है तो उसे धर्म द्रोही या नास्तिक नहीं कहा जा सकता। ईश्वर के संबंध में उपरोक्त प्रकार के वर्णन जिन धर्म शास्त्रों में आये हैं वहां अलंकारिक भाषा का प्रयोग हुआ समझना चाहिए अन्यथा ईश्वर भी एक व्यक्ति विशेष ही रहजायगा और उसमें सत् चित् आनन्द का अभाव मानना पड़ेगा। वह ऊपर क्षीर सागर में रहता है तो नीर सागर में किसकी सत्ता है? सातवें आसमान पर है तो बाकी छै आसमानों पर किसका नियंत्रण है? यही बात तीर्थ आदि के सम्बंध में है। वे स्थान धर्म कार्य के लिए उपयुक्त और सुविधा जनक हो सकते हैं। पर यदि किसी स्थान विशेष पर ही ईश्वर का प्रेम या ममता हो तो उस पर विकारी होने का दोष लग जायगा।

ईश्वर के स्थान, गुण, भक्तवत्सलता आदि के कितने ही विचित्र वर्णन मिलते हैं। असल में वह भक्तों की प्रेम विभोर दशा की भावुकता मय कल्पनाएं हैं। ईश्वर सम्बंधी किसी धारणा को खंडन करके वैसी भावना रखने वाले भक्तों के कोमल हृदयों को चोट पहुंचाने का हमारा मन्तव्य नहीं है। हमतो यहां केवल उसी एक बात का प्रतिपादन कर रहे हैं जिसे किसी न किसी रूप में अन्ततोगत्वा सब लोग मानते हैं। ईश्वर हमारे अपने अन्दर है। सबै लोग जानते और मानते हैं कि जीव ईश्वर का ही अंश है। विकारों का आवरण मकड़ी के जाले की भांति जीव के चारों ओर इस प्रकार तन गया है कि वह आत्म स्वरूप को पहचान नहीं पाता। उसकी समझ में ही नहीं आता कि वास्तव में वह है क्या? गूलर के फल में रहने वाले जन्तु के मन की कल्पना कीजिए। क्या वह आत्मस्वरूप को जानता होगा? फल के आवरण ने जब तक उसे दुनिया से अलग कर रखा है तब तक वह छोटा कीड़ा अपने को हाथी समझ सकता है, ब्रह्माण्डों का राजा समझ सकता है, रजकण समझ सकता है या चाहे जो समझ सकता है। उसे आत्मस्वरूप की जानकारी तभी होगी जब वह बाहरी दुनियां के बारे में अधिक जानकारी रखे। जीव भी अपने बारे में विभिन्न कल्पनाएं करता है। कोई अपने को धोबी समझता है तो ब्राह्मण कोई कलक्टर है तो कोई पटवारी, कोई एम० ए० है तो कोई निरक्षर कोई ईसाई है तो कोई हिन्दू, यह सभी जानकारियां भ्रम पूर्ण है। जीव जानता है कि अपने सम्बंध में मुझे यह जो जानकारी है वह पूर्ण और निर्भ्रान्त नहीं है, इसलिए शान्ति उपलब्ध नहीं कर पाता। हरदम उसे यही जिज्ञासा सताती रहती है कि "मैं हूं क्या ?" दुनियां के बंधन हमें भुलाते हैं, माया बहकाती है कि अरे क्या रखा है इस व्यर्थ की बातों में, काम काज की फिक्र करो, इस सोच विचार में कुछ होना जाना नहीं है। सांसारिक बंधन एक प्याला पिला कर चुपके से कहते हैं मस्त पड़े रहो यार, क्यों बूंद सोच में पड़े हो। इन सब भुलावों, बहकावों के बीच हमारा व्यापारी मन भूल भी जाता है, पर सत् चित् स्वरूप अन्त-रात्मा को आनन्द नहीं मिलता वह आनन्द की प्यास में भटकती है। व्यापारीमन यद्यपि खिलौनों पर रीझ रहा है और अन्तरात्मा की पुकार को नहीं सुनता परन्तु फिर भी वह दुर्दमनीय लालसा किसी प्रकार शान्त नहीं होती। बारहसिंगा कस्तूरी की गंध पाता है और उसे प्राप्त करने के लिए बिना विश्राम लिये दिन रात चारों ओर चौकड़ी फिरता रहता है। यही बात हमारी अपनी है। उस ईश्वरीय आनन्द की तलाश में मन भटकता है। चारों ओर चौकड़ी भरता है। क्षण भर के लिए भी विश्राम नहीं लेता। सब तरह की मनोहर चीजें दिखाई पड़ती हैं पर उसे अपनी इच्छित वस्तु दिखाई ही नहीं पड़ती।

मन बड़ा चंचल है। क्षण भर भी एक चीज पर नहीं टिकता। अभी यहां की सोच रहा है तो अभी वहां का विचार करने लगा। अभी कवित्त करने में लाभ हुआ था, तो अभी हजामत बनाने की याद आगई। यही चित्त की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भुलाते हैं। बारह सिंगे को कहीं चैन नहीं। हर घड़ी ढूंढ खोज, ढूंढ खोज। चित्त की यह चंचलता आत्म स्वरूप को देखने के लिये है। जिसने आत्मस्वरूप को देख लिया उसे आनन्द की उपलब्धि हो गई। जिसने अपने को पहचान लिया उसने ईश्वर को पकड़ लिया। ईश्वर अपनी आत्मा में समाया हुआ है। इससे निकट और इससे सरलता के साथ उसे कहीं अन्यत्र नहीं पासकते। ईश्वर दर्शन का निकट तम और निरापद स्थान अपने ही अन्दर है।

अपने अन्दर हम उसे खोजें तो वह अवश्य मिलेगा। यह कोई कल्पना या भुलावा नहीं है। ध्यान दीजिए, पहचान ने की कोशिश कीजिए आपको अपने अन्दर हंसता खेलता बात-चीत करता रोता गाता ईश्वर दिखलाई पड़ेगा। वह हर मामले में बिना पूछे अपनी सलाह देता है, कोई काम करते ही उसकी भलाई बुराई बताता है और काम पूरा होने पर कहता है कि मैं इससे प्रसन्न हुआ हूं या अप्रसन्न, जब वह हमारे ऊपर अपना स्नेह और रोष प्रकट करता है तब भी हमें स्पष्ट दिखाई दे सकता है। यह दर्शन करने के लिए अपनी आंखों पर बंधी हुई पट्टी को खोलनी पड़ेगी, अपनी निगाह का धुंधलापन हटाना पड़ेगा ईश्वर की आवाज सुनने और उसके स्वरूप का दर्शन करने के लिए किसी विशेष साधन की जरूरत नहीं केवल अपने अन्दर तीक्ष्ण दृष्टि फेंकने की जरूरत है। जिससे ईश्वर दर्शन के मार्ग पर अग्रसर होने का निश्चय किया उसे पग पग पर उस सच्चिदानन्द की झांकी अधिक स्पष्ट होती गई।

"तुम अपरिचित साथ हो पर।"

[प्रणेता—श्री रञ्जनलाल प्रधान एम० ए० मन्दसोर]

तुम अपरिचित साथ हो पर।
आज युग-युग से तुम्हारा,
ढूंढ़ते हैं लोग परिचय।
मोहने को आपके हित,
हो रहे हैं नित्य अभिनय॥
दूर साधक क्यों समझते, दूर से ही पास होकर।
तुम अपरिचित साथ हो पर॥
मधुर परिचय हीन परिचय,
अखिल जिसमें विश्व है लय।
आज तक परिचय प्रयत्नों,
ने है दिखलाई प्रलय लय।
आज परिचय के पाने को, मानो यद्यपि एक होकर।
तुम अपरिचित साथ हो पर॥
तुम कहीं भी हो भले ही,
जान कर भी हम न जाने।
आपको ही सत्य सुन्दर,
नित्य सारा विश्व माने।
कौनसा अज्ञान में भय, जबकि सर पर तेरे दो कर।
तुम अपरिचित साथ हो पर॥

जब चोरी करने जाया जाता है तब अन्दर से आवाज आती है यह बुरा काम है, मत करो, इसे मत करो। जब चोरी का विचार मन में आता है उसी क्षण से ईश्वर चिल्लाता है 'यह पाप है' जब चोरी के लिये कदम बढ़ाते हैं तो अन्तर में बैठा हुआ वह न्यायाधीश कुहराम मचाता है कि अरे भाई मान! अब भी मान!! यह कुहराम इतना तीव्र होता है कि शरीर की सारी दीवारें गूंजने लगती हैं, हिलने लगती हैं। दिल धड़कता है, पैर कांपते हैं। पर हम उस पर ध्यान न देकर मदोमत्त होकर उसी दुष्कर्म में प्रवृत हो जाते हैं। चोरी कर चुकने के बाद ईश्वर धिक्कारता रहता है 'दुष्ट तू ने बुरा किया' बहुत देर तक यही आवाज आती रहती है। जैसे अदालत के सामने खड़ा हुआ अपराधी कांपता रहता है उसी प्रकार मन डर के मारे थरथराता रहता है और बेचैनी छाई रहती है। यही ईश्वर की आवाज है। पर क्या हम उसे सुनने को तैयार रहते हैं? क्षण क्षण पर हम उसे कुचलते हैं। उससे बचने के लिये कानों में रुई लगाते हैं। अक्सर चोर, डाकू दुराचारी, लम्पट अपना पाप कर्म करने से पूर्व शराब, चरस आदि मादक द्रव्य पीकर मद होश हो जाते हैं ताकि वे ईश्वर की आवाज न सुन सकें और अपना काम बिना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

डरे झिझके कर सकें।

जब कोई शुभ कार्य हम से बन पड़ता है। निस्वार्थ भाव से किसी की सेवा सहायता करते हैं, दान देते हैं, परोपकार करते हैं तो एक प्रकार का विशेष संतोष और आनन्द सा हृदय के अन्दर मालूम पड़ता है। यही ईश्वर की तुष्टि है। मानो ईश्वर हमारी पीठ ठोंकता हुआ शाबासी दे रहा है। हर काम के करने में हर समय हमारे भीतर से ईश्वरीय सन्देश मिलता है। जब रास्ते पर से भटकते हैं तो चेतावनी मिलती है। सच्चे मित्र की तरह वह सदैव हमारे पास रहता है और पथ प्रदर्शक का काम करता है।

इसे जिसने पहिचाना वह अमर हो गया। जिसने उस परम पिता का दर्शन कर लिया वह निर्मल हो गया जिसमें उस महार्णव में अपने को नमक की डेली की तरह घुला दिया वह मुक्त हो गया। कहीं बाहर जाने की जरूरत नहीं है। तीर्थ, वन, पर्वत, नदी गुफा, एकान्त, मन्दिर, मसजिद इनमें ईश्वर नहीं है। बड़े अनुष्ठान, पूजा, व्रत, यज्ञ, तप करने से भी उसकी प्राप्ति नहीं होती यदि आप ईश्वर को ढूँढना चाहते हैं, उसका पता पाना चाहते हैं तो अपने अन्दर ढूढ़िये। देखिये वह आपको गोदी में लेने के लिये कब से भुजा पसारे खड़ा है। अब देर किये मत, सीधे चले जाइये और उसके चरणों में अपना सर्वस्व समर्पण कर दीजिए।

ईश्वर हमारे अन्दर है। इस सत्य पर तुम जितना ही ध्यान दोगे और विश्वास करोगे उतने ही तुम्हारे शरीर के कण २ में यही भाव भर जावेंगे और तुम्हारे अन्दर से भय के विचार विदा हो जावेंगे। तुम्हारी अप्रसन्नता प्रसन्नता में परिणित हो जावेगी और तुम उस महान शक्तिमान के निकटतर होते जाओगे।

\+ + +

प्रार्थना करने से जी न चुराओ, ईश्वर में अविश्वास न रक्खो। किसी बात को बिना जाने उसे फिजूल मत मानो, ईश्वर तुम्हारी प्रार्थना को अवश्य सुनेगा और तुम्हारे हृदय के भावों के अनुसार तुम में गति प्रदान करेगा। वह गति तुमको कल्याण-मार्ग पर अग्रसर कर देगी और तुम्हारा भविष्य समुज्वल हो जावेगा।

पहले दो; तब मिलेगा

[ले०—श्री० एवजसिंह वर्मा, आगरा]

मनुष्य जीवन के लिए त्याग अनिवार्य है बिना कुछ दिये दूसरी चीज नहीं मिल सकती। जो लेना चाहता है उसे देना अवश्य पड़ेगा। संसार के सभी तत्वों का निर्माण 'पहले दो तब मिलेगा' के सिद्धान्त पर टिका हुआ है।

शौच जाकर जब पेट खाली कर देते हैं तब भूख लगती है और सुन्दर भोजन मिलता है। कोई आदमी मल का त्याग न करना चाहे तो भोजन मिलना तो दूर उल्टे पेट में बीमारियां हो जावेंगी। पीछे की जमीन को त्याग कर उस पर से पैर उठा कर ही तो आगे कदम बढ़ाया जाता है। अपने पाँव के नीचे की भूमि पर कोई अपना अधिकार जमाकर बैठ जाय और उसे छोड़ना न चाहे तो वह उस स्थान पर बैठा तो रहेगा पर आगे नहीं बढ़ सकेगा और नई भूमि उसे नहीं मिलेगी। फेंफड़ों में भरी हुई हवा को जो नहीं छोड़ना चाहता वह नई हवा प्राप्त नहीं कर सकेगा और मर जायगा।

आपके पास पानी से भरा हुआ एक प्याला है। कोई आपको दूध देना चाहता है पर उस प्याले में जरा भी जगह नहीं है जब तक आप उस प्याले के पानी का त्याग न करें तब तक दूध प्राप्त नहीं कर सकते। बाजार में कोई चीज लेने जाइये दुकानदार पहले पैसे मांगेगा तब कोई चीज मिलेगी। दुनियां के बाजार का यह अटूट नियम है कि पहले दो तब मिलेगा। जो मुफ्त में कोई चीज प्राप्त करने की इच्छा करता है वह प्रकृति के नियमों की उपेक्षा करता है। संयोग वश किसी को मुफ्त की कोई चीज मिल भी गई तो वह ठहर नहीं सकती। जैसी आई थी वैसी ही चली जायगी।

यह दो चाकू देखिये इसमें से एक बहुत तेज और चमकता हुआ है। दूसरे की धार कुन्द है। पहला वजन में कम है लेकिन दूसरा भारी है। जो चाकू तेज है उसे लोग प्यार करते हैं उसकी उपयोगिता अधिक है वह सफल है, शूर है, प्रस्तुत है। जिस चीज पर लगाया जाय कर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

काट डालता है। इतना गुण उसने किस प्रकार प्राप्त किया है। उसने त्याग का महत्व जाना है, अपनेपन की ममता न कर के शान के पत्थर के पास हंसता हुआ गया है और अपने अंग का कुछ भाग उस पर घिस डाला है। इसी लिए तो चमक रहा है, इसीलिये उसकी कार्य शक्ति में तीक्ष्णता है और इसीलिए वह उपयोगी समझा जा रहा है। अब दूसरे चाकू को देखिये वह अपना कुछ भी खोवना नहीं चाहता। पत्थर पर अपने शरीर का कुछ भाग नष्ट करना व्यर्थ समझता है। वह कुछ देने की अपेक्षा लेना पसंद करता है। उसने अपने शरीर पर खूब जंग इकट्ठी करली है। मोटा भी है और भारी भी हो गया है। यह ठीक है, पर उसने अपनी सारी कार्य-शक्ति खो दी है। न तो वह चमकता ही है और न कुछ काट ही सकता है। किसी के काम न आने के कारण घृणास्पद बना हुआ है। इतना ही नहीं, उसका संचय किया हुआ भ्रम-जंग उसके लिए घातक सिद्ध हो रही है और धीरे धीरे चाकू के जीवन को नष्ट करने में लगी हुई है।

चिकित्सक लोग रोगी की चिकित्सा करने में जुलाब वमन, उपवास, फस्द, मस्य, स्वेदन आदि क्रियाएं कराते हैं क्यों कि वे जानते हैं कि शरीर में अनावश्यक संचय हो जाने के कारण बीमारी हुई है, इसका समाधान त्याग किये बिना नहीं हो सकता।

किन्तु आज हम इस त्याग का महत्व भूल गये हैं। रोज देखते हैं कि जीवन का प्रत्येक क्षण त्याग की महत्ता को स्वीकार करता है। बिना इसके कार्य चलना असंभव समझता है फिर भी हम उसे जीवन व्यवहार में नहीं उतारते। आदमी पर संचय का ऐसा भूत सवार हुआ है कि उसे और कुछ सूझ ही नहीं पड़ता। 'लाओ जमा करो' 'लाओ जमा करो' की पुकार सर्वत्र सुनाई देती है। दस के बाद पचास, पचास के बाद पांच सौ, पांच सौ के बाद पचास हजार अन्ततः यह अतृप्त प्यास अत्यंत उग्र हो जाती है। शराब के नशे में चूर पागल की तरह आदमी "एक प्याला और" की रट लगाये रहता है। जितना वह अधिक पीता जाता है उतना ही और भी वह अधोगति को प्राप्त होता जाता है।

लोग यह भूल जाते हैं कि कुदरत आदमी के पास उतना ही रहने दे सकती है जितने की उसे जरूरत है। बाकी चीजें वह राजी से नहीं छोड़ता तो जबरदस्ती छीन ली जाती है। जबरदस्ती छीन ने की तैयारी और धक्का मुक्की में जितना वक्त लगता है उतने ही देर कोई आदमी धनी दिखाई दे सकता है बाद को उसे स्वाभाविक स्थिति पर उतरना जरूरी है। हम सारे दिन भर पेट पानी पीते रहते हैं। पर प्रकृति अपनी तराजू पर तोलती है कि इसे कितना पानी चाहिए, जितना उसने जरूरत से ज्यादा पीलिया है उतना ही पेशाब और पसीने द्वारा वह निकाल लेती है। अमुक लाला जी करोड़ पति थे, सट्टे के व्यापार में भारी घाटा हुआ दिवाला निकल गया अब एक मामूली सी दुकान करते हैं। अमुक मालगुजार के पास दस गाँव की जमींदारी थी उनके लड़के ने ऐयाशी में सारी जायदाद फूँक दी। अमुक साहूकार देन-लेन का भारी कारोबार करते थे, घर में डाका पड़ा, सब कुछ चला गया। अमुक बाबूजी ने नौकरी में दस हजार रुपया जमा किया था। लड़कों के विवाह, पत्नी की बीमारी, में सब खर्च होगया। अमुक रायसाहब के पास पैसे की इफरात थी, तीन-चार मुकदमे ऐसे लगे कि बेचारे बर्बाद होगये। आप अपने पास पड़ोस में ऐसी घटनाएं ढेरों पासकेंगे। ऐसे उदाहरणों की एक मोटी मिसल आपके आस पास ही तैयार हो सकती है। जिनसे सिद्ध होता हो कि जरूरत से ज्यादा इकट्ठी हुई चीजें कुदरत द्वारा जबरदस्ती छीनली गई। अबतो साम्यवाद, समाज वाद, बोल्शविज्म आदि संगठित और जोरदार आन्दोलन दुनियां में चल रहे हैं जिनका उद्देश्य है कि जरूरत से ज्यादा इकट्ठी की हुई चीजों को जबरदस्ती और सरे आम छीन लिया जाय। कई देशों में तो यह आन्दोलन सफल भी हो चुके हैं।

दुनियां की शान्ति त्याग के ऊपर कायम है। दूसरों को देकर खाओगे तो तुम्हारी रोटी सुरक्षित रहेगी।

हिन्दू धर्म का प्रत्येक अंग इसी आदर्श से ओत-प्रोत है। पंच महायज्ञों का तात्पर्य यही है पहले अतिथि, अपने से कुछ आशा करने वाले, पशु पक्षियों को पहले खिलाओ तब खुद खाओ। गीता कहती है "भुञ्जते तेत्वघं पापा ये पचन्त्यात्म कारणात्" अर्थात केवल खुद ही खाने वाला पाप खाता है। महा पुरुषों का उपदेश सदैव त्याग करने का होता है एक सज्जन को पिछले वर्ष तीन बार महात्मा गांधी के पास जाने का सौभाग्य मिला। जब भी वे उनके पास

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

गये तभी हरिजन सेवा के लिए कुछ देने को महात्मा जी ने हाथ पसारा। चिरकाल तक मैं इस बात पर विचार करता रहा कि यह महापुरुष अपने पास आने वालों से सदैव याचना ही क्यों करता है? मनन के बाद मेरी निश्चित धारणा हो गई है कि त्याग से बढ़कर प्रत्यक्ष और तुरन्त फलदायी और कोई धर्म नहीं है। त्याग की कसौटी आदमी के खोटे खरे रूप से दुनियां के सामने उपस्थित करती है। मन में जमे हुए कुसंस्कार और विकारों के बोझ को हलका करने के लिए त्याग से बढ़कर अन्य साधन हो नहीं सकता।

आप दुनियां से कुछ प्राप्त करना चाहते हैं अपने को महान बनाना चाहते हैं। विद्या बुद्धि संपादित करना चाहते। कीर्ति चाहते हैं और अक्षय आनन्द की तलाश में हैं। तो त्याग कीजिए। गांठ में से कुछ खोलिए। यह चीजें बड़ी मंहगी हैं। कोई नियामत लूट के माल की तरह मुफ्त नहीं मिलती। दीजिए आपके पास पैसा, रोटी, विद्या, श्रद्धा, सदाचार, भक्ति, प्रेम, समय, शरीर जो कुछ है मुक्त हस्त होकर दुनियां को दीजिए, बदले में आपको बहुत मिलेगा। गौतम बुद्ध ने राज सिंहासन का त्याग किया गांधी ने अपनी बैरिस्टरी छोड़ी उन्होंने जो छोड़ा था उससे अधिक पाया। विश्व कवि रवीन्द्र टैगोर अपनी एक कविता में कहते हैं। "उसने हाथ पसार कर मुझ से कुछ मांगा। मैंने अपनी झोली में से अन्न एक छोटा दाना उसे दे दिया। शाम को मैंने देखा कि झोली में उतना ही छोटा एक सोने का दाना मौजूद था। मैं फूट फूट कर रोया कि क्यों न मैंने अपना सर्वस्व दे डाला? जिससे मैं भिखारी से राजा बन जाता।"

हम त्रिविध दुखों से दुखी रहते हैं इनसे बचने के उपाय ढूँढा करते हैं और निराश होते रहते हैं। क्या आपने सोचा कि ईश्वर की शरणागत होना हजार उपायों का एक उपाय है क्योंकि उसका धर्म ही प्रत्येक प्राणी के साथ भलाई करना है। इसलिए उसी की शरण में जाओ वही सच्चा शान्ति निकेतन है।

धर्म तत्व का वैज्ञानिक महत्व

(ले०—श्री० पं० हंसराज शास्त्री, लुधियाना)

वर्तमान समय के इस वैज्ञानिक युग में पश्चात्य शिक्षा दीक्षित नवयुवकों के हृदय-प्रदेश से धर्म भावना तो लुप्त प्राय: हो रही है! वे धर्म को एक प्रकार का कृत्रिम या कल्पित पदार्थ मान रहे हैं। परन्तु वस्तु स्थिति इससे सर्वथा विपरीत है! अर्थात धर्म यह कोई कृत्रिम या कल्पित वस्तु नहीं किन्तु धर्म त्रैकालिक-सनातन ध्रुव सत्य है, इसी प्रकार वह धर्म, प्राकृतिक जड़वस्तु भी नहीं किंतु अपने स्वरूप से आभासित होने वाला चैतन्य प्रकाश है, वर्तमान समय में हमारे नव शिक्षा दीक्षित नवयुवकों के सन्मुख धर्म का जो स्वरूप उपस्थित हो रहा है वह उसका वास्तविक स्वरूप नहीं, वह तो उसका अत्यन्त विकृत निकृष्ट स्वरूप है। क्याही अच्छा होता यदि हमारे नवयुवक साम्प्रदायिकता के बीच में मलिन हुए इस धर्मतत्व की अवहेलना करने के स्थान में उसके निरमल स्वरूप की खोज के लिये प्रयत्न करते। परन्तु भारत का ऐसा सौभाग्य कहाँ?

भारत वर्ष में जितने भी सम्प्रदाय मत या पन्थ धर्म के नाम से प्रचलित हो रहे हैं, उनमें धर्म तत्व का न्यूनाधिक रूप में कुछ न कुछ आभास तो है, परन्तु मानव समाज की विकट प्रकृति में प्रविष्ट होने वाले साम्प्रदायिक व्यामोह ने उनमें रहा सहा धार्मिक अन्श भी खोदिया है। जिस प्रकार आकाश से बरसने वाला सरस और स्वादिष्ट जल, धूलियुक्त पृथ्वी से मिश्रित होकर अपनी स्वभाव सिद्ध सरसता को खो बैठता है इसी प्रकार विभिन्न सम्प्रदायों में प्रति विम्बित होने वाले धर्मतत्व को भी साम्प्रदायिकता के अशुद्ध वातावरण ने अस्पृश्य एवं दूषित बना दिया है! किसी अमुक एक देशी विचार को सर्व सत्य मान कर उसके लिये दुराग्रह करना साम्प्रदायिकता कहलाती है तथा इसी का दूसरा नाम मतान्धता है। अतः इस मतान्धता और साम्प्रदायिकता के गन्दे सम्पर्क से धर्म रूप गंगोदक को सदा बचाये रखने का प्रत्येक धर्म पिपासु को प्रयत्न करना चाहिये।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यद्यपि सम्प्रदायों या पन्थों के विशाल मन्दिर की आधार-शिला धर्म तत्व की सुदृढ़ चट्टान पर ही स्थापित हुई है, और उनके प्रवाह का मूल स्रोत भी धर्मतत्व को ही कहा वा माना जा सकता है। तथापि ये सम्प्रदाय उत्पन्न होते हैं और विनष्ट हो जाते हैं। अर्थात् इनकी उत्पत्ति और विनाश का सिलसिला सदा जारी रहता है! इतिहास इस बात का साक्षी है, परन्तु धर्म इससे सदा विपरीत स्वभाव वाला है, वह अविनाशी अर्थात उत्पत्ति और विनाश इन दोनों से परे हैं। इसके अतिरिक्त धर्म एक अथवा अभिन्न है। इसलिये उसमें समानता है और सम्प्रदायों में अनेकता अथवा विभिन्नता स्पष्ट दृष्टि-गोचर होती है अतएव सम्प्रदायों में पारस्परिक संघर्ष की सदा ही संभावना बनी रहती है। और कभी-कभी तो यह संघर्ष इतना भयानक रूप धारण कर लेता है कि दावानल की तरह अपने उद्गम स्थान को भी समूल रूप से भस्मसात कर देता है, वर्तमान समय के सत्य विघातक शास्त्रार्थ और घासलेटी साहित्य का पोषण इसी के सुचारु फल हैं! विपरीत इसके धर्म के साम्राज्य में इस संघर्ष को स्थान ही नहीं क्योंकि वह एक है अतएव उसमें शांति है, प्रेम है और समवेदना है। धर्म आत्म स्पर्शी होता है और सम्प्रदाय कूप जीवी हैं! इसी प्रकार धर्म सर्वदेशी और सम्प्रदाय एकदेशी होते हैं। इतना अन्तर होने पर भी इनको धर्म से सर्वथा पृथक नहीं किया जा सकता, धर्म से सर्वथा पृथक होने पर इनका अस्तित्व ही नहीं रहता। तात्पर्य कि जिस प्रकार घट शराव आदि की मृतिका से और कटक कुण्डलादि की सुवर्ण से पृथक सत्ता केवल नाम मात्र के लिये है, अर्थात् सर्वथा अलग होकर वे अपने आस्तित्व को कायम नहीं रख सकते इसी प्रकार सम्प्रदाय मत या पन्थ भी धर्म से सर्वथा पृथक होकर जीवित नहीं रह सकते।

भारत वर्ष में धर्म के नाम पर प्रचलित होने वाले जितने भी मतमतान्तर हैं वे सब धर्म रूप प्रकृति की ही विकृतियें हैं, धर्म रूप महान वृक्ष की ही शाखा प्रति शाखायें हैं, और संक्षेप मे कहें तो ये सब विभिन्न रूप में धर्म के संकुचित रूप हैं। इसलिये धर्म इन अत्यन्त संकुचित और एक देशी रूपों को ही सम्पूर्ण रूप से धर्म मान लेने की किसी भी साधक को भूल न करनी चाहिये। ये तो धर्म के एक बहुत छोटे छोटे स्वरूप हैं, हां! यदि इनको समन्वय दृष्टि-उदारदृष्टि से समन्वित किया जाय अथवा ये स्वयं ही एक दूसरे के सन्मुख होने को उदारता दिखलायें तब तो ये धर्म के पोषक और अभिवर्धक अवश्य हो सकते हैं।

धर्म का वास्तविक उद्देश्य, मानव जीवन (मनुष्यत्व) का पूर्णतम विकास है, मनुष्य के ऐहिक और पारलौकिक अभ्युदय का एक मात्र साधन धर्म को ही स्वीकार किया गया है। कितनेक पाश्चात्य शिक्षा दीक्षित विद्वान धर्म को कृत्रिम और कल्पित वस्तु मानते हुये कहते हैं कि धर्म की आवश्यकता उतने समय तक ही है जब तक कि यह मनुष्य अज्ञान दशा जंगली हालत से निकल कर सुधार दशा यानी सभ्यता को प्राप्त नहीं करता। इसलिये सभ्यता प्राप्त करने के बाद इसकी कोई आवश्यकता नहीं रहती अर्थात विद्वानों के लिये यह धर्म निरर्थक ही है। परन्तु विचार करने पर उनके इस कथन में कोई सार प्रतीत नहीं होता, यदि धर्म मात्र को अज्ञान और कल्पना का ही परिणाम मानें तो ज्ञान की अभिवृद्धि के साथ साथ उनका भी विनाश हो जाना चाहिये, किन्तु वस्तु स्थिति इसके विपरीत है, अर्थात मनुष्य में जैसे जैसे ज्ञान की अभिवृद्धि होती है वैसे वैसे उसकी धर्मवृत्ति अधिक तीव्र सतेज और गम्भीर होती जाती है इसलिये धर्म यह कोई कृत्रिम या कल्पना प्रसूत पदार्थ नहीं किन्तु अखण्ड और अबाधित सत्य है। तथा मानव समाज का कल्याण उसी पर अवलम्बित है।

धर्म यह वस्तु का स्वभाव है अथवा यूं कहिये कि वस्तु का जो स्वभाव है वही उसका धर्म है, (वस्तु स्वभावो धर्मः) उसके बिना वस्तु का अस्तित्व ही नहीं रहता, अग्नि के उष्णता और प्रकाश ये दो स्वभाव हैं। और उनके बिना जैसे अग्नि का अस्तित्व स्थिर नहीं रह सकता (कारण कि ये दोनों उष्णता और प्रकाश उसके धर्म हैं) इसी प्रकार धर्म के बिना कोई भी पदार्थ अपने अस्तित्व को कायम नहीं रख सकता। आत्मा सत चित और आनन्द स्वरूप है क्योंकि सत चित और आनन्द उसके धर्म हैं। इससे सिद्ध हुआ कि धर्म के बिना धर्मी की कोई स्वतन्त्र सत्ता नहीं है। किंतु धर्म के द्वारा ही वह अपने अस्तित्व को स्थिर किये हुए हैं, अतः सम्पूर्ण विश्व को धारण करने वाला एक विशिष्टतत्व है जो कि धर्म के नाम से विख्यात है। इसी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वैज्ञानिक सत्य की ही दार्शनिक परिभाषा में सनातन तत्व या सनातनधर्म के नाम अभिहित किया जा सकता है।

तब धर्म की, जीवन शुद्धि के लिए नैतिकता के लिए कितनी आवश्यकता है। तथा विश्व की व्यवस्था में उसकी कितनी असाधारणता है इस बात का निर्णय तो धर्म का उद्देश्य समझ लेने पर ही हो जाता है। परन्तु फिर भी संक्षेप से यहां पर कुछ लिख देना आवश्यक सा प्रतीत होता है। मनुष्य को स्वभाविक रूप से ज्ञान के प्रकाश की, कर्तव्य-भावना की और आत्मबल की आवश्यकता रहती है। इसके बिना मानव जीवन के वास्तविक उद्देश्य की सिद्धि नहीं हो सकती। इन तीनों की प्राप्ति का मुख्य साधन यदि कोई है तो वह धर्म ही है इसी प्रकार जीवन की नैतिकता के लिये अर्थात् जीवन को नीति मय बनाने के लिये भी धर्म की ही नितान्त आवश्यकता है। उक्त कथन का अभिप्राय यह है कि जीवन को नीति पूर्ण बनाने के लिये केवल नीति शास्त्र का ज्ञान मात्र ही पर्याप्त नहीं किंतु उसमें धार्मिकता भी अपेक्षित है, अन्यथा नीति का ज्ञान होते हुये भी प्रलोभनों के बश में आकर कभी २ मनुष्य अनर्थ में भी प्रवृत्त हो जाता है ऐसी अवस्था में यदि मनुष्य के पास धर्म का बल न हो तो उसके पतन में देरी नहीं लगती अतः नैतिक भावना को स्थिर रखने तथा व्यवहार में उसका आदर्श स्थापित करने के लिए धर्म अथवा धार्मिकता की नितान्त आवश्यकता है। तथा यहां पर केवल नीति और धर्म के अन्तर को भी समझ लेना आवश्यक है। नीति और धर्म में इतना अन्तर है कि नीति के पीछे भय स्वार्थ तथा अन्य प्रलोभनों का भी कभी कभी आधिपत्य होता है। परन्तु धर्म इनके सम्पर्क से सदा पृथक रहता है अर्थात् धर्म के साम्राज्य में इनको भय स्वार्थादि प्रलोभनों को कदापि स्थान नहीं है! तथाच जो नियम या कर्तव्य भय अथवा स्वार्थ मूलक हों वह नीति, और जिसमें भय अथवा स्वार्थ को अवकाश न हो किन्तु जिस नियम का केवल कर्तव्य बुद्धि से ही पालन किया जावे वह धर्म कहलाता है इसी प्रकार मानव समाज में भ्रातृत्व और आत्मबन्धुत्व की भावना को तथा हृदय की विशालता को विकास में लाने के लिए भी धर्म के अतिरिक्त और कोई साधन नहीं है परन्तु हृदय की यह मधुर भावना बुद्धि का विषय नहीं वह तो केवल अनुभव गम्य है। केवल पुस्तकों के पढ़ लेने और विज्ञान की कोरी चर्चा मात्र से भी इसकी उपलब्धि नहीं हो सकती, इस मधुर भावना की वीणा की झंकार तो धर्म के शांत प्रदेश में ही सुनाई दे सकती है। जिसका मूर्त स्वरूप मैत्री, करुणा, मुदिता और उपेक्षादि भावनाओं तथा अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह इन पांच यमों में व्यक्त हो रहा है। इसके अतिरिक्त जीवन का अन्त अर्थात इस देह के नाश होने पर अवशिष्ट रहे हुए आत्मा की उत्तरोत्तर उन्नति के लिए भी धर्म के सिवा अन्य कोई उपाय नहीं है। परलोक अथवा उसके स्वरूप विषयक दार्शनिकों का मतभेद भले ही हो परन्तु देहावसान के अनन्तर चेतन रूप आत्मा की कोई न कोई अवस्था तो अवश्य माननी पड़ेगी और उस अवस्था की उत्तरोत्तर उन्नति भी अपेक्षित है तब एक मात्र धर्म के सिवा और किस मार्ग के द्वारा इसका होना सम्भव हो सकता है? अतः पारलौकिक अभ्युदय का एक मात्र साधन धर्म ही सिद्ध होता है। अतएव मैं कौन हूं? कहाँ से आया हूं और कहां जाऊंगा? तथा यह विश्व क्या है? इसका मूल कौन और कहां है? एवं उसके साथ मेरा कोई सम्बन्ध भी है या नहीं? यदि है तो क्या और कैसे? इत्यादि जटिल प्रश्नों का कैसा स्पष्ट और संतोष प्रद उत्तर हमको धर्म से प्राप्त हो सकता है कैसा शुष्क तर्क या कोरे विज्ञान से कभी प्राप्त नहीं हो सकता! अधिक तो क्या, हम क्यों जीवित हैं? तथा दूसरों का भला हम क्यों करें, इससे हमको क्या लाभ? इत्यादि प्रश्नों का उत्तर भी आप को धर्म की पाठ्य पुस्तक से ही मिलेगा, विज्ञान में इतना दम नहीं कि वह इस क्यों? के सामने डटा रहे! सारांश कि जीव आत्मा जगत और परमात्मा आदि के स्वरूप निर्णय में जो स्पष्टता और उदारता पाठकों को सनातन धर्म तत्व में उपलब्ध होगी वह किसी मत या सम्प्रदाय अथवा पंथ में दृष्टिगोचर नहीं हो सकती। इसलिये धर्म का जो सनातन तत्व है वह कृत्रिम नहीं किन्तु अबाधित और ध्रुव वैज्ञानिक सत्य है।

अपने से छोटों को तत्काल दण्डित न करो जैसी परमात्मा तुम्हें दंडित नहीं करता। जब कि तुम उस के हरे भरे बाग रूपी संसार में कोलाहल मचा देते हो।

\+ + +

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ज्यादा बक-बक मत करो !

[ले०—कुँ० उदयभानसिंह, राजपूतकालेज, आगरा]

कई आदमियों को ऐसी आदत होती है कि उनसे चुप बैठा ही नहीं जाता। हर वक्त वे कुछ न कुछ कहते ही रहते हैं। कहते हैं कि ऐसे लोगों के मुँह में एक प्रकार की खुजली चलती रहती है। कोई काम की बात न हो तो भी व्यर्थ ही इधर उधर की गप्पें उन्हें हांकनी। कुछ न कुछ कहते रहने से उन्हें काम। ऐसे लोगों में कुछ को तो मौका देख कर बात करने की आदत होती है। जैसे लोग देखे उनकी इच्छानुसार बात करना शुरू करदी, ऐसा प्रसंग आरंभ किया जिसे लोग पसंद करते हों, पर कुछ बिना टाइम गाड़ी छोड़ते हैं। कौन आदमी बैठे हुए हैं, वे किस बात में कितनी रुचि या अरुचि रखते हैं, किस के पास बात सुन ने के लिए कितना समय है, इन सब बातों का विचार किये बिना ही, मन में जो आया कहने लगते हैं। मातम पुरसी के लिए आये हुए लोगों के बीच बैठ कर नीबू के आचार के गुण दोष बयान करने लगने में उन्हें कुछ भी झिझक नहीं लगती। वैद्य की दुकान पर दवा लेने गये हैं पर वहाँ इस बात पर बहस छेड़ रहे हैं कि मल मल का कुर्ता ठीक रहता है या मखमल का। अपने किसी खास काम के लिए कचहरी पर गए हैं किन्तु किसी अपने जैसे ही फालतू आदमी को समझा रहे हैं कि हरक्युलिस साइकल की अपेक्षा हम्बर ज्यादा टिकाऊ होती है।

अपने को वाकपटु कहने वाले बकवासी बात तो मौका देख कर करते हैं पर हाँकते दून की हैं। वे जानते हैं कि बेकार की बातें सुनने के लिए किसी के पास वक्त नहीं है। और साधारण बातें ऐसी मजेदार नहीं हो सकतीं जिन्हें काम छोड़ कर कोई सुनने बैठे। पर उन्हें अपने मुँह की खुजली मिटानी है इसके लिए कोई साथी जरूर चाहिए। जब तक कोई सुनने वाला न हो तब तक किस से बात करें। इस लिए वे बात को बतंगड़ बना कर मनोरंजक बनाते हैं। छोटी सी बात को ऐसा रूप देते हैं कि वह बड़ी महत्व पूर्ण या मनोरंजक जँचने लगती है। कई तो ऐसी बातें गढ़ते हैं कि जहां सुई नहीं होती वहां हल खड़ा कर देते हैं, तिल को ताड़ बना देना उनके बाएँ हाथ का खेल है। घर से निकल कर चाहे पड़ौस का शहर भी नहीं देखा है पर बात विलायत की पूछ लीजिए। कही सुनी बतावें सो भी नहीं, हर बात में अपने को शामिल कर देंगे। मैंने उस साल दिल्ली में यह देखा। बम्बई के बाजार मुझे पसंद नहीं आये। रंगून के लिए जाने वाले जहाज अब तो अच्छे बन गये हैं पहले बहुत खराब थे। सैर कर ने और घूमने की बात कहते हों सो नहीं। हर मामले में अपनी टाँग अड़ाते हैं। राजनीति की बात भी कहेंगे और चिकित्सा शास्त्र की भी। अपने अधूरे ज्ञान को पूरा समझ कर उसी पर अभिमान भी करते हैं और समझते हैं कि हम जो कह रहे हैं पूर्ण ज्ञान के आधार पर कह रहे हैं। ऐसे वाचाल लोगों में अनेक प्रकार के घातक दुर्गुणों का समावेश होजाता है। कभी कभी तो बकवासी ऐसे नये दुर्गुण देदेती है, जिनसे आदमी का जीवन ही धूलि में मिल जाता है।

मैं एक ऐसे लड़के को जानता हूं, जिसे बकवासी ने शेखी खोरी विरासत में दी है। आरंभ में इस लड़के को ज्यादा बातें कर ने की आदत थी। बाद को उसे अपने बारे में कुछ भ्रम पूर्ण धारणा हो गई। वह झूं-मूंठ अपने को बड़ा आदमी समझने लगा, और अपनी वास्तविक स्थिति को स्वयं कई गुनी समझने लगा और दूसरों को भी वैसी ही बताने लगा। आज कल वह एक छोटा सा काम कर के किसी प्रकार अपना गुजारा चलाता है पर अपनी स्थिति को बिना पूछे कम से कम पचास गुनी कहता है। यह शेखी खोरी कई बार एक भयंकर पागल पन के रूप में लोगों के सामने आती है और उन्हें यह सोचने ही नहीं देती कि वे किस स्थिति में है। और इससे आगे पीछे किस प्रकार चल सकते हैं। जो अपनी स्थिति के बारे में ठीक समझते हैं वे भी अपनी मानसिक दशा के बारे में भ्रम में रहते हैं, समझते हैं कि मैंने लोगों को कैसा उल्लू बनाया! लोगों को चकमा देकर अपनी बातों पर कैसा विश्वास करवा लिया! किन्तु जैसा वह समझता है बात उस से उल्टी होती है। दूसरे लोग उसकी बातों को न तो झूठ समझते हैं और न सच। कहने के लच्छे दार ढंग से मनोरंजन करने के लिए उसकी

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बात सुनते हैं और जब विनोद के लिए वक्त नहीं रहता तो अधूरी बात को ही छोड़ कर चले जाते हैं। वास्तविकता और बनावट को पहचानने में उन्हीं लोगों को कठिनाई हो सकती है जो बिलकुल बुद्धिहीन हैं जो थोड़ी सी भी समझ रखता है वह आसानी से ताड़ सकता है इस बात में कितनी अस्वाभाविकता है और कितना झूठ मिलाया गया है।

जब आदमी स्वयं भ्रम में रहने लगता है तो वह अपने संबन्ध की अन्य जानकारियों से भी वंचित हो जाता है। अपने को कुछ का कुछ समझने लगता है, ऐसी भ्रम पूर्ण स्थिति में पड़े रहने के कारण उसके मस्तिष्क की स्थिति भी कुछ विचित्र हो जाती है। अपनी और दूसरों की वास्तविक स्थिति का ज्ञान न होने की दशा में किसी काम को ठीक प्रकार नहीं कर सकता ऐसी दशा में किसी प्रकार की सफलता प्राप्त करना असंभव नहीं तो कष्ट साध्य अवश्य है। बातून आदमी प्रायः ऐसे ही मानसिक झमेले के शिकार पाये जाते हैं।

अधिक बातें बनाने वाला हमेशा सच नहीं बोल सकता क्योंकि सच बातें इतनी ज्यादा होती ही नहीं कि आदमी हर समय उन्हें कहता ही रहे और वे समाप्त ही न हों। छाछ को जब बढ़ाया जाता है तो उसमें पानी मिलाना पड़ता है। बकवास में झूठ का होना स्वाभाविक ही है। इस प्रकार एक बुराई व्यर्थ शिर पर चढ़ती है। अपना कोई लाभ नहीं होता। इतनी देर की शिर खप्पी के बदले कुछ लाभ होता है सो बात भी नहीं है। चुप बैठे रहते तो यह तो लगता कि हम बेकार बैठे हुए हैं, समय का व्यर्थ गवाँ रहे हैं इसका कुछ सदुपयोग करें। गप्पें समय को व्यतीत कर देती हैं और उसे यह भी मालूम नहीं हो पाता कि मेरा कितना समय व्यर्थ चला गया।

कुछ लोग समझते हैं कि बातून होने के कारण दूसरों पर हम अपना असर डाल लेते हैं और वे हमें बहुत सुयोग्य चतुर एवं बुद्धिमान समझते हैं। परन्तु सही बात यह नहीं है। जिनका स्वभाव उदासीनता लिये हुए होता है वे तो ऐसे लोगों की मन ही मन उपेक्षा करते हैं, एक बला की तरह समझते हैं। और जिनका स्वभाव सतर्क होता है दूसरों के गुण दोषों की परख करके उसके संबंध में कोई निश्चित धारणा बनाते हैं वे ऐसे लोगों को घृणा करते हैं। ठीक भी है जो केवल झूठे मनोरंजन के लिए अपने को और दूसरों को भ्रम में डाले, अपना और दूसरों का कीमती समय बर्बाद करे और व्यर्थ का झूठ बोले उससे घृणा के अतिरिक्त और किया ही क्या जाय? यदि बातूनीपन के साथ साथ झूठी आत्म प्रशंसा या अपने को बहुत बड़ा समझने की आदत है तब तो रोगी लाइलाज है। उसे संक्रामक रोगजन्तु समझ कर पास न बैठने देने में ही कल्याण है।

शक्ति का अपव्यय, बातूनीपन की सबसे बड़ी हानि है। हम नहीं समझते कि बात करने में हमारी कितनी ताकत खर्च होती है। शब्द के साथ शरीर की बिजली भी निकलती है। मस्तिष्क की सूक्ष्म शक्तियों को बातचीत के सिलसिले में पूरी तरह मशगूल रहना पड़ता है। कल्पना, स्मरण, चरित्र चित्र, घटना-संतुलन, साथी का चित्त परीक्षण, घटना में मनोरंजन का पुट, आत्मश्लाघा, असत्य को छिपाने का प्रयत्न यह सब कार्य मस्तिष्क की विभिन्न शक्तियों को बड़ी तेजी, फुर्ती और मिहनत के साथ करने पड़ते हैं। इतने बड़े परिश्रम का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया जाय तो पता लगेगा कि इस कार्य में प्रचुर परिमाण में अपनी व्यक्तिगत विद्युत शक्ति नष्ट हुई है। उस समय लोग यह नहीं समझ पाते कि उस अपव्यय से उनकी कुछ हानि हुई है पर बाद में यह हानि बड़ी दुखदायी होती है। जरूरी कामों के लिए उनके पास शारीरिक और मानसिक शक्तियां बच नहीं रहती। जिसने अपने घड़े में छेद कर रखे हों उसे प्यास के समय बगलें ही झाँकनी पड़ेगी। शरीर कमजोर होगया है बुद्धि काम नहीं करती है, इन समस्याओं के पीछे यही अपव्यय छिपा होता है। निश्चय ही बकवास से जीवनी शक्ति घटती है और आदमी पूरी आयु प्राप्त न करके अधूरी आयु में ही मृत्यु का ग्रास बन जाता है।

इसी लिए मैं कहता हूं। महाशय, ज्यादा बक बक मत कीजिए। उतनी बातें कहिये जितनी आपके लिए और दूसरों के लिए आवश्यक हैं। कम बोलने में आपके दोष छिपे रहेंगे। अपनी ताकत को जरूरी कामों के लिए संचित करते रहेंगे। सत्य, प्रिय और मधुर बोलिए, कम बोलिए, आप सानंद दीर्घ जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्रोध से छुटकारा कैसे मिले ?

[ले० – डा० पूनमचंद्र खत्री, बीकानेर]

गत अंक में बता चुका हूं कि क्रोध भयंकर विषधर है। जिसने अपनी आस्तीन में इस साँप को पाल रखा है उसका सर्वनाश होना ही है। जो पेट के ऊपर तेज छुरे की धार बाँधे फिरता हो उसका ईश्वर ही रक्षक है एक प्राचीन नीतिकार का कहना है "जिसने क्रोध की अग्नि हृदय में प्रज्वलित कर रखी है उसे चिता से क्या प्रयोजन ?" अर्थात् वह तो बिना चिता के ही जल जायगा। ऐसी महा व्याधि से दूर रहना ही कल्याण कारी है। जिन्हें क्रोध करने की बीमारी नहीं है उन्हें पहले से ही सावधान होकर इससे दूर रहना चाहिए और जो इसके चंगुल में फँस चुके हैं उन्हें पीछा छुड़ाने के लिए प्रयत्न शील होना चाहिए।

क्रोध की जड़ अज्ञान है। आदमी जब अपनी और दूसरों की स्थिति के बारे में गलत धारणा कर लेता है तब उसे कुछ का कुछ दिखलाई पड़ने लगता है। बेटे ने आज्ञा नहीं मानी पिता को क्रोध आ गया। क्यों कि पिता समझता है कि बेटा मेरी संपत्ति है, मेरी जाय दाद है, मेरा दास है, उसे मेरी आज्ञा माननी ही चाहिए। लेकिन किया जब इसके उलटी होती है तो गुस्सा आता है। स्त्री ने आज बैंगन का साग न बना कर दाल बनाली, आपको गुस्सा आ रहा है कि उसने ऐसा क्यों किया, मानो आप समझते हैं कि हर एक काम उसे आपकी आज्ञा से ही करना चाहिए। जिसे आप कुल का छोटा समझते हैं वह ऊँची कुर्सी पर बैठ जाता है तो आप आग बबूला हो जाते हैं। छोटा भाई आपसे बिना पूछे कोई दावत दे डालता है आप क्रुद्ध जाते हैं। कोई अजनबी ग्राहक आपकी दुकान पर आता है और किसी चीज के निश्चित भाव की अपेक्षा आधे दाम लगाता है आप उसे दस गालियां सुनाते हैं। आप वैष्णव हैं, कोई शैव होने की श्रेष्ठता बताता है आप उस पर बरस पड़ते हैं। किसी के विचार आपसे नहीं मिलते, वह मतभेद रखता है, बस आप उसे दुश्मन समझने लगे। जब यह भावना गुप्त रूप से जब मनमें घर बना लेती है कि लोगोंको मेरी इच्छानुसार चलना चाहिए तब क्रोध का बीजारोपण होता है। पिल्लों को लड़ालड़ा कर जैसे कटखने स्वभाव का बना दिया जाता है और चिढ़ाने से बच्चा जैसे जिद्दी बन जाता है उसी प्रकार 'सब मेरे इच्छानुवर्ती हों' की गुप्त भावना प्रतिकूल घटनाओं से टकरा टकरा कर बड़ी विकृत बन जाती है और मौके बे मौके उग्र रूप धारण करके क्रोध की शकल में प्रकट होती है।

इस मूल को काटे बिना क्रोध को नष्ट करना असंभव है। हमें प्रति दिन एकान्त में बैठ कर कुछ देर शान्ति पूर्वक अपनी वास्तविक स्थिति के बारे में सोचना चाहिए। हमें इतना अधिकार किसने दिया है कि अपने बिरानों को सब बात में अपनी इच्छानुसार चलावें ? हम स्वयं भी उतना ही अधिकार रखते हैं जितना दूसरे, फिर जब आप दूसरों से प्रतिकूल विचार रखते हैं, तो दूसरों को वैसा अधिकार क्यों नहीं है ? समझना चाहिए कि मैं स्वयं किसी से बड़ा या किसी का स्वामी न होकर बराबर की स्थिति का हूँ। समाज का संचालन समझौते के आधार पर होता है। इसलिए जहां मत भेद होता है वहाँ काम चलाऊ समझौता कर लिया जाता है। यह कहना भूल होगी कि कुटुम्ब की जिम्मेदारी मुझ पर है इसलिए मैं अपनी इच्छानुसार सारे परिवार को न चलाऊं तो व्यवस्था न रहेगी। यदि मैं कुलपति हूं तो मेरा उत्तरदायत्व इतना ही है कि आर्थिक नीति सदाचार, व्यवस्था और वर्तमान तथा भावी उन्नति के मार्ग से सब लोगों का परिचय रखूँ। हर बात में नियन्त्रण नहीं हो सकता। आपके पोते को कबड्डी खेलने का शौक है आप उस पर दबाव डालते हैं कि नहीं फुटबाल ही खेलनी पड़ेगी यह तो साम्राज्य वाद हुआ, फिर तो आप तानाशाह ठहरे। सबको विचार स्वातंत्र का अधिकार है और हमारा कर्तव्य इतना ही है कि प्रेम पूर्वक उनको औचित्य से परिचित रखें और सद्भावनापूर्ण प्रयत्न करके दूसरों को मार्ग पर लावें। मन से जहाँ साम्राज्य वादी भावना मिटी कि क्रोध रूपी महा युद्ध अपने आप बन्द हो जायगा

इसी तरह की एक और भी बात है। जब हम यह मानने लगते हैं कि जो कुछ हम जानते हैं वही ठीक है तब भी संघर्ष और क्रोध के अवसर आते हैं। पश्चिमीय वैज्ञानिक, जीवन भर किसी बात का अनुसंधान करते हैं। किसी मत को निश्चित करते हैं किन्तु यदि उन्हें अपने मत में संदेह हुआ तो बिना बीस वर्ष के परिश्रम का खयाल किये तुरंत अपना मत बदल लेते हैं। ज्ञान का समुद्र अथाह और अलख है जो यह कहता है कि मैं जो जान गया वही पूर्ण सत्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

पूर्ण है वह अँधेरे में भटक रहा है। अपने में डेढ़ और सारी दुनियां में आधी अकल मानने वाले ऐसी मूर्खता में जकड़े हुए हैं जिसको उपहासास्पद न समझ कर दया का पात्र गिनना चाहिए। मूर्खता भी क्रोध का कारण बनती है। हम मानते हैं कि शरीर पांच तत्वों का बना हुआ है कोई साबित करता है कि, पाँच तत्वों के अलावा अमुक अन्य तत्व भी इसमें शामिल हैं तो नाराज होने की कोई बात नहीं। उसकी बात ध्यान पूर्वक सुननी चाहिए और मनन करना चाहिए कि यह बात कहां तक ठीक है। गले न उतरे तो छोड़ देना चाहिए। पर यह न समझ लेना चाहिए कि जो हम जानते हैं उसके अलावा सब बातें झूठ हैं। अपने को ज्ञान पथ का पथिक जिज्ञासु समझते रहना भी क्रोध के एक बड़े द्वारा को बन्द कर देना है।

अपने को अधिकारी और पूर्ण ज्ञानी न मानने के अतिरिक्त क्रोध की शान्ति के कुछ और भी उपाय हैं। प्रतिज्ञा कर लीजिए "अपने दुश्मन क्रोध को पास न फटकने दूंगा जब आवेगा तभी उसका प्रतिकार करूँगा।" हो सके तो इन शब्दों को लिखकर किसी ऐसे स्थान पर टाँग दीजिए जहाँ दिन भर निगाह पड़ती रहे। ऐसा करने से यह विचार दृढ़ हो जावेंगे कि क्रोध दुश्मन है और उसका प्रतिकार करना है। जब क्रोध आवे तो तुरंत अपनी प्रतिज्ञा का स्मरण करना चाहिए और अपने गालों पर जोर जोर से चपतें लगाना चाहिए कि प्रतिज्ञा क्यों तोड़ रहे हो। जो लोग चपतें न लगाना चाहें वे मौन धारण कर सकते हैं। गुस्सा आया कि चुप्पी साधली। क्रोध का चुप्पी बढ़िया इलाज है। न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी। क्रोध में सने हुए कटु वाक्य मुँह से न निकलेंगे तो किसी से झगड़ा न होगा। और तृण रहित स्थान पर पड़ी हुई अग्नि की तरह कुछ देर में अपने आप शान्त हो जायगा।

क्रोध के समय ठंडे पानी का एक गिलास पीना आयुर्वेदीय चिकित्सा है। इससे मस्तिष्क और शरीर में बढ़ी हुई गर्मी शान्त हो जाती है। उस स्थान पर से उठ कर कहीं चले जाना या और काम में लग जाना भी अच्छा इलाज है। इससे मन की दशा बदल जाती है और चित्त का झुकाव दूसरी ओर हो जाता है। क्रोध आते ही गायत्री का जप करने लगना यह भी अनुभूत और परीक्षित प्रयोग है।

चंचल मन और उसका संयम

(ले०—श्री० रामसिंहजी चौहान, आंवलखेड़ा)

मन की चंचलता कितनी तीव्र और दुर्दमनीय होती है यह विगत अंक में बताया जा चुका है। अस्थिर मन ऐसा बे लगाम घोड़ा है जो मनुष्य को कहीं भी लेजा कर पटक सकता है। बुरे से बुरे परिणाम सामने उपस्थित कर सकता है जीवन संघर्ष को इतना कटु बना सकता है कि आदमी जिन्दगी को भार समझ कर ईश्वर से मृत्यु प्रदान करने की प्रार्थना करे। आदतों से मजबूर, बीमारी के बंधनों में जकड़े हुए और अपने ही कृत्यों से जिन्दगी को नरक तुल्य बनाये हुए लोगों को देख कर मन के असंयम की भयंकरता सहज ही स्मरण हो आती है।

मन के संयम, चित्त की एकाग्रता का सुन्दर रूप सफलता में दिखाई पड़ता है। जिन कामों में सफलता दिखाई पड़ती है, उनकी जड़ में मनोनिग्रह है। बिना पूरा ध्यान दिये कोई भी कार्य नहीं हो सकता। महान कार्यों की जड़ में तो मात्र दृढ़ लगन और चित्त की स्थिरता होती है। छोटे मोटे कार्यों की पूर्णता भी पूरा मनोयोग चाहती है। हमारे प्रतिदिन के कार्यों को सफल और सरल बनाने के लिए ही मनोयोग की जरूरत हो सो बात नहीं, योग जैसे महान कार्य का सम्पादक भी मन के संयम के आधार पर ही होता। महर्षि पातञ्जलि ने तो चित्त वृत्तियों के निरोध को ही योग माना है। एक शब्द में यों कहा जा सकता है कि मन का संयम ही मनुष्य को देवता और ईश्वर बना सकता है।

यह मनोनिग्रह किस प्रकार किया जाय गीता में इस विषय का प्रतिपादन संक्षेप में और बड़े उत्तम ढंग किया गया है। भगवान कृष्ण ने जब अर्जुन को मन के संयम का महत्व बताते हुए उसे करने को कहा तो अर्जुन को बड़ी कठिनाई मालूम हुई। उसने पूछा भगवन, मन तो वायु के समान चंचल है उसका संयम तो असंभव है। अर्जुन जैसी कठिनाई पाठकों के सामने भी उपस्थित हो सकती है। मन अभी यहां है तो अभी वहां पहुंचता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्षण में बम्बई है तो क्षण में कलकत्ता। पलक मारते पृथ्वी भर की प्रदक्षणा कर आता है उस अत्यंत सूक्ष्म चेतना का निग्रह किस प्रकार हो सकता है? यह एक असंभव नहीं तो कठिन बात अवश्य है। ठीक भी है, जो जितनी मूल्यवान वस्तु है वह उतनी ही कठिनता से मिलती है। हीरा बहुमूल्य है, इसीलिए बड़ी खोज के बाद मिलता है। प्रकृति की दुकान में हर चीज का उचित मूल्य है। उसी के अनुसार मन का निग्रह, कठिन साधना चाहता है। भगवान कृष्ण ने दो ही शब्दों में अनुभव गम्य ज्ञान देकर मनो निग्रह का उपाय बता दिया है। 'अभ्यासेनतु कौन्तेय वैराग्येण च ग्रह्यते।' हे अर्जुन, वह अभ्यास और वैराग्य से वश में होता है। मन का संयम करने के लिए अभ्यास और वैराग्य से सुन्दर और कोई मार्ग नहीं हो सकता।

उपरोक्त दोनों ही उपाय आपस में संबद्ध हैं। दोनों एक दूसरे से बँधे हुए हैं, एक गाड़ी के दो पहिये हैं दोनों में से कौन सा प्रथम और कौन द्वितिय हो सकता है यह कहना कठिन है फिर भी पाठक वैराग्य को प्रथम मान सकते हैं।

मन है क्या? वास्तव में मन का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। आत्मा की तरह वह अमर नहीं है। इन्द्रियों की सम्मिलित स्फुरणा को मन कहा जा सकता है। कुछ लोग इसे छटी इन्द्रिय मानते हैं। जो, हो, मन है शरीर की एक उपादान ही। एक विचार के रूप में इसे माना जा सकता है। यदि ऐसा न होता तो मन का निग्रह सर्वथा असंभव हुआ होता। जो आदमी एक वर्ष पहले चोर था अब वह धर्मात्मा कैसे बन गया। जिस आदमी में अनेक दुर्गुण भरे हुए थे आज वह निर्मल किस प्रकार हो गया आत्मा ने मन को एक स्थान से खींच कर दूसरे कार्य में लगाया है। जब हम चाहते हैं कि व्यभिचार करेंगे तभी मन उसके लिए तरह तरह के उपाय ढूंढता है। जब चोरी करने की जी में होती है तभी चुराने की तरकीबें सूझ पड़ती हैं। जहां लगाम छोड़ी कि मन महाशय मुड़ गये। उछल कूद करते हैं जरूर, पर दो चाबुक लगाते ही ठीक भी हो जाते हैं। ऐसे आदमी ढेरों पड़े हुए हैं जो काम वासना के गुलाम हैं। उन्हें अपनी हविस पूरी किये बिना चैन नहीं पड़ता। पर असंख्य हिन्दू विधवाएँ ऐसी मिलेंगी जिन्होंने पति विछोह के बाद स्वप्न में भी पर पुरुष का चिन्तन नहीं किया। अखण्ड ब्रह्मचारी पुरुषों का भी अभाव नहीं है। यहाँ यह स्पष्ट हो जाता है कि एक सी शारीरिक शक्ति रखने वाले दो व्यक्तियों में से एक संयमी और दूसरा असंयमी है तो उसका कारण दोनों की मत विभिन्नता ही है। मन स्वतंत्र रूप से कुछ नहीं कर सकता। हम जहाँ चाहते हैं उसे फेंकते हैं। लगाम ढीली छोड़ने पर वह हवा के साथ जरूर बह जाता है, पर जहाँ सावधान हुए कि शिर झुकाते भी उसे देर नहीं लगती। मन का निग्रह दुष्कर इसलिए बताया गया है कि सूक्ष्म होने के कारण उसकी चाल बहुत तेज हो जाती है और फिर उसे रोकने के लिए उतना ही कठिन प्रयत्न करना पड़ता है। कुम्हार का चाक जब तेज रफ्तार पर घूम रहा होता है तो वह एक दम बन्द नहीं हो जाता वरन् रोकने के लिए कुछ प्रयत्न और समय की जरूरत होती है। साइकिल का पहिया जब पूरी तेजी से चल रहा हो और ब्रेक ठीक न हों तो साइकिल को रोकने में कुछ प्रयत्न करना पड़ेगा। समय लगेगा। सब से पहले उसे चलाने से वैराग्य धारण करना होगा। पांव चलाने बन्द करने होंगे। कुम्हार तभी चाक को रोक सकेगा जब सब प्रथम उसे घुमाने से वैराग्य धारण करे और तत्पश्चात अभ्यास से हाथ का सहारा देकर या कोई और चीज लगा कर उसकी चाल को रोके। केवल वैराग्य से भी मन वश में हो सकता है। घुमाना बन्द कर देने पर भी चाक रुक सकता है पर समय कुछ अधिक लगेगा। यदि साथ ही अभ्यास द्वारा रोक भी लगाई जाय तो काम आसानी से और जल्दी दूर हो सकता है।

वैराग्य का तात्पर्य सब ओर से उदासीन हो जाना नहीं है। सब ओर से उदासीन होने का अर्थ तो एक प्रकार से मृतक बन जाना होगा। जो कुछ चाहता नहीं जिसकी किसी कार्य में रुचि नहीं, वह कर भी कुछ न सकेगा। जैसे तैसे उदरपूर्ण कर लेगा और अजगर की तरह सांसें पूरी करता रहेगा। यह एक प्रकार की जड़ता है। ऐसे जड़ वैराग्य की शास्त्रों ने अवहेलना की है और नैतिक तथा सामाजिक दृष्टि से तो यह एक प्रकार का पाप है। फिर मन-संशय के लिए कैसा वैराग्य धारण करना चाहिए? गीता में ही इस प्रश्न का समाधान करते हुए भगवान कहते हैं—

"इन्द्रियार्थेषु वैराग्य मनहङ्कार एव च।"

अर्थात—इन्द्रिय जन्य विषयों से और अहंकार से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वैराग्य करना चाहिए। कुवासनाओं में भटक कर ही मन चंचल होता है। इन्द्रिय जन्य भोग बड़े आकर्षक होते हैं उनमें मन बार बार दौड़ता है। इन भोगों से तृप्ति नहीं होती वरन जैसे-जैसे उनका सेवन किया जाता है वैसे ही वैसे आकांक्षा और प्रबल होती जाती है। तृण पाकर यह अग्नि तीव्रता को ही धारण करती है। इन्हीं भोगों में लिप्त होकर आदमी अन्धा बन जाता है और वास्तविक उद्देश्य एवं कर्तव्य पथ को भूल कर पाप बटोरने लगता है। दु:खों की जड़ यही इन्द्रियों के भोग हैं। गत अंक में बता चुका हूं कि इन भोगों में लिप्त होकर हम किस प्रकार नष्ट होते हैं कैसी नारकीय यातनायें सहते हैं और कैसे जघन्य कृत्य करते हैं।

इन्द्रियों के भोगों के बाद अहंकार का नम्बर आता है। घमंड, अभिमान, अहंकार शैतान का रूप है।

असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि।
ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान्सुखी॥
आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया।
यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञान विमोहिताः॥

यह शत्रु मैंने मारडाला, औरों को भी मारूँगा, मैं ईश्वर हूँ, मैं ऐश्वर्य भोगने वाला हूं, मैं सिद्ध हूं, मैं बलवान हूं, मैं सुखी हूं, बड़ा धनवान हूं, बड़े कुटुम्ब वाला हूं, मेरे समान दूसरा कौन है? मैं दान देता हूं, यज्ञ करता हूं, मौज मारता हूं। इस प्रकार का अभिमान अहम्मन्यता राक्षसों जैसी है। मैं हूं। यही तो बंधन और अज्ञान है। इन्द्रिय भोग यदि मीठी छुरी है तो अभिमान लप-लपाता कुठार है। एक मदिरा है तो दूसरा धतूरा। एक को पीकर मोह निद्रा आती है तो दूसरे को लेकर पिशाच बन जाता है। दोनों एक दूसरे से भयंकर हैं। "काम एष क्रोध एष........" काम और क्रोध दो ही तो महा पापी हैं। इन्हें ही तो वैरी समझना है।

गीताकार का तात्पर्य इसी काम क्रोध से वैराग्य धारण करने का है। अहंकार और वासनाओं के ग्राहों से बचे बिना भव सागर कैसे पार किया जा सकता है? जब तक इन दोनों से मुँह न मोड़ा जाय तब तक लौकिक और पारलौकिक कोई भी उन्नति न हो सकेगी। कामी विषय लोलुप और अभिमानी किसी महान कार्य का साधन करने में समर्थ नहीं हो सकते हैं। उन्हें अपनी भीतर जलन बुझाने से ही फुरसत नहीं फिर दूसरी तरफ कौन देखे? किसी महान अनुष्ठान का सरंजाम कौन जुटावे?

मन का संयम करने के लिए इसी वैराग्य की आवश्यकता है, जिससे कुविचारों का पहिया रुक जाय और चित्त शान्त होकर एक स्थान पर ठहर सके। बिना वैराग्य के मनो निग्रह के अन्य साधन ऐसे हैं जैसे मोटर को तेज चाल से चलाते हुए उसे रोकने के लिए रास्ते में कंकड़ पत्थर डालना। उन उथले प्रयत्नों से मोटर टूट सकती है पर रुक नहीं सकती। पानी की तेज धारा, उसका मूल स्रोत रोकने से ही बन्द हो सकती है रास्ते में मिट्टी की मेंड लगाने से नहीं।

---

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जब हम अपने हृदय के कपाटों को दूसरों की भलाई करने के लिए खोल देते हैं तो हम स्वयं भले बन जाते हैं और हमारे भले आदमी होने का श्रीगणेश प्रारम्भ हो जाता है। हमारी उन्नति होती जाती है और हम उस महा शक्ति को पहचानने लगते हैं।

\+ × ÷

यदि तुम ईश्वर की वाणी सुनना चाहते हो तो अवश्य सुनो। तुम्हारे मार्ग के रोड़े तुम्हारा कुछ न बिगाड़ सकेंगे चाहे वे कितने ही भयंकर क्यों न हों।

× × +

अपनी जीविका के लिए किसी प्राणी को दुख न पहुचाओ। उसको भी दुनिया में जीने का अधिकार है। वह भी उसी प्रभु का प्यारा है जिसको तुम प्यार करते हो या जिसके द्वारा प्यार करवाना चाहते हैं

× × +

हृदय में सुन्दर भाव भरने से सुन्दर हो जाओगे और कुरूप भावों से कुरूप हो जाओगे। तात्पर्य यह है जैसा सोचोगे वैसे बन जाओगे।

× × +

सबको उच्च भाव से देखो न जाने किस में कैसी आत्मा है। शायद वह तुम्हारी परीक्षा कर रही हो, तुम्हें अपनी परीक्षा में अनुत्तीर्ण न होना चाहिये

× + +

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्मरण शक्ति और उसका विकाश

(ले०—श्री० गिरराज किशोर विशारद, चिरहौली)

(२)

स्मरण शक्ति का विकाश, मनुष्य जीवन के विकाश के लिए अत्यंत ही आवश्यक है। इस बात को सभी लोग स्वीकार करते है। गृही, विरक्त, बहुधंधी बैरागी सब को पिछली बातें याद रखने की जरूरत पड़ती है। बहुत पढ़ने सुनने और अनुभव करने पर भी मूर्खता बनी रहती है इसका कारण स्मरण शक्ति की कमी है। हम सैकड़ों सद्ग्रन्थ पढ़ते हैं उनको पढ़ने और सुनने के काल में अपने ऊपर ज्ञान का पूरा असर होता है। उन क्षणों में साधारण लोगों की स्थिति भी महा पुरुषों के समान होती है। जिस विषय की पुस्तक पढ़ रहे हैं उस विषय की काफी जानकारी उस समय हो जाती है। पर यह पढ़ना सुनना बन्द करते ही सारा ज्ञान चला जाता है। दस पाँच दिन बाद तो कुछ भी याद नहीं रहता सिर्फ इतना खयाल रहा आता है कि अमुक विषय की अमुक पुस्तक हमने पढ़ी थी। कोई एकाध बात अधिक आकर्षक हुई तो वह याद रह गई अन्यथा सब गायब। कुछ बरस बाद केवल इतना याद रहता है कि यह किताब हमने कभी पढ़ी थी। और भी अधिक समय बीतने पर इस बात को भी भूल जाते हैं। इस प्रकार असंख्य पुस्तकों में पढ़ा हुआ और अनेक महा पुरुषों के मुख से सुना हुआ ज्ञान हमारी फटी जेब में से यों ही कहीं गिर पड़ता है और धूलि में मिल कर खोजाता है। यदि हम दस पाँच पुस्तकों के सत् ज्ञान को धारण किये रहें। एकाध महा पुरुष के विचार भी याद बने रहें तो पूरे ज्ञानी और अनुभवी बने रह सकते हैं। किन्हीं उत्तम अवसरों पर हम जैसे प्रभावित हुए थे वैसी ही स्थिति का चित्र स्मरण रखे रहें तो जीवन को एक ही निश्चत पथ की ओर ले जा सकते हैं। यदि हमारी स्मरण शक्ति तीव्र हो तो बात की बात में पुराने अनुभवों को याद कर सकते हैं। पिछली विद्या का स्मरण करके अद्वतीय बने रह सकते हैं।

यहाँ यह न सोचना चाहिए कि ईश्वर ने याद भूल जाने का दुर्गुण देकर हमारे साथ अन्याय किया है। नहीं, उसने हमारे मास्तिष्क यंत्र और उसके भीतर की शक्तियों का निर्माण बड़ी बुद्धिमतापूर्वक किया है। यदि हमें पिछले दिनों की सारी बातें ज्यों की त्यों याद बनी रहें तो मस्तिष्क इतना भरजाय कि उसमें आगे की चीजें देखने और सुनने शक्ति ही न रहे। गत अंक में बताया जा चुका है कि पिछली बातें मस्तिष्क के परिमाणुओं में भीतर धँसती जाती है और उनकी ऊपर की पीठ दूसरी बातों के लिए खाली होती जाती है। जिस प्रकार पानी की एक लहर आगे चलती जाती है और पीछे का स्थान दूसरी लहरों के लिए छोड़ती जाती है उसी प्रकार पूर्व ज्ञान की स्मृति भी सूक्ष्म परिमाणुओं में भीतर धँसती जाती है।

मस्तिष्क एक प्रकार की कबाड़िये की दुकान हैं जिसमें तरह तरह की टूटी फूटी नई पुरानी चीजें अव्यवस्थित रीति से भरती चली जाती है। उस दुकान में कहीं टूटे पुर्जे पड़े हुए हैं तो कहीं चक्की चूल्हे, कहीं बटन पड़े हैं तो कहीं सुइयां, कहीं कुर्सियों के पाये पड़े हुए हैं तो कहीं हुक्की। इस प्रकार की अव्यवस्थित ढंग के खचाखच भरी हुई दुकान का मालिक भी यदि आलसी है, तो किसी चीज को ढूँढ निकालना सहज न होगा। दुकानदार उसमें से एक पेच ढूँढना चाहे तो उसे दुकान का सारा सामान तितर बितर करना पड़ेगा तब किसी अनिश्चित स्थान पर कोई पेच पड़ा मिल सकेगा। यही बात स्मरण के संबंध में हमारे मास्तिष्क की होती है। जो लोग स्थूलबुद्धि से यों ही लापरवाही के साथ जाहे जिस ज्ञान को चाहे जहाँ पटक देते हैं उनका संग्रह कूड़े की तरह होता है जिसे दूसरे ही क्षण खोज निकालना कठिन है। इसके विपरीत जो लोग व्यवस्था पूर्वक किसी चीज का स्थान नियत करके उसी स्थान पर सब वस्तुओं को रखते हैं उनकी चीजें निगाह के सामने रहती हैं और यदि ओझल भी हो जायँ तो ढूँढने में देर नहीं लगती उन बातों की याद जल्दी उठ आती है जो यह समझ कर मस्तिष्क में रखी जाती है कि इसको फिर जरूरत पड़ेगी और तब तुरंत याद उठ आनी चाहिए। इसके विपरीत जिस चीज में कोई विशेष रुचि नहीं होती या ऐसा भान नहीं होता कि इसका स्मरण रखना आवश्यक है वह सब चीजें याद नहीं रहती।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आप एक बगीची में घूमने जाते हैं, सैकड़ों तरह के पौधों, वृक्षों, बेलें, फूल, फल देखते हैं। बगीची छोड़ते ही कोई आपसे पूँछे कि बताइये कौन कौन से पेड़ आपने देखे आप यही कहेंगे 'भाई, याद नहीं! फिर कोई प्रश्न करे अच्छा पेड़ तो बहुत से थे शायद इसलिए न याद रहे हों, फूल तो थोड़े ही पौधों पर होंगे, बताइये किन किन फूलों को आपने देखा। आपको पूरी तरह यह भी याद न होगा। एक दो चीजों की यदि याद रही भी होगी तो उनकी जिनमें कुछ विशेष आकर्षण होगा। सीधी सादी चीजों में से तो शायद ही कोई याद होगी। दूसरे दिन आप उसी बगीचे में जाते हैं और सोचते हैं कल के पूछने वाले को आज ठीक जवाब दूंगा और पेड़ों को ध्यान से देखते हैं फूलों को ठीक तरह पहचानते हैं, उनके नाम याद करते हैं और ध्यान देते जाते हैं कि यह सब बातें मुझे ध्यान रखनी हैं साथ ही डरते जाते हैं कि कहीं भूल न जाऊँ जिससे कल की तरह आज भी निरुत्तर होकर अपनी स्मरण शक्ति की स्थूलता पर उपहास न कराना पड़े। अब आप बगीचे के बाहर आइये, सारे बगीचे का चित्र मस्तिष्क में घूम रहा है पूछने वाला फिर पूछता है—बताइये साहब आज बगीचे में क्या देखा? आप तुरंत ही सब चीजें बता देते हैं। भूल पड़ती है तो केवल एक दो बात की। यह भी इसलिए कि इस प्रकार स्मरण को धारण करने का यह पहला अभ्यास था। अभ्यास कुछ पुराना होते ही —याद रखने की भावना दृढ़ होते ही वे बातें आपको तुरंत याद आने लगेंगी जिनके लिए अभ्यास किया था। अकबर किस सन् में पैदा हुआ था यह स्कूल के विद्यार्थियों को ठीक याद होता है पर उनसे पूछा जाय कि तुम्हारा छोटा भाई किस सन् में पैदा हुआ था तो उन्हें याद न होगा। क्या छोटे भाई की अपेक्षा अकबर अधिक घना संबंधी है? नहीं। अकबर की जन्म तिथि याद रखने की इस लिए कोशिश की गई है कि शायद यह बात परीक्षा में पूछी जाय। पर छोटे भाई के बारे में ऐसी कोई आशंका नहीं है इसलिए वह याद भी नहीं है। स्कूल में जोमेट्री हम में से सब ने पढ़ी होगी पर जिन्हें स्कूल के बाद उससे काम नहीं पड़ा उन्हें एक दो साध्यों को छोड़ कर शेष सब साध्यें भूल गई होंगी। पर कक्षा १ में याद किये गये पहाड़े अभी तक याद होंगे क्यों कि उनके पीछे अनेक बार यह भावना की गई है कि यह हमें याद रखने हैं।

उपरोक्त पंक्तियों को पढ़ने के बाद पाठक समझ गये होंगे कि स्मरण शक्ति तभी ठीक काम करती है जब उसके पीछे याद रखने की इच्छा और प्रयत्न हो। जिन लोगों में यह शक्ति स्वभावतः अधिक हो उन्हें ईश्वर की इस कृपा के लिए धन्यवाद देना चाहिए और जिनमें कम है उन्हें बढ़ाने का प्रयत्न करना चाहिए।

अभ्यास नं० २

गत अंक में स्मरण शक्ति बढ़ाने का एक अभ्यास ताश की बूँदों को याद रखने का बताया गया था। अब एक और अभ्यास बताया जाता है। कोई ऐसा एक रंगा चित्र लीजिए जिसमें अनेक चीजें दिखाई पड़ती हों। सीनरी के चित्र इस कार्य के लिए अच्छे बैठते हैं। इस चित्र को एक मिनट ध्यान से देखिये फिर एक कागज पर लिखिए कि उसमें क्या क्या चीजें देखीं। बाद को अपने लिखे हुए कागज और चित्र का मुकाबिला कर के देखिये कि आप क्या क्या बातें लिखने में भूल गये हैं। अब दूसरा चित्र लीजिए और उसे देखिए तथा पूर्ववत उसमें देखी हुई चीजों को भी लिखिए तत्पश्चात् परीक्षा कीजिए कि अब की बार क्या छोड़ गये। एक चित्र एक बार ही काम में लाना चाहिए। क्योंकि दूसरी बार तो कोई चीज छूट ही नहीं सकती। पहली बार जो भूल गये थे, मुकाबिला करने में आपने जान लिया कि इसमें अमुक भूल थी। फिर दूसरी बार भूल रहने के लिए कोई चीज ही नहीं बचती। एक दिन में दो तीन चित्रों का अभ्यास काफी होगा। यह जरूरी नहीं है कि इतने चित्र खरीदें तभी काम चले। सचित्र पुस्तकों में अनेक चित्र होते हैं। ऐसी एक किताब से कई दिन का काम चल सकता है। कुछ देर के लिए मित्रों से सचित्र पुस्तकें मांगी जा सकती हैं, इस प्रकार बिना कुछ खर्च किये भी यह अभ्यास चलाया जा सकता है। एक मिनट का अभ्यास ठीक होजाय तो फिर समय घटाना चाहिए ५० सिकिण्ड फिर ४० फिर ३० सेकिण्ड इस प्रकार एक दो सेकिण्ड देख कर ही चित्र का पूरा विवरण लिख देने तक का अभ्यास करना चाहिए। एक रंगे चित्र के बाद बहु रंगे चित्रों का अभ्यास है। इसमें दीखने वाली चीजों का स्वरूप और रंग दोनों लिखना चाहिए। यह दुहरा

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मैस्मरेजम से हमें क्या फायदा ?

(लें०—प्रो० धीरेन्द्रनाथ चक्रवर्ती, बी० एस० सी)

(३)

गत दो अंकों को पढ़ने बाद पाठक समझ गये होंगे कि मैस्मरेजम किन सिद्धान्तों पर स्थित है। जो इस विद्या के जिज्ञासु हैं उन्हें अच्छी तरह यह समझ लेना चाहिए कि यह पूर्ण रूप से मनोवैज्ञानिक आधार पर टिकी हुई है। दूसरों पर असर डालने वाली जो व्यक्तिगत विद्युत आदमी में होती है उसी की नियमित रूप से अभ्यास करने पर अभिवृद्धि हो जाती है और इस विशेषबल द्वारा अपने को तथा दूसरों का हानि लाभ पहुंचाया जाता है।

आज पाठकों को हमें यह बताना है कि इस विद्या के द्वारा क्या हो सकता है और क्या नहीं। पहले अपने संबंध में विचार करना चाहिए कि हम स्वयं इस विद्या के जरिये क्या हानि लाभ उठा सकते हैं। यहां उस बात को फिर दुहराना पड़ेगा कि आत्म शक्ति को बढ़ाये बिना कोई भी महान कार्य पूरा नहीं हो सकता और न जीवन ही सार्थक किया जा सकता है। क्योंकि सारी शारीरिक और मानसिक शक्तियों को मूल चेतना आत्म शक्ति से ही मिलती है। इच्छा शक्ति यदि निर्बल है तो पहलवान आदमी एक लड़के को भी परास्त करने में असमर्थ होगा। हट्टा कट्टा आदमी दस कोस पैदल चलने में अपने को अशक्त पावेगा। दार्शनिक सुकरात से किसी ने पूछा—मुर्दा कौन है ? उनने उत्तर दिया—जिसका मन मर गया। यहां मन से अभिप्राय इन्द्रिय जन्य वासना से नहीं वरन् इच्छा शक्ति से है। यह आत्मशक्ति, विद्युत निर्माणक यंत्र है जिसके चलने पर मशीन के सारे कल पुर्जे चलने लगते लगते हैं चाहे वे टूटे फूटे ही क्यों न हों और उस यंत्र के बन्द या मन्द होते ही पुर्जों का काम शिथिल हो जाता है, चाहे वे बिलकुल नये ही क्यों न हों। अस्सी फीसदी नौजवानों के शरीर और मन का विश्लेषण कीजिये वे अनुत्साही और निराशा से भरे हुए मिलेंगे। शरीर की जाँच करने पर कोई छोटा मोटा घुन लगा हुआ मिलेगा पर जवानी के नये खून को केवल उस छोटे से घुन के कारण अशक्त नहीं कहा जा सकता। फिर क्यों उसके मुह पर मक्खियां भिनक रही हैं ? क्यों किसी काम को करने की भीतर से स्फुरणा नहीं होती ? क्यों हर वक्त निराश और आशंका की भावनाओं से घिरा रहता ? उसमें आत्म शक्ति, आत्म विश्वास की कमी हो गई है। वह अपने बल को भूल गया है। हनुमान में समुद्र पार करने का बल था पर वे अपने बल को भूल गये थे। जामवन्त ने बताया कि भूलो मत, तुममें अनन्त बल है। जब उन्हें आत्म-शक्ति का स्मरण हुआ तो सहज ही समुद्र पार कर गये। सत्तर वर्ष के बुड्ढ़े गांधी को देखिये, अठारह अठारह घंटे काम में जुते रहते हैं। इतना श्रम करते हैं जितना अनेक युवक मिल कर भी नहीं कर सकते उनके जीर्ण शीर्ण शरीर में इतनी ताकत कहाँ से आती है ? उन्होंने आत्मशक्ति को बढ़ाया है। और उसी डायनुमा मे इतनी बिजली मिलती रहती है कि नौजवानों की अपेक्षा कई गुना काम अपने जीर्ण शीर्ण शरीर से भी कर सकते हैं।

मैस्मरेजम इस आत्मशक्ति की वृद्धि करने का एक सरल और अनुभूत उपाय है। मैं यह नहीं कहता कि जिस प्रकार की त्राटक या अन्य शक्ति आकर्षण क्रियाएं मैं जानता हूं उससे अधिक हैं ही नहीं या आत्मशक्ति सम्पन्न महानुभावों ने उन्हीं क्रियाओं को करके आत्मशक्ति को जाग्रत किया है। उसके अगणित उपाय हो सकते हैं और बुद्धि पूर्वक नये निकाले जा सकते हैं। कुए में से पानी निकालने के लिए पम्प लगाया जा सकता है, रहट चलाई जा सकती है, ढेंकी से काम हो सकता है, रस्सी में बाँध कर घड़ा खींचा जा सकता है और जंजीर में लोटा, कमंडल, ताम्र पात्र बाँध कर खींच सकते हैं। सब तरीकों से पानी प्राप्त किया जा सकता है पर क्रिया एक ही होगी। किसी न चूने वाले पात्र को कुए में डुबा कर ऊपर खींचना। खींचने के उपायों को बदला जा सकता है पर सिद्धान्त में अन्तर

अभ्यास है इसलिए आरंभ काल में दो मिनट तक समय देखने के लिए लिया जा सकता है और फिर क्रमशः घटाया जा सकता है। कुछ दिन लगातार इस चित्र दर्शन और लेखन के अभ्यास करने पर स्मरण शक्ति का काफी विकाश हुआ मालूम पड़ने लगता है। क्रमशः

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नहीं हो सकता। यही बात आत्मशक्ति की उन्नति और मैस्मरेजम प्रणाली के संबंध में है।

बिखरी हुई शक्तियों का एकत्रीकरण ही शक्ति का मूल है। एक स्वर से आज दुनिया चिल्ला रही है संगठन करो। संघ ही शक्ति है हर प्लेट फार्म से यही पुकार आती है। संगठित हो जाओ! सर्वत्र संगठन की धूम है। हिन्दू सभा, मुसलिम लीग, जातीय संगठन, राष्ट्रीय कांग्रेस, युवक संगठन, विद्यार्थी संघ, महिला सम्मेलन, प्रजा परिषद, दलित सभा, पंडित—परिषद, का बोलबाला है। विचार धारा, व्यवसाय, धर्म, जाति, अधिकार, विद्या, स्वास्थ्य, आदि के आधार पर विभिन्न संगठन कायम हैं और नित नये बनते जाते हैं। क्योंकि अब दुनियां जान गई है कि संसार में संघ—शक्ति एकत्री करण से बढ़कर कोई ताकत नहीं हो सकती। यही सर्वोपरि शक्ति है। बिखर जाने, फूट पड़ने, टूट फूट होने तथा पृथकरण के दोष और एकता, मेल, इकट्ठे होने के गुण सर्व विदित है उनकी एक छोटी सी झांकी करा देने का तात्पर्य इतना ही है कि मैस्मरेजम तत्व के जिज्ञासु यहीं भली भांति समझ जावें कि मानसिक शक्तियों की एकत्री करण द्वारा जो अद्भुत चमत्कार हो रहे हैं और उससे भी बढ़कर आगे होने वाले हैं उनका मूल भूत आधार वही महान तत्व है जिसको आगे दुनियां अब घुटने टेक कर बैठ गई है और उसके अनन्त शक्ति सम्पन्न चरणों में अपना मस्तक रगड़ रही है।

एकता—एकत्री करण शक्ति का सर्वोत्तम विधान है। आतिशी शीशे द्वारा सूर्य की किरणें एकत्रित होते और उनके द्वारा अग्नि उत्पन्न होते, आप सब लोगों ने देखी होगी। किसे पता है कि एक इंच के छोटे शीशे की परिधि में इतनी अग्नि घूम रही है जिसमें विश्व को भस्मी भूत करने की शक्ति है। साधारण कांच पर बिखरी हुई किरणों से हम इसे नहीं जान सकते। अपने पड़ौसियों को जब कीड़ों की तरह क्षुद्र जीव देखते हैं तब यही भ्रम होता है कि यह हाड़ मांस का पुतला तुच्छ है। इसकी शक्ति नगण्य है। किन्तु जिसने विवेक पूर्वक गवेषणा की है उसने देखा है कि यह ईश्वर का अमर पुत्र तुच्छ नहीं है। इसका बल अकूत है। आज का हिटलर चिल्लाता है 'अज्ञानियो' मुझे कल चपरासी, उदरपूर्णा के लिए चिन्तित एक अनाथ बालक समझो। आदमी के अन्दर जो तत्व है उसे मैंने देख लिया है। मेरी शक्ति अतुलित है क्योंकि मैं अखंड शक्ति का पुत्र हूं। दुनियां मेरी बात सुनकर तिलमिला उठेगी। आज के तानाशाह कहते हैं हमें देखो हम राजघरानों में नहीं मुफलिसों के घर में पैदा हुए हैं। पर हमने जान लिया है कि आदमी के अन्दर क्या है। उस दिन नैपोलियन नामक एक लड़का महान एल्प्स पर्वत के निकट पहुंचा। वह अनन्त काल से रास्ता रोके पड़ा हुआ था। नेपोलियन ने दृढ़ता पूर्वक कहा तुम्हें मेरे मार्ग में से हटना पड़ेगा, बेचारा ऐल्प्स आखिर जड़ पदार्थ था। चेतन्य तत्व की गर्मी कैसे सह सकता था। उसे हटना पड़ा और नेपोलियन के लिए मार्ग देना पड़ा। जिसके पास अपनी गिरह का पेट भरने लायक अन्न और तन ढकने लायक कपड़ा नहीं है। वह भिक्षुक गांधी, चालीस करोड़ आदमियों के दिलों पर शासन करता है। दुनियां की मानवता ने अपने हृदयपुष्प उसके चरणों के नीचे बिछा दिये हैं। क्योंकि गांधी ने जाना है कि आदमी उस सत्य महा सागर का ही बिन्दु है।

यहाँ भ्रम में पड़ने की जरूरत नहीं है। मैं जानता हूं कि आप यह पूछने वाले है कि क्यों साहब क्या यह सब लोग मैस्मरेजम करने वाले थे? इन्होंने यह सब काम मैस्मरेजम से कर डाले थे? इसके दोनों उत्तर हो सकते हैं। आप समझते हैं कि मैस्मरेजम वह तमाशा है जिसे बाजीगर गली कूचों में दिखाकर भीख माँगते हैं तो मैं कहूंगा कि हरगिज इससे उन महापुरुषों ने कोई मदद नहीं ली। यदि आप समझते है कि आत्मशक्ति के विकाश का नाम ही इन दिनों मैस्मरेजम चल पड़ा है और इन पंक्तियों का लेखक उसे इसी अर्थ में प्रयोग कर रहा है तो मैं कहूँगा हाँ जनाब, हर एक महापुरुष ने इसी मैस्मरेजम को सीखा है। इसी के सहारे हर कार्य में सफलता पाई है। जिसने आत्मतत्व को बढ़ाया है उसने अपनी बिखरी हुई ताकतों को इकट्ठा किया है। आप भी अपना विकाश करना चाहते हैं तो आप को भी यही करना पड़ेगा। सौभाग्य से कभी कभी तीतर के हाथ बटेर पड़ जाती है। आलसियों को भी गड़ा खजाना मिल जाता है पर यह अपवाद है। अमुक चरवाहे को सोने का डला जंगल में पड़ा मिल गया था उससे यह नहीं कहा जा सकता कि हर एक पशु चराने वाले को जंगल में पड़ा सोने का डला मिलता है। हाँ यह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Changing 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बात निश्चय पूर्वक कही जा सकती है कि जो दिन भर मजदूरी करेगा उसे अन्न वस्त्र के लिए सुविधाएँ मिलेंगी जो बोवेगा वह काटेगा। अपवाद इसमें भी हो सकते हैं किन्तु अपवादों को कारण कोई सुदृढ़ सिद्धान्त कट नहीं सकता।

आप मैस्मरेजम तत्व का अभ्यास करके अपनी आत्म-शक्ति बढ़ा सकते हैं। इस बढ़ी हुई शक्ति के कितने लाभ हो सकते हैं यह गिनाया नहीं जा सकता। बिजली बचाने वाला जोरदार चालू यंत्र आपके पास हो तो उससे क्या क्या काम ले सकते हैं यह गिन लेना कठिन है। इतना ही कहा जा सकता है कि जितने प्रकार की मशीनें आपके पास हों उन सब को चलाया जा सकता। इच्छानुसार इससे चाहे काम में प्रयोग कर सकते हैं। यह एक आध्यात्मिक धन है। रुपया पैसा से हम जिस प्रकार अच्छी बुरी भौतिक चीजें मोल ले सकते हैं उसी प्रकार इस आत्मिक धन का भी उपयोग हो सकता है। शरीर को बलवान किया जा सकता है मन को सशक्त बनाया जा सकता है मस्तिष्क को अनेक गुप्त प्रकार शक्तियों को बढ़ाया जा सकता है अपनी कार्य क्षमता बढ़ाई जा सकती है, गहन आत्म तत्व की खोज की जा सकती है, ईश्वर दर्शन किया जा सकता है। अनेक प्रकार की अलौकिक सिद्धियां प्राप्त की जा सकती हैं। आत्म तेज और मनोबल इतना बढ़ाया जा सकता है जिसके बल पर सब प्रकार की सफलताएँ स्वयमेव आकर्षित हो आवें। और तमाशा? तमाशा भी दिखाया जा सकता है। बाजीगरी भी की सकती है पर जो लोग इस चन्दन को चमड़ा काटने की सिल बनाने के लिए प्राप्त करना चाहते हों उनसे मैं नम्रता पूर्वक कहूंगा। महोदय, तमाशे पुर्जे से एक बढ़िया बनाये जा रहे हैं आप मनोरंजन के लिए कोई दूसरा साधन चुन लीजिए। इस सती साध्वी माता के समान पूजनीय शक्ति को वेश्या बना कर बाजार में नचाने मत लेजाइये।

यदि तुम चाहते हो कि संसार में शान्ति का अविकल्प राज्य स्थापित हो जावे तो तुम स्वयं शक्ति के मार्ग के पथिक बनो। शक्ति और प्रेम को शब्दों के साथ प्रदर्शित करो।

योग महिमा

[ले०—श्री० नारायणप्रसाद तिवारी, कान्हीवाड़ा]

—※—

योग इतना गूढ़ तथा महत्व का विषय है कि मुझ जैसे पुरुष का लेखनी उठाना ही हास्यास्पद है, किन्तु मनुष्य अपने विचारों में स्वतन्त्र है। औचित्य तथा अनौचित्य पर सम्मति प्रगट करने के लिये संसार के सामने अपने विचार रखना भी प्रत्येक सत्यासत्य-निर्णय-प्रेमी का कर्तव्य है, यही धारण हृदय में धर कर साहस पूर्वक आज उस अखंड ज्योति पर लिखने चला हूं जिस ज्योति के प्रकाश में मनुष्य सदा सुख मार्ग पर चल सकता है।

योग के आद्य प्रवर्त्तक अवढर दानी शिवजी माने गये हैं इसीसे उन्हें योगीराज अथवा योगेश्वर भी कहा जाता है। केवल योग का उपदेश शिवजी के मुँह से सुनने के कारण ही जब कि व्यास पुत्र श्री शुकदेवजी पक्षियोनि से उद्धार हो दूसरे जन्म में परम योगी बन गये तो योग साधक को सर्व सिद्धि मिलने में क्या आश्चर्य है। शिवजी ने स्वयं कहा है:—

विचिन्त्य सर्वं शास्त्राणि, विचार्य च पुनः पुनः।
इदमेकं सुनिष्पन्नं योग शास्त्रं परं मतम्॥

मैंने समस्त शास्त्रों की विवेचना कर उन शास्त्रों का पुनः पुनः विचार किया और मैं इसी निश्चय पर पहुंचा हूं कि योग शास्त्र ही सर्व श्रेष्ठ शास्त्र है।

बिना योग के मनुष्य को ज्ञान भी नहीं होता "योग हीनं कथं ज्ञानम् मोक्षदं।" श्री शिवजी ने योग की बड़ाई करते हुए पार्वतीजी से कहा है कि:—

ज्ञान निष्ठो विरक्तोऽपि धर्मज्ञोऽपि जितेन्द्रियः।
बिना योगेनदेवोऽपि न मुक्तिं लभते प्रिये॥

हे प्रिये, ज्ञान-वान, संसार विरक्त, धर्मज्ञ, जितेन्द्रिय, या कोई देवता भी योग के बिना मुक्ति नहीं पासकता।

घेरंड संहिता में कहा है:—

नास्ति माया समं पापं, नास्ति योगात्परं बलम्।
नास्ति ज्ञानात्परो बन्धुर्नाहङ्कारात्परो रिपुः॥

"माया से बढ़ कर पाप नहीं, योग से बढ़ कर बल नहीं, ज्ञान से बढ़ कर बन्धु नहीं और अहंकार से बढ़ कर शत्रु नहीं।"

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

योग शब्द की उत्पत्ति 'युज' धातु से लीजाती है और "योगश्चित वृत्ति निरोधः" चित्त की वृत्तियों को रोकने का नाम योग है, यह अर्थ किया जाता है। "सर्व चिन्ता परित्यागो निश्चिन्तो योग उच्यते" जब तक मनुष्य सब चिन्ता छोड़े रहता है तब तक उसके मन की उसी लयावस्था को योग कहते हैं—यह अर्थ भी योग शास्त्र में पाया जाता है।

योग का अर्थ ध्यान व समाधि भी है योग शब्द का अर्थ, जोतने, बोने, लगाने, मेल करने आदि अर्थों में भी हुआ है, उपनिषद् में इसका अर्थ घोड़ों को वश में करने में आया है फिर इसका अर्थ इन्द्रियों को वश में करने में हुआ।

योग ही सब से बड़ा बल है, इसी योग बल द्वारा भारतवर्ष जगद्गुरु था, ज्यों ज्यों योग बल का ह्रास हुआ त्यों-त्यों दशा दयनीय होती गई। हाँ योगमार्ग दुस्तर मार्ग अवश्य है। "क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत् कवयो वदन्ति।" किन्तु जहां कांटे हैं वहीं तो फूल होते हैं, यदि इस मार्ग में कष्ट हैं तो उतना आनन्द भी है, योग में क्या है? इसका उत्तर मैं तो यही दूँगा कि योग में क्या नहीं है?

भूत भविष्यत् ज्ञान, रोग मोचन, पूर्व जन्म का हाल जानना—दूसरे के मन की बात जानना, मेस्मेरिज्म, हिप्नोटिज़्म, आकल्ट साइंस (Occult Science) सब योग के अन्तर्गत ही तो हैं, छोटे मोटे रूप में प्रत्येक मनुष्य प्रतिदिन किसी न किसी रूप में योगाभ्यास करता है, किन्तु वह अपने में इस छिपी हुई शक्ति का भास नहीं करता, जिस प्रकार लकड़ी में अग्नि, बीज में पौधा, गुप्त रूप से विद्यमान है उसी प्रकार हम में योग विद्युत है।

हम छोटे बच्चे को गोद में लेकर थपकियें देकर सुलाते हैं और जब तक वह गाढ़ निद्रा में नहीं होता तब तक "अब सो गया, अब सो गया" बस इसी भाव पर लक्ष्य रहता है। झाड़-फूंक, मन्त्र, तन्त्र भी योग के सूक्ष्म रूप हैं। जिन रहस्यों को पाश्चात्य विद्वानों ने वैज्ञानिक आविष्कार के रूप में अब प्रगट किया है, भारत के योगियों के लिये यह क्षुद्रातिक्षुद्र बात थी, बल्कि पाश्चात्य वैज्ञानिक अभी उस तह को पहुंच भी नहीं सके हैं जो योगियों के लिये बायें हाथ का खेल था। अपने शरीर को वायु समान हलका और हाथी के समान भारी बनाना बिना यंत्र हवा में उड़ना—और कहाँ तक कहा जावे मृत्यु को भी जिन्होंने वशीभूत कर लिया था क्या ये अलौकिक चमत्कार वर्तमान युग में सभ्यता की डींग मारने वालों में हैं। साधना के अभ्यास से इन शक्तियों का आविर्भाव अब भी किया जा सकता है—एक विद्वान का कथन है।

Man is his own architect *If* yon put forth proper efforts to cultivate and put into motion the power that is latent and inborn in you the door to success is within yonr reach and it is for you to unlock it.

तात्कालिक फल दिखलाने वाली योग विद्या से बढ़ कर और कोई विद्या नहीं, मैंने स्वयं इसी योग विद्या के आधार पर योगियों को संखिया, कुचला आदि विष तक हजम करते देखा है, योगी को अष्ट सिद्धि प्राप्त करना आसान खेल है, श्रीकृष्णचन्द्र जी ने स्वतः इस योग विद्या की बड़ाई श्रीमद्भगवद्गीता में की है जो पंचम वेद माना जाता है। यह सार्वभौमिक विद्या है और किसी जाति विशेष इस पर स्वत्वाधिकार नहीं कर सकती।

योग-बड़ाई में बहुत कुछ कहा जा सकता है। कई शास्त्र केवल इसी विषय पर ऋषि बना चुके हैं अतएव उसके महत्व में अधिक कहना सूर्य को दीपक दिखाना है।

यदि तुम्हारे अन्दर ईश्वरीय शक्ति विद्यमान है तो यह जान लीजिये कि आपके अन्दर सर्व शक्तियां भरी हुई हैं और फिर दुष्कर से दुष्कर कठिनाइयों को सहज में पार कर सकते हैं।

\+ + +

जैसे किसी नदी का पानी बहुत सी छोटी नहरों में बहने से वेगहीन होजाता है उसी तरह से तुम्हारी शक्ति भी कमजोर हो जावेगी। यदि तुम भिन्न भिन्न कामों में उसे लगाओगे। इसलिये जिस काम को करो पूर्ण योग के साथ करो। तभी उसमें सफलता दिखाई देगी।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्या मूर्ति पूजा अवैज्ञानिक है ?

[ले०—प्रो० प्रोफेसर डबल्यू० रेले, न्यूयार्क]

(खास अखण्ड ज्योति के लिए भेजे हुए अंग्रेजी लेख का अनुवाद)

इस लेख में मेरा अभिप्राय यह नहीं है कि मूर्ति पूजा करनी चाहिए या नहीं। मूर्ति पूजा को जो पुण्य या पाप जैसा कुछ समझते हैं, समझने में स्वतन्त्र हैं। जिनका मूर्ति में विश्वास हो वे उसका पूजन करें, जिनको विश्वास न हो वे न करें। दोनों में क्या ठीक है यह विवेचना करने का इस समय अवकाश नहीं है आज तो मुझे यही बताना है कि मूर्ति पूजा की विधि वैज्ञानिक है या अवैज्ञानिक ?

इस प्रश्न पर एक वैज्ञानिक की भांति परीक्षात्मक दृष्टि से विचार करने पर मुझे ऐसा प्रतीत होता है किसी चतुर पदार्थ विज्ञानवेत्ता ने स्वास्थ्य, प्रकृति, पदार्थ शब्द और विद्युत शास्त्र की पूरी जानकारी के साथ मूर्ति पूजा का सारा विधान ऐसे उपयुक्त ढंग से निर्माण किया है जो आदमी की शारीरिक और मानसिक उन्नति के लिए लाभप्रद हो सके।

मैं स्वयं ईसाई धर्मानुयायी होने कारण मूर्ति पूजा के सारे विधान को अच्छी तरह नहीं जानता। सुना है कि हिन्दुस्तान में असंख्य देवी देवता हैं और एक एक की कई कई आकृति की मूर्तियां हैं इस प्रकार हिन्दू धर्म के अन्तर्गत अनेक संप्रदाय, उप संप्रदाय है और उन सब की मत विभिन्नता का असर मूर्ति पूजा के विधान पर भी पड़ा है, इसलिए कई लोग कई तरह से पूजा करते हैं। मैं उन बारीकियों और मत भेदों से भली प्रकार परिचित नहीं हूं इसलिए गहराई में न जाकर उन मोटी मोटी बातों पर प्रकाश डालूँगा जो प्राय: सब प्रकार की पूजा में काम आती है।

शंख ध्वनि और घंटा घड़ियाल पूजा का प्रधान अंग है। शंकर, विष्णु गणेश, देवी, गुड़च (gurbach से प्रोफेसर साहब का मतलब किस देवता से है यह हम नहीं समझ सके। संपा०) आदि किसी देवता की पूजा शंख और घड़ियाल बजाये बिना नहीं होती। सन १९२८ में बर्लिन यूनीवर्सिटी ने शख ध्वनि का अनुसंधान कर के यह सिद्ध किया था कि शंख ध्वनि की शब्द लहरें बेक्टीरिया नामक संक्रामक रोग कीटों को मारने में उत्तम और सस्ती औषधि है। प्रति सैकिण्ड २७ घन फीट वायु शक्ति के जोर से बजाया हुआ शंख १२०० फीट दूरी तक के बेक्टेरिया जन्तुओं को मार डालता है और २६०० फीट तक के जन्तु इस ध्वनि के कारण मूर्छित हो जाते हैं। बेक्टोरिया के अतिरिक्त हैजा, गर्दन तोड़ बुखार, कँपकुंपी के कीड़े भी कुछ दूरी तक मरते हैं, ध्वनि विस्तारक स्थान के आस पास का स्थान तो निसंदेह निर्जन्तु हो जाता है। मृगी, मूर्छा, कंठमाला और कोढ़ के रोगियों के अन्दर शंख ध्वनि की जो प्रति क्रिया होती है वह रोगनाशक कही जा सकती है। शिकागो मेयो अस्पताल के ख्याति नामा डाक्टर डी० ब्राइन ने तेरह बहरे लोगों की श्रवण शक्ति को शंख ध्वनि की लहर से सचेत किया था।

घड़ियाल का घंटा भी शंख से कुछ ही नीची श्रेणी का है। किन्हीं किन्हीं स्थानों पर तो उसकी उपयोगिता शंख से भी अधिक है। घड़ियाल अकसर पीतल और काँसे के मिश्रण से बनी हुई होती है। इस पर चोट लगाने से एक प्रकार के कम्पन लिये हुए लहरें पैदा होती हैं, ये लहरें अद्भुत शक्ति सम्पन्न होती हैं। विद्युत मापक यन्त्र का परीक्षण अब यह साबित कर चुका है कि उनमें तेरह से लेकर सैंतीस घंटे तक की ताकत होती है। जिसमें ध्वनि प्रवाह लहर न निकल सके किसी ऐसे बन्द मकान के अन्दर यदि नौ मिनट तक घड़ियाल बजाई जाय तो निस्संदेह कोई दीवार फट जायगी। यह शब्द प्रवाह स्नायु रोगों के लिये बड़ा लाभ प्रद होता है। कांसे के बर्तन के ध्वनि-कम्पन विष नाशक और उत्तेजना दायक होते हैं। अफ्रीका निवासी और हिन्दू लोग कांसे का बर्तन बजा कर जहरीले सांप के काटे हुए रोगी को अच्छा करने की क्रिया प्राचीन काल से जानते चले आ रहे हैं। मास्को के सेनेटोरियम में कांसे की शब्द ध्वनि से तपैदिक रोग के बीमारों को स्वस्थ करने के सफल प्रयोग हो रहे हैं। निद्रित और अवसादित ज्ञान तन्तुओं को घड़ियाल एक स्फूर्ति प्रदान करती है। आप में से अनेक बर्मिंघम के सन् १९१६ वाले उस मुकद्दमे से परिचित होंगे जिसमें एक नास्तिक ने पड़ोस के गिर्जाघर में बजने वाले घंटे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Changing 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वास्थ—हानि होने का दावा अदालत में किया गया था। मुद्दई का कहना था कि घंटा ध्वनि से हमें शारीरिक क्षति पहुँचती है। अदालत ने तीन प्रमुख वैज्ञानिकों का एक बोर्ड कायम किया जो घंटा शब्द की द्वारा होने वाले असर की जाँच करे। बहुमूल्य यंत्रों द्वारा यह परीक्षण सात महीने होता रहा अन्त में वैज्ञानिक बोर्ड ने यही घोषित किया कि घंटा नाद से हानि तो दूर उल्टा लाभ होता है। कई शारीरिक कष्ट कटते हैं और मानसिक उत्कर्ष होता है। घंटा नाद के कम्पन मानसिक गति विधि की दिशा एक ही ओर करके एक प्रकार की तन्द्रा और शान्ति प्रदान करते हैं। इस दृष्टि से पूजा की घंटा ध्वनि अनुपयोगी नहीं ठहराई जा सकती।

घृत और कपूर के दीपक, अगर या धूप की बत्ती, जलाना एवं हवन आदि की क्रिया वायु शोधन के बहुत ही उपयोगी है, गंदे घरों की सफाई के लिए कपूर गंधक आदि का तीक्ष्ण धुआं भरना एक वैज्ञानिक प्रणाली है। पौष्टिक और सुगंधित वस्तुओं को जलाना तो दुहरा काम करता है। वायु की गरमी और विषैलेपन को जलाने के साथ साथ आक्सिजन वायु में रहने वाले सूक्ष्म तत्व ओजोन का भी सम्मिश्रण करता है जो रक्त शुद्धि के लिये बहुत ही फायदे मन्द हैं और मस्तिष्क को ठंडक प्रदान करती है।

एक बात और भी मैंने सुनी है, वह यह कि पूजा में सब बर्तन तांबे के होते हैं और हिन्दू उन्हें इतना पवित्र मानते हैं कि कोई उनसे मुंह लगा कर पानी नहीं पीता। शुरू में जब मुझे यह मालूम हुआ था कि तांबे के बर्तन का प्रयोग इतनी अधिकता से होता है तब मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ था क्यों कि यह मानी हुई बात है कि तांबे का मिश्रण पानी को विषैला बनाता है। उसकी सूक्ष्म मात्रा तो लाभप्रद है परन्तु कुछ भी अधिकता होना बुरा है। खटाई नमक या मुँह का थूक तांबे से मिल कर फौरन उसका अधिक भाग खुरच लेते हैं। यही कारण है कि तांबे के बर्तन में कोई मनुष्य साग, दाल, चटनी या शोरबा रखकर न खावेगा। जिन गिलासों से मुँह की लार लगती है उनकी धातु स्वतः ही अधिक मात्रा में छूट आती है जब मेरे एक मित्र ने यह बताया कि हिन्दू लोग अपनी धार्मिक भावना के अनुसार तांबे के बर्तनों में रख कर कुछ भी नहीं खाते पीते मुँह लगा कर जूठा नहीं करते। तांबे के बर्तनों की पूजा में इतना ही प्रयोग होता है कि उनमें भरा हुआ जल रक्खा रहे और उसे अलग से इस प्रकार चरणोदक आदि के रूप में पिया जाय जिसमें मुँह उस पात्र से न लगे, तब मुझे सन्तोष हुआ और समझा कि प्राचीन भारतीय तत्व वेत्ता जो विष में से अमृत निकालने के लिये प्रसिद्ध थे इस मौके पर भी चूके नहीं हैं। उन्होंने तांबे का पात्र का पूजा में इस चतुराई के साथ समन्वय करके निश्चय ही अपनी सुदृढ़ वैज्ञानिकता का परिचय दिया है।

(शेष अगले अंक में)

सूचना

इस लेख के विद्वान लेखर प्रोफेसर पी० डबल्यू रेले हैं परन्तु प्रेस की गलती से "प्रो० पीफेसर डबल्यू रेजे छप गया है पाठक इस गलती को सुधार कर पढ़ें।

\+ × ÷

डर, ओस बिन्दु के समान है जो सूर्य्य की गर्मी तथा हवा से विलीन हो जाती है। इसी तरह से जब किसी पूर्ण रूप से सत्य की ओर झुक जाती है तो उसका डर रूप ओस बिन्दु वहीं विलीन हो जाती है और उसके स्थान पर शान्ति विराजती है।

× × +

डर मनुष्य के हृदय में तभी पदार्पण करता है जब कि वह अपने को अकेला तथा असहाय अनुभव करता है या जब तक वह ईश्वर को सर्व व्यापक नहीं मानता। उसके ऊपर वही असर पड़ता जैसा एक असहाय मनुष्य पर पड़ता है। यदि उसे यह भान हो जावै कि ईश्वर सबका सहायक है तो उसका भय तुरन्त दूर हो सकता है।

× × +

यदि तुम अपने काम में सफलता चाहते हो या वैभव चाहते हो या अपना स्वास्थ्य अच्छा करना चाहते हो तो अपना विश्वास ईश्वर में रक्खो। वही तुम्हारे सब कामों का पथ प्रदर्शक हो सकता है।

÷ + ×

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मरने के बाद हमारा क्या होता है ?

[ले०—श्री० प्रबोधचन्द्र गौतम; साहित्य रत्न, कुर्ग]

अपघात, आत्म-हत्या, दुर्घटना या किसी के द्वारा वध किये जाने पर जीव और शरीर का अकस्मात सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है। यह आघात जीव को उद्विग्न कर देता है। स्वाभाविक मृत्यु छोटी मोटी बीमारी के कारण होती है। बीमारी के कारण धीरे-धीरे सूक्ष्म शरीर और स्थूल शरीर का सम्बन्ध विच्छेद होने की क्रिया आरम्भ हो जाती है और कुछ दिनों में यह विच्छेद क्रिया पक जाती है। पक जाने पर कार्य सुगम हो जाता है। पक जाने पर फूल या फल स्वयमेव बिना किसी कठिनाई के टूट पड़ते हैं लेकिन यदि उन्हें कच्ची दशा में ही तोड़ा जाय तो टूटने की क्रिया कष्ट प्रद होती है। दीमक ने जिस पौदे की जड़ खोखली कर दी है वह आसानी से एक ही झटके में उखड़ जाता है किन्तु हरा भरा पौदा उखाड़ने में काफी बल प्रयोग होता है और उखड़ते समय जड़ें बड़े कष्ट के साथ टूटती हैं और वे खिंचते खिंचते जमीन में से मिट्टी आदि चीजों को साथ खींच ले जाती हैं। दुर्घटना पूर्ण आकस्मिक मृत्यु हरेभरे पौदे के बलपूर्वक उखड़ने के समान है। जिस प्रकार उस पौदे की जड़ें मिट्टी को भी अपने साथ उखाड़ लाती हैं उसी प्रकार आकस्मिक मृत्यु से मरा हुआ जीव शरीर में से उन भौतिक चीजों को भी साथ ले जाता है जिनकी स्वाभाविक मृत्यु में आवश्यकता नहीं होती।

साधारण मृत्यु से पूर्व जो रोग आरम्भ होता है वह शरीर और मन को पीड़ित करके एक प्रकार की मूर्च्छा में ले आता है। कई लोग मरने से पूर्व तक सावधानी के साथ बातचीत करते रहते हैं पर इससे यह न समझना चाहिए कि उनकी संज्ञा स्वस्थ अवस्था जैसी ही है। पीड़ा की कमी और मनोबल बढ़ा होने के कारण ही उनकी बातें अधिक विक्षिप्त नहीं होतीं। थोड़ा-सा फर्क तो तब भी आजाता है। किन्तु बीमारी की दशा में या मृत्यु से पूर्व जितनी असावधानी होने की आशा की जाती है उससे कम होने पर लोग आश्चर्य करते हैं। और मृत्यु के उपरान्त तो उस साधारण सावधानी का धुँधला चित्र लोगों की आँखों में रह जाता है एवं थोड़ी असावधानी याद न रह कर यही स्मरण रह जाता है कि अमुक सज्जन मृत्यु से पूर्व सावधानी पूर्वक बातचीत करते रहे थे या बोलते चालते मरे थे। परन्तु असल में ऐसी बात नहीं होती। मृतक की अपनी स्थिति बदल जाती है। इसका थोड़ा सा अनुभव आपको कई बार हुआ होगा। आप को कभी न कभी तेज बुखार जरूर आया होगा उस समय की अपनी मनोदशा का स्मरण कीजिए। बुखार की तेजी होते हुए भी आपने कुटुम्बियों से बात-चीत की होगी, उनके प्रश्नों का उत्तर दिया होगा। नौकरों को जरूरी काम काज बताया होगा, किसी को सलाह मसवरा भी दिया होगा। बाहरी दृष्टि से देखा जाय तो आप स्वस्थ मालूम होते हैं क्यों कि सारी बात चीत ठीक तौर से और बुद्धि पूर्वक कर रहे हैं परन्तु सूक्ष्म दृष्टि से ऐसा प्रतीत नहीं होगा। बुखार की दशा में अपना मन भारी और उथल पुथल सा होजाता है। अपनी स्थिति ऐसी मालूम पड़ती है मानो हमारा शरीर जड़ पदार्थ के समान और कुछ हलका होकर ऊपर उड़ता रहा है। दूसरे लोगों से जैसा राग द्वेष स्वस्थ अवस्था में होता है वैसा बीमारी की दशा में नहीं होता। जब ज्वर का तीव्र प्रवाह होता है तो प्रेमिका को गले लगाने की तीव्र इच्छा नहीं होती दुश्मन सामने आजाय तो उतना क्रोध नहीं आता। नौकरों पर हुकूमत जताने को मन नहीं होता। यह साधारण ज्वर की मनोदशा के चित्र हैं। जिस बीमारी ने सूक्ष्म और स्थूल शरीरों के बंधनों को तोड़ डाला है उस बीमारी की दशा में तो मन और भी बदल जाता है। यही मन-परिवर्तन एक प्रकार की मूर्छा है जिसमें मृत्यु कष्ट की भयंकरता कम हो जाती है। यह एक तरह का प्राकृतिक क्लोरोफार्म है जिसके द्वारा आपरेशन का कष्ट पूरी तरह अनुभव नहीं हो पाता। मृत्यु के समय की बेहोशी ईश्वर ने इस लिए बनाई है कि जीव को मृत्यु कष्ट की भयंकर यातना न भोगनी पड़े।

अपमृत्यु में उस क्लोरो फार्म का अभाव ही नहीं होता वरन चीरने का चाकू कुंद और डाक्टर अनाड़ी भी होता है। मोटर की टक्कर लगी खोपड़ी टूट कर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अलग गिर पड़ी, अस्पताल पहुंचाये गये। एक घंटे के अंदर अंदर मर गये। निमोनियां की बेहोशी के बाद की मृत्यु और इस मृत्यु के कष्ट में क्या कुछ अंतर नहीं होगा? इस एक घंटे में शरीर का अणु अणु तड़फड़ाता रहेगा और उस बेहोशी में अंग प्रत्यंग मूर्छित पड़े रहेंगे। ऐसा आकस्मिक आघात लगते ही असह्य पीड़ा होती है और जीव एक दम छटपटा जाता है। इस दुर्घटना पीड़ित मनुष्य की जब मृत्यु घोषित करदी जाती है वास्तव में वह तब भी मरता नहीं। एक कत्ल किये हुए पशु और एक स्वयमेव मरे हुए पशु का मांस लीजिए, परीक्षा कीजिये तो दोनों में बड़ा अन्तर मिलेगा। एक का प्राण बिलकुल निकल गया है इस लिए मांस खराब हो गया, इसके विपरीत कत्ल किये हुए पशु का मांस खाने योग्य बना हुआ है। गोश्तखोर, पशु पक्षियों को मार मार कर खाते हैं पर यदि मरे हुए का मांस दिया जाय तो घृणा प्रकट करेंगे। कारण यही है कि कत्ल किए हुए प्राणी का जीव अधिकांश में स्थूल शरीर से चिपका रहता है। इस प्रकार दुर्घटना पीड़ित जीव बहुत समय तक अधमरा पड़ा रहता है। कई डाक्टरों की शोध है कि आघात से मारा गया शरीर प्रायः पांच रोज से लेकर ग्यारह वे दिन तक पूरी तरह से मर पाता है।

दुर्घटना पीड़ित की जब वे स्थूल क्रियायें बन्द होगईं जिन्हें मोटे तौर से देखा जा सकता है तो उसे मृत करार दे दिया जाता है। मृत्यु की मोटी परिभाषा उन अवयवों की क्रिया बन्द होजाना है जिनके बिना क्रिया शीलता नष्ट हो जाती है। जैसे हृदय की धड़कन बन्द हो जाना। इस मृत घोषित किये हुए व्यक्ति का कुछ प्राण तो शरीर में जकड़ा रहता है और कुछ बाहर मंडराता रहता है। बाहर वाला प्राण मृत्यु का कारण तलाश करता है। जिससे मृत्यु हुई थी उस चीज का बारीकी से परीक्षण करता है, अपने पूर्व इरादों और आरंभ किए हुए कार्यों को अधूरा देखता है। अपने को संबंधियों से अलग देखता है, अचानक मृत्यु का आभास पाता है और आधे प्राणों को अर्ध मृत शरीर में वेदना में डूबा अनुभव करता है तो अचानक आघात की भयभीत अवस्था में सब प्रकार की संयुक्त पीड़ाओं के भार से दबा हुआ जीव अत्यंत उग्र रूप से छटपटाता है। इस

मरघट में

(ले० —मास्टर उमादत्त सारस्वत, कविरत्न, बिसवाँ)

गिना न महि-आकाश जिन्होंने, तृणवत सागर जाना।
अखिल-विश्व-पाताल सभी को, हस्त आमलक माना।
जल-थल-नभ में कहीं किसी से कभी न थे जो हारे।
वह आज मरघट में कैसे सोते पांव पसारे॥

वसुधा भर का वैभव जिसने दोनों हाथ समेटा।
सिवा दुग्ध सी मृदु-शैया पर, कभी न था जो लेटा॥
जिसका सुन्दर भवन देख कर सुरपुर था ललचाता।
आज वही देखो तो मरघट में है सोने जाता॥

बल-विक्रम के आगे जिनके ठहर न सकती संसृति।
जिनकी 'सिंह गरज' सुनते ही आई मुर्दों में जागृति॥
भृकुटि देख कर टेढ़ी जिनकी दिक्पति थे थर्राते।
वही आज चढ़ कर कन्धों पर हैं मरघट को जाते॥

अमित-रूप की राशि लिये जो रूपवान थे नामी।
मरते जिन पर गर्व युक्त थे देश देश के स्वामी॥
जिनके चारों तरफ लगे रहते थे हरदम मेले।
आज वही मरघट में कैसे सोते हाय! अकेले॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समय की पीड़ा और उद्विग्नता बड़ी करुणा जनक होती है।

जब उसका खंडित शरीर नष्ट कर दिया जाता है तब एक ओर से फुरसत पाकर इस बात की पूरी जाँच करता है कि मेरी मृत्यु किस प्रकार हुई। यदि किसी जीवित प्राणी द्वारा बध किया गया है तब तो उसके क्रोध का पारावार नहीं रहता और सर्प की तरह फुसकारता हुआ उसकी ओर दौड़ता है। चूँकि उसकी भौतिक सामर्थ उस समय इतनी नहीं होती कि विरोधी से तुरन्त ही इच्छित बदला ले सके इसलिए अपनी अशक्तता का अनुभव करते हुए भी अपने इरादे को नहीं छोड़ता।

चूँकि एक निश्चित नियम के अनुसार उसे इस लोक को छोड़ कर दूसरे लोक में जाना पड़ता है। वह अनिच्छा पूर्वक एक प्रकार की रस्सियों से बँधकर खिचता घसिटता हुआ जाता तो है पर मनो भावनाएँ तीव्र रूप से दूसरी ही ओर लगी रहती हैं। मृत्यु के उपरान्त विश्राम और क्रमिक विकाश के लिए जो अर्ध चेतनावस्था मिलती है उसे छोड़ कर वह बारबार जागता है और आरम्भ के दिनों में अपने पूर्व कष्ट की अनुभूति ले लेकर पूर्ववत् छटपटाता है। उस अर्ध निद्रित लोक के लोगों को यह कुहराम बड़ा खलता है। उसके निवासी अपने इस दुःखी नवागत भाई की सहायता के लिए आस पास जमा होते हैं और अपनी मौन भाषा में संतोष धारण करने एवं शान्ति से रहने का उपदेश देते हैं। उनमें जो अधिक भले और उदार हैं वे अन्य प्रकार की सहायता भी देकर उसका दुख बटाते हैं। उदारचेता पूर्व मित्र भी इस समय मदद देते हैं। समय पाकर कुछ जीव तो शान्ति और संतोष धारण कर लेते हैं और अदृश्य नियमानुसार अपनी विश्राम निद्रा में जा पड़ते हैं।

परन्तु ऐसे उग्र स्वभाव वाले जिनके मन में प्रतिशोध की प्रचंड ज्वाला जलती है आगे को नहीं बढ़ते वरन् पीछे को ही लौटते हैं। बध-स्थल पर अपने निवास स्थान या घातक की भूमि के आस पास मँडरा कर अपने रहने के लिए वे कोई स्थान चुनते हैं और वहीं बैठ रहते हैं। जैसे जैसे यह अपने पूर्व स्वरूप, स्थूल शरीर की धारणा दृढ़ करते जाते हैं वैसे ही वैसे उनका सूक्ष्म शरीर दृढ़ होता जाता है। वे अपने शत्रुओं से बदला लेने और उन्हें हानि पहुँचाने का ही चिन्तन करते रहते हैं। अशक्त हालत की दशा में अपने विरोधियों को मानसिक कष्ट पहुंचाते हैं। यहाँ कि उनका शरीर की प्रति प्रत्यक्ष शरीर तक हो है।

अक्सर देखा गया है कि हत्यारों के मन सदा उद्विग्न बने रहे हैं उन्हें दुःस्वप्न आते हैं और सोते-सोते चौंक पड़ते हैं। क्रोध और आशंका हरक्षण चित्त पर चढ़ी रहती है। इस बेचैनी में मृतात्माओं का बहुत कुछ हाथ होता है। जो मृतात्मा अधिक बलवान और प्रबुद्ध है वे अपनी शक्ति को बढ़ाने का अभ्यास भी करते रहते हैं। ऐसे प्रेत अपने प्रयत्न और स्वभाव के कारण पिशाच या वेताल हो जाते हैं। अपनी सशक्त और क्रोधोन्मत्त दशा में यह बड़े-बड़े अनर्थ करते हैं यहाँ तक कि किसी का प्राण भी ले लेते हैं। प्रसन्न होकर किसी को लाभ पहुंचा देने की भी इनमें सामर्थ्य होती है।

क्रमशः

पुस्तकालयों के लिए सहायता

श्री० रामगोपाल, वनवारीलाल, संभल जिला मुराद निवासी ने हमारे पास ५) इसलिए भेजे हैं कि जो पुस्तकालय पूरा मूल्य देकर अखण्ड ज्योति के ग्राहक बनने में असमर्थ हैं वे १॥) की बजाय १) में ही एक वर्ष तक पत्रिका प्राप्त कर सकें।

इस सहायता के अनुसार १० पुस्तकालयों को १॥) की बजाय १) में अखण्डज्योति दी जावेगी। इस सुविधा से लाभ उठाने वाले शीघ्रता करें। —सम्पादक।

जो एक दूसरे को प्रेम करते हैं या प्रेम का व्यौहार करते हैं उनके अन्दर निसन्देह प्रेम है। भक्त लोग कहते हैं कि ईश्वर प्रेम मय है इसलिए जिसने दूसरों के साथ प्रेम करना सीखलिया उसने उस महान आत्मा (परमात्मा) को प्राप्त कर लिया।

\+ + +

यदि तुम्हें किसी कार्य में कर्तव्य का ज्ञान नहीं है और तुम्हारी बुद्धि में भ्रम पैदा हो गया है तो प्राचीन महा पुरुषों के पद चिन्हों पर चलो यही। मार्ग ईश्वरीय मार्ग है। यह तुम्हें ईश्वर से मिला देगा।

\+ + +

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्राणायाम के लाभ

(ले०—पं० शिवराज शर्मा, चाँपानेरी)

प्राणायाम की महत्ता शारीरिक और मानसिक दोनों दृष्टियों से अद्भुत है। अखंडज्योति के पिछले दो अंकों में एक ख्याति नामा डाक्टर ने प्राणायाम द्वारा होने वाले लाभों को बताया है जिन लोगों ने क्रियात्मक रूप से प्राणायाम का अभ्यास किया है उन्होंने जाना है कि यह महा विज्ञान शरीर और मन को कितनी अलौकिक शक्ति प्रदान करता है। मोटे तौर से देखने में इतना ही मालूम पड़ता है कि सांस जल्दी जल्दी और गहरी लेने तथा श्वांस लेने की क्रिया में रोक थाम करने से जो कुछ होगा वह फेफड़ों तक सीमित रहेगा, हृदय पर कुछ असर पड़ेगा या रक्त संचार में कुछ परिवर्तन हो जायगा। यह कार्य साधारण व्यायाम या सासकी गति को बढाकर किया जा सकता है फिर प्राणायाम पर ही इतना जोर क्यो दिया जाता है ?

अभी भारत के वह सुदिन नहीं आये हैं जब कि यहां के विज्ञानवादी अपने प्राचीन अमृत मय तत्वों की शोध में लग जावें और उस शोध के उपयुक्त यंत्रों को उपलब्ध कर सकें या निर्माण कर सकें। जब वह सुदिन आवेगा तब निश्चय ही प्राणायामके संबंध में ऐसे आश्चर्य जनक लाभों की सिद्धि प्रमाणित की जा सकेगी जिससे वैज्ञानिक जगत में खलबली मच जाय। प्राणायाम द्वारा प्रत्यक्ष रूप से जो लाभ होते हैं उनका वैज्ञानिक दृष्टि से हम कोई निराकरण नहीं कर सकते परन्तु इतना कह सकते हैं कि इसके लाभ अपार हैं, जो चाहे आजमा कर देखलें। परीक्षा ही इसकी कसौटी हो सकती है।

अनुभवी महात्माओं का कहना है कि श्वास यंत्र फुफ्फुस तक ही वायु सीमित नहीं है वह संपूर्ण शरीर में जाती है और खोलती है। रक्त के समान ही शरीर के प्रत्येक स्थान पर वायुका भी दौरा होता है। यदि ऐसा न होता तो शरीर लोहे के समान ठोस हो जाता और वायु संबंधी कोई रोग होता तो केवल फेफड़े में ही होता गुदा द्वारा जो अपान वायु निकलती है वह कहाँ से आती है ? इसलिए प्राणायाम का लाभ केवल फेफड़ों तक ही सीमित न रह कर सारे शरीर से संबधित है। प्राणायाम की विशिष्ट वैज्ञानिक क्रिया द्वारा संपूर्ण शरीर में वायु ऐसी तीक्ष्णता पूर्वक आती जाती है कि उसके मार्ग में पड़े हुए मल और रोग जन्तु कांप जाते हैं और वे जहाँ चिपके हुए हैं वहाँ से छूट कर रक्त प्रवाह के साथ बाहर निकल जाते हैं। इस प्रकार प्राणायाम की क्रिया संपूर्ण शरीर के मलों को बाहर निकाल कर सुन्दर स्वास्थ्य प्रदान करने में समर्थ होती है।

कई आदमी जो वायु और रक्त का दौरा ठीक न होने के कारण रुग्ण और अशक्त हो जाते हैं प्राणायाम के अभ्यास से दूर होते देखे गये हैं। गठिया, अर्बुद, तिल्ली बढ़ना, शोथ, दर्द, शरीर का टूटना या भड़कना यह रोग प्राणायाम द्वारा ठीक होने योग्य हैं। मस्तिष्क के अनेक रोग इससे दूर होते हैं। जिन्हें जुकाम बना रहता है और दवाएँ करते करते थक गये हैं, आधाशीशी, मस्तक शूल, शिर का भारीपन, रहते को जिन्हें शिकायत है वे प्राणायाम की परीक्षा करके देखें, एक बार का परीक्षण उन्हें पर्याप्त विश्वास प्रदान कर सकेगा।

मस्तिष्क की शक्तियां प्राणायाम से बढ़ती है, याद दास्त की कमी, चिड़चिड़ापन, किसी बात को ठीक तरह से न सोच सकना, बुरी भावनाएँ आती रहना, थोड़ी देर में मस्तिष्क का थक जाना, इस प्रकार की बीमारियों में प्राणायाम से आशातीत लाभ होता है। ऐसा अनुभव में आया है कि दिमाग की गर्मी और कमजोरी में यह विशिष्ट श्वांस क्रिया कुछ ऐसा रासायनिक समन्वय करती है जिससे अतिरिक्त गर्मी निकल जाती है और प्राप्त होती है। प्राणायाम के बाद प्रायः मस्तिष्क शान्त और शीतल हो जाता है।

अखंड ज्योति संपादक श्री० शर्मा जी ने मुझे बताया था कि एक ऐसा व्यक्ति जिसकी स्मरण शक्ति बिलकुल नष्ट होगई थी और जिसे यह भी याद नहीं रहता था कि अभी घंटे भर पूर्व मैंने क्या किया था, प्राणायाम का अभ्यास करने पर तीन महीने में ही अच्छा होगया और उसकी स्मरण शक्ति बिलकुल अच्छी होगई। श्री० शर्मा जी ने और भी अनेक विवरण मुझे बताये थे जिनके अनुसार उन्होंने विभिन्न प्रकार के प्राणायामों का अभ्यास कराके कठिन मानसिक रोगों से ग्रसित व्यक्तियों को अच्छा किया था।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आत्म चिन्तन करने वाले और अध्यात्म पथ पर अग्रसर होने वालों के लिए तो प्राणायाम मानो राजमार्ग ही है। चित्त का निग्रह मन का निरोध तो प्राणायाम बिना होना कठिन है। षट् चक्रों का बेधन और कुण्डलिनी जागरण का आरंभ प्राणायाम सिद्धि के बाद होता है। धारणा और ध्यान की भी स्थिति का ठीक प्रकार से होना भी इसी साधन की सहायता पर अवलंबित होता है।

योग शास्त्र के आचार्यों ने योग साधना के आठ अंगों में प्राणायाम को चौथा स्थान देकर इसकी उपयोगिता का सम्मान किया है। आज जो बाबू लोग इस महाक्रिया को 'फेफड़ों की छोटी सी कसरत' कह कर उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं उनके लिए अभी वैज्ञानिक यन्त्रों द्वारा प्रमाणित उत्तर हमारे पास नहीं है परन्तु फिर भी पारस, पारस ही रहेगा जिसका जी आवे अपने लोहे को उससे छूकर देख ले। प्रत्यक्ष के लिए और प्रमाण क्या चाहिए।

मन अन्न मय है। जैसा हम भोजन खायेंगे वैसा ही अपने मन को बनालेंगे। इसी लिये भोजन के विषय में बहुत सावधान रहना चाहिये।

\+ + +

आंखों से न देखने के कारण यह न कहो कि ईश्वर नहीं है। वह हर समय तुम्हारे पास है ईश्वर के वही काम हैं जो तुम्हें वैभव की ओर ले जा कर आनंदित कर देते हैं और तुम्हारी प्रत्येक ग्रंथि सुलझ जाती हैं। तुम उस ईश्वर को अपने साथ अनुभव करने लगोगे तो फिर किसी पाप में नहीं लग सकते और उसी के सहारे काम करते करते अपने अमरता को प्राप्त कर लोगे।

× × ×

स्वप्नों को कोरा दिमागी काम न समझो येतुम्हारे अच्छे या बुरे विचारों के सूचक हैं इनमें तुम्हारा भविष्य भरा हुआ है।

\+ + +

हम मौनावस्था में रहते हुए विचारों का मनन किया करते करते हैं और अच्छे बुरे की पहचान भी होती रहती है क्योंकि जब बाहर से विचारों का आगमन बन्द हो जाता है।

शिथिलासन

(ले०—श्री जगन्नाथ प्रसाद शर्मा, नरायना)

—❁❁—

राज योग और हठ योग से संबंधित सैकड़ों प्रकार के आसन आजकल प्रचलित हैं। इनका अभ्यास करने और सिद्धि प्राप्त करने में काफी समय भी लग जाता है तब इनका लाभ प्रतीत होता है। कोई आसान किसी प्रकार की प्रकृति के व्यक्ति के लिए अनुपयुक्त भी हो सकता है और यदि ऐसे ही अनुपयुक्त आसन का चुनाव किसी ने अपने लिए कर लिया है तो वह हानिकार ही होगा। शीर्षासन करके मस्तिष्क सम्बन्धी रोग मोल ले लेने वाले कई व्यक्ति देखे गये हैं। मेरा तात्पर्य यहां किसी आसन के मूल सिद्धान्त का विरोध करना नहीं है। वे सभी अपने अद्भुत गुण रखते हैं परन्तु उनका लाभ उसी दशा में होता है, जब अपनी प्रकृति और आसन के गुण दोष का विचार करते हुए आसन का चुनाव किया जाय।

मैं यहाँ एक अनुभूत और प्रत्यक्ष फल दायक आसन का उल्लेख करता हूं पाठक इसका उपयोग करके लाभ उठा सकते हैं।

शिथिलासन का अर्थ है जिसमें आदमी शिथिल हो जाय वह आसन। मन और शरीर को पूरी तरह से शिथिल कर देने पर शरीर को अपूर्व शान्ति मिलती है। जितना विश्राम कई घंटे की नींद में नहीं मिलता उतना कुछ मिनट के शिथिलासन में मिल जाता है। राबर्ट क्लाइव और नेपोलियन बोनापार्ट के संबंध में यह प्रसिद्ध है कि वे युद्ध क्षेत्र में बिना सोये हफ्तों बिता देते थे। आश्चर्य होता है कि इस प्रकार के व्यक्ति किस प्रकार अपने जीवन क्रम चला सकने में समर्थ होते हैं और स्वस्थ बने रहते हैं? उपरोक्त दोनों उदाहरणों के प्रत्यक्ष दर्शी साथियों ने अपनी पुस्तकों में इस विषय पर कुछ प्रकाश डाला है। नेपोलियन के एक मित्र का कहना है कि युद्ध के कार्य में दिन रात व्यस्त रहते हुए भी नेपोलियन घोड़े की पीठ पर ही कुछ मिनट सो लेता था। एक अंग्रेज इतिहास कार का कहना है कि राबर्ट क्लाइव मार्च करते हुए घुड़ सवारी को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बन्दूकों का सहारा लेकर चलते चलते अपनी नींद पूरी कर लेता था। अकबर के बारे में कहा जाता है कि वह केवल तीन घंटे सोता था। कई योगी महात्मा बहुत दिनों तक बिना सोये अपना काम चलाते देखे जाते हैं। इन सब निद्राजितों को किसी न किसी प्रकार शिथिलासन का ही सहारा लेना पड़ता है।

आप एक आराम कुर्सी पर हाथ पैर पसार कर लेट जाइये। शरीर के सब अंग स्वेच्छा पूर्वक इस प्रकार रखे गये हों कि किसी पर कुछ दबाव न पड़ रहा हो और उसी तरह अधिक देर रखे रहने पर कोई कष्ट न हो। इस कार्य के लिए मन्द प्रकाश का स्थान ठीक रहता है तेज प्रकाश, चित्त पर कुछ ऐसा प्रभाव डालता है कि मन को ठीक प्रकार स्थिर नहीं होने देता। कमरे के दरवाजे बन्द कर के मन्द प्रकाश किया जा सकता है। रात हो तो बत्ती को धुंधली कर देना चाहिए अब ऐसी भावना करनी चाहिए कि "मैं अपने शरीर और मन को बिलकुल शिथिल कर रहा हूं। संपूर्ण अंग निश्चेष्ट हुए जारहे हैं। शरीर निर्जीव हो गया है। मन की सारी चिन्ता और शंकायें शान्त हो गई हैं। मैं एक अनन्त नील सागर के ऊपर पड़े आनन्द पूर्वक तैर रहा हूं और चारों ओर व्याप्त शान्ति दायी नीली किरणों को अपने में स्वयमेव प्रवेश करता हुई देख कर पूर्ण विश्राम और संतोष उपलब्ध कर रहा हूं" इस भावना को दृढ़ता पूर्वक करना चाहिए और साथ ही यह भी अनुभव करते जाना चाहिए कि भावना के अनुरूप शरीर और मन बिलकुल शिथिल होगये हैं।

यह अभ्यास नित्य आध घंटे जारी रखा जा सकता है। एक दो सप्ताह के प्रयत्न से ही शिथिलासन सिद्ध हो जाता है। आरंभ के दिनों में शरीर पूरी तरह ढीला नहीं होता सूक्ष्म रूप से परीक्षण करने पर कुछ कुछ कड़ा पन रहता है। किन्तु कुछ दिनों के बाद शिथिलता में सफलता मिल जाती है। उस समय शरीर इतना ढीला हो जाता है कि जो अंग किसी के सहारे नहीं रखे हैं वे इधर उधर को लुढ़क पड़ते हैं। हाथ और सिर उसी प्रकार नीचे गिरने लगते हैं जैसे सोते हुए आदमी के। यह दशा जाग्रत निद्रा है, योगियों की भाषा में इसे अमृत तंद्रा या शिथिलासन कहा जाता है। काम काजी लोगों के लिए आध काफी है। इससे अधिक काल का जिन्हें अभ्यास होने लगे समझना चाहिए कि अब इसकी गति समाधि की ओर होगई है। कई गुरु समाधि का आरंभ शिथिलासन से ही कराते हैं।

गहन योग विषय की बात छोड़िये। साधारण काम काजी लोगों के लिए यह आसन कई दृष्टियों से लाभ दायक है। आध घंटे की साधना में इतनी थकान उतर जाती है जितनी चार घंटे की गहरी नींद में उतरती है। इससे नवीन चेतना और स्फूर्ति मिलती है एवं शरीर सतेज होकर फिर से कठिन कार्यों को करने योग्य हो जाता है। जब आपका शरीर काम काज से थक गया हो, देह टूट रही हो मन हार गया हो, दिमाग ठीक काम न करता हो तो थोड़ी देर शिथिलासन में पड़ जाइये आप देखेंगे कि सारा श्रम चला गया है और नवीन चेतना प्राप्त हो गई है। इसका नित्य का अभ्यास, एक पौष्टिक भोजन की तरह बल दायक सिद्ध होता है। जिन्हें आराम कुर्सी न मिल सके वे मसनद के सहारे या अन्य किसी आराम देने वाले उपकरण के सहारे अभ्यास कर सकते हैं। पर यह उपकरण कोमल और सुख कर होना चाहिए।

मन के भीतर जितने विचार रह जाते हैं उन्हीं की उधेड़ बुन शुरू हो जाती है—और हम मौन द्वारा बहुत कुछ ज्ञान तथा भला बुरा पहचान लेते हैं। इस लिये मौन रखना एक अच्छा गुण है।

× + ×

विष को खाकर कोई नहीं परखता उसे तो दूसरों के कथनानुसार ही मान लेते हैं कि इसमें मारक गुण विद्यमान है। इसी तरह अमृत मय वचनों को मानने में आनाकानी न करो। क्योंकि इनको हजारों पुरुषों ने अपनाया है और आत्मोन्नति की है।

\+ + +

आत्मिक सुन्दरता ही सच्ची सुन्दरता है यदि यह सुन्दरता नहीं है तो बाहरी सुन्दरता किस काम की। जो काम यह सुन्दरता कर सकती है वह शारीरिक सुन्दरता नहीं कर सकती। असली सुन्दरता तो आत्मिक सुन्दरता ही है जिसे प्राप्त करना प्रत्येक का ध्येय होना चाहिये।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तंत्र विद्या का अधिकारी कौन

(ले०—आचार्य आषुतोष मुखोपाध्याय, सिंहभूमि)

तंत्र विद्या और वाममार्ग आज मोटेतौर से समाज में बदनाम हो गये हों। लोग समझते हैं कि वाम मार्ग मद्य, माँस और मैथुन प्रधान आसुरी साधन है। तंत्र विद्या के बारे में मोटी कल्पना है कि इस के जानकार मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण द्वारा अपना स्वार्थ साधन और दूसरों का नुकसान करते हैं। पर यह धारणा सर्वथा अज्ञानमूलक है। भगवान शंकर कहते हैं—"वैदिक स्तान्त्रिको मिश्र इति मे त्रिविधो मखः।" अर्थात् वैदिक, तान्त्रिक और दोनों से मिला हुआ तीन प्रकार का मेरा यज्ञ है। वैदिक साहित्य का सूक्ष्म अध्ययन करने पर यही विदित होता है कि वैदिक और तान्त्रिक सिद्धान्तों में कोई मतभेद नहीं वरन दोनों ही एक दूसरे से मिले हुए हैं। वेदोक्त योग शास्त्र और तंत्र योग में बाह्य उपकरणों का ही भेद है, सैद्धान्तिक भेद नहीं। इसलिए तन्त्र विद्या को भयंकर समझना निरर्थक है।

कामी, लम्पट और स्वार्थी तन्त्र विद्या के अधिकारी नहीं है। उन्हें इसमें प्रवेश करने की आज्ञा नहीं है। जब ऐसे लोगों को यह विद्या प्राप्त ही न हो सकेगी तो उसका दुरुपयोग कैसे करेंगे? तन्त्र विद्या का दुरुपयोग ही भयंकर है। सदुपयोग से तो लोक परलोक का लाभ ही हो सकता है। सुई कपड़े सीने के लिए है यदि कोई अनधिकारी उससे आँखें फोड़ने का काम लेने लगे तो इसमें सुई को दोष देना ठीक न होगा। बन्दूक डाकुओं के हाथ में पड़ कर घातक बनती है सिपाही तो उसके द्वारा रक्षा ही करेगा। शास्त्रों ने तन्त्र विद्या को सीखने और सिखाने का अधिकारी केवल सदाचारी और लोक सेवी पुरुषों को ही बताया है।

तन्त्र शास्त्र के दो मार्ग हैं एक वाम मार्ग दूसरा दक्षिण मार्ग। आजकल खास तौर से वाम मार्ग को ही तन्त्र माना जाता है। इस वाम मार्ग के अधिकार के बारे में स्पष्ट कर दिया गया है कि।

परद्रव्येषु योऽधस्त्रः परस्त्रीषु नपुंसकः।
तस्यैव ब्राह्मणस्यात्र वामे स्यादधिकारिता॥

—मेरु तंत्र

अर्थात्—पराया धन, पराई स्त्री और पराये अपवाद से दूर रहने वाला जितेन्द्रिय ब्राह्मण ही वाम मार्ग का अधिकारी होता है।

अयं सर्वोत्तमो धर्मः शिवोक्तः सर्व सिद्धिदः।
जितेन्द्रिय स्य सुलभो नान्यस्यानन्त जन्मभिः॥

—पुरश्चर्यार्णव

अर्थात्—इस शिवजी के कहे हुए सर्वोत्तम और सब सिद्धियाँ देने वाले धर्म (वाम मार्ग) को इन्द्रिय जीतने वाले योगी के लिए ही सुलभ है। अनेक जन्मों में भी लोलुप लोगों के लिए यह सुलभ नहीं होता।

तन्त्राणामतिगूढत्वात्तद्भावोऽप्यति गोपितः।
ब्राह्मणो वेद शास्त्रार्थतत्त्वज्ञो बुद्धिमान् वशी॥
गूढ़ तन्त्रार्थ भावस्य निर्मथ्योद्धरणे क्षमः।
वाम मार्गेऽधिकारीस्यादितरो दुःख भाग् भवेत्॥

—भावचूडामणि

अर्थात्—तन्त्रों के अतिगूढ़ होने के कारण उनका भाव भी अत्यन्त गुप्त है। इसलिए वेद शास्त्रों के अर्थ तत्व को जानने वाला जो बुद्धिमान और जितेन्द्रिय पुरुष गूढ़ तन्त्रार्थ के भाव का मंथन करके उद्धार करने में समर्थ हो वही वाम मार्ग का अधिकारी हो सकता है। उसके सिवा दूसरा दुःख का ही भागी होता है।

कुछ लोग वाम मार्ग का गलत अर्थ करते हैं। वाम अर्थात् टेढ़ा उल्टा। वाम मार्ग अर्थात् टेढ़ा उल्टा मार्ग। यह ठीक नहीं। निरुक्त में वाम का अर्थ—सूचक शब्द प्रशस्य है। प्रशस्य का भावार्थ प्रज्ञावान् होता है। दुर्गाचार्य कहते हैं "य एव हि प्रज्ञावन्तस्य एव हि प्रशस्या भवन्ति।" इससे विदित है कि प्रज्ञावान योगी हुआ 'वाम'। और उस योगी का जो मार्ग वह 'वाम मार्ग।'

भगवान् शङ्कर ने स्पष्ट कर दिया है कि "वामो मार्गः परम गहनो योगिनामप्यगम्यः।" अर्थात् वाम मार्ग अति कठिन है और योगियों के लिए भी अगम्य है। फिर क्या ऐसी गुह्य विद्या को दुराचारी और लम्पट प्राप्त कर सकते हैं? यदि कोई अनधिकारी इसे प्राप्त करके पाप कर्म करता है तो उसके लिए भगवान् शिव का शाप है कि "लोलुपो नरकं व्रजेत्" अर्थात् लोलुप वाम मार्गी नरक में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तपस्वी कौन है ?

(ले०—श्री० तुलसीराम शर्मा, हाथरस)

येपापानि नकुर्वन्ति मनोवाक् कर्म बुद्धिभिः।
तेतपन्ति महात्मानो न शरीरस्य शोषणम् ॥११॥

(म० भा० वन० अ० २०७)

मन, वाणी और शरीर से जो पाप कर्म नहीं करते हैं वे महात्मा मानों तपस्या करते हैं शरीर का सुखाना तप नहीं मन वाणी शरीर के पाप कर्म मनुस्मृति में इस प्रकार लिखे हैं—

परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसा निष्ट चिन्तनम्।
वितथाभि निवेशश्च त्रिविधं कर्म मानसम् ॥५॥

दूसरे के द्रव्य को अन्याय से लेने की इच्छा करना, मन से किसी का अनिष्ट (वध आदि) चिन्तन करना, लोक परलोक कुछ नहीं सब ढकोसला है, ऐसा मन से निश्चय करना, ये तीन प्रकार के मानसिक पाप हैं ॥५॥

पारुष्य मनृतं चैव पैशुन्यं चापि सर्वशः।
असम्बद्ध प्रलापश्चवाङ् मयं स्याच्चतुर्विधम् ॥६॥

रूखे वचन, मिथ्याभाषण, चुगल खोरी, और निष्प्रयोजन की बातें, ये वाणी के पाप हैं।

अदत्तानामुपादानं हिंसा चैवाविधानतः।
परदारोपसेवा च शारीरं त्रिविधं स्मृतम् ॥७॥

(मनु० अ० १२)

अन्याय से दूसरे का द्रव्य लेना, अविधि की हिंसा, स्त्री गमन ये तीन प्रकार के शरीर के पाप हैं ॥७॥

सारांश यह है कि मन वाणी शरीर के १० प्रकार के पाप कर्म से जो बचा है वह तपस्वी है।

एक-एक पत्ती, एक नवनीत अंकुर उसकी गाथा को गा रहा है क्या अब भी तुम्हें उसकी सत्ता में सन्देह है यदि नहीं है तो उसके नियम पर चलो और संसारिक तथा पारलौकिक सुख को भोगो जो तुम्हारे लिये उसकी देन है।

मधुर वाणी

दक्षिणे भारते इयमेकैव विविधविषयोपबृंहित संस्कृत भाषा मयी पाक्षिकी पत्रिका भारती सुप्रसिद्धपत्रिकाकारैरतिशयेन प्रशंसिता च। स... ष्वपि देशेषु सुप्रचारो स्वीयवस्तुप्रसिद्धये प्रासि... पत्रप्रकाशनेन व्यवहारिणामतीव उपकारिणी। स... लया सरस्या च सरण्या गीर्वाणवाणीप्रणयिन... अंतरंगाणि संप्रीणयंती विभ्राजते। त्वरंतां ग्राहक... प्रसिद्धपत्रप्रकटनाभिलाषिणश्च। मूल्यं प्रेषण... सहितं सपादे रूप्यकद्वयम्।

प्राप्तिस्थानम्—मधुरवाणी कार्यालय, श्रीराम... देवलेन, घ. नं. १६६८, बेलगांव

'आदर्श'

गत पांच वर्षों से विशुद्ध, सुरुचि पूर्ण ले... कवितायें, साहित्य प्रचार द्वारा राष्ट्र भाषा हिन्... की सेवा कर रहा है।

'आदर्श' की प्रत्येक कहानी मनोरंजक, हृ... ग्राही और अपनी एक ऐसी विशेषता लिये हु... होती है जो अन्यत्र नहीं पाई जाती।

यदि आप लेखक हैं:—तो सुरुचि पूर्ण, क... ताओं, लेखों के प्रकाशन द्वारा राष्ट्र भाषा हिन्दी... निधि-रक्षा में सहायक हूजिए यदि आप विशु... साहित्य के प्रेमी हैं:—तो "आदर्श" की आक... कहानियों, सुन्दर प्रतियों से अपनी इच्छा पू... कीजिए। यदि आप व्यापार करते हैं:—तो अ... वस्तुओं का "आदर्श" में विज्ञापन देकर धन क... 'आदर्श' प्रतिमास हजारों की तादाद में छप... भारतवर्ष के तमाम प्रान्तों के अलावा विदेशों में ... जनता के हाथों में पहुंचता है। वार्षिक मू... केवल २) आज ही नमूने की प्रति के लिये लिखें।

—मैनेजर "आदर्श" श्री गंगाडिपो बिल्डिंग, ...

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सनातन जैन

यह जैन समाज का क्रान्तिकारी और शास्त्रोक्त सुधार वादी मासिक पत्र है, इसमें बालविवाह, वृद्ध विवाह जैसी हानिकारक कुरीतियों को मिटाने वाले और अन्तर्जातीय तथा विधवा विवाह जैसी लाभप्रद सुप्रथाओं का प्रचार करने वाले भावुक लेख होते हैं। दस्साओं को पूजाधिकार होने, विधवाओं की दुर्दशा को दूर करने का आंदोलन सायुक्तिक और सप्रमाण इसके द्वारा किया जाता है, समाज हितैषियों को २) वार्षिक सहायता देकर इस पत्र को अवश्य मंगाना चाहिए। नमूना मुफ्त भेजा जा सकता है।

मैनेजर—सनातन जैन।

बुलन्दशहर

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्दजी की स्मृति में स्थापित-हिन्दु जाति की शुभ गौरव-पताका को मुक्त गगन में फहराने वाला! निर्भीकता पूर्वक हिन्दू हितों के लिये लड़ने वाला!! शुद्धि का एकमात्र हामी! आर्य संस्कृति का सच्चा रक्षक!!! भारतीय स्वाधीनता का पुजारी!!!

सचित्र श्रद्धानन्द मासिक

अ० भारतीय श्रद्धानन्द शुद्धि-सभा का मुख-पत्र

मूल्य २) रुपया वार्षिक।

इस पत्र का ग्राहक बनना प्रत्येक हिन्दू का कर्तव्य है। 'श्रद्धानन्द' के ग्राहक बनिये! और बनाइए!!

मिलने का पता—

मैनेजर—'श्रद्धानन्द'

श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

हिन्दी का सर्वांग सुन्दर बालोपयोगी सचित्र मासिक

'महावीर'

सम्पादक—भुवनेन्द्र 'विश्व'

१ ली जून ४० को एक शानदार हास्य-अंक प्रकाशित करेगा जिसमें:—(१) बाल-साहित्य के विद्वान लेखकों और कवियों की अनूठी रचनाएँ (२) मनोरंजन और बाल शिक्षण की सुन्दर सामग्री (३) मुर्दा-दिलों में भी हँसी और गुदगुदी पैदा करने वाले कार्टूनों की भरमार रहेगी।

इसलिए अभी तक जो ग्राहक न हुए हों उन्हें आज ही १।) रु० भेजकर महावीर का वार्षिक ग्राहक हो जाना चाहिए; अन्यथा ।=) आने में अकेला यह हास्य-अङ्क मिल सकेगा।

बहुत तादाद में अंक छप रहा है, अतः विज्ञापनदाताओं को चाहिए कि अभी से स्थान सुरक्षित करा लें। लेखकों को रचनाएँ शीघ्र ही भेजनी

---

* ॐ *

सचित्र मसिक पत्र

माथुर वैश्य-संदेश

सम्पूर्ण पाठ्य सामग्री से परिपूर्ण

कीमत केवल १) वार्षिक।

नमूना मुफ्त

मैनेजर—

'माथुर वैश्य सन्देश' कार्यालय, आगरा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तंत्र विज्ञान की अद्भुत शक्ति !

अपने कष्ट मिटाने में हमारी सेवा स्वीकार कीजिए!!

जागृत अवस्था में अद्भुत और अलौकिक चमत्कार देखिए !!!

योग महाविद्या की शक्ति अनंत और अपार है। वह मनुष्य को ईश्वर तुल्य बना सकती है। प्राचीन काल में असंख्य योगियों को अनेक सिद्धियाँ प्राप्त थीं, हमारे ऋषि मुनि त्रिकालदर्शी थे और वे अपनी दिव्य दृष्टि से संसार भर की बातें अपने स्थान पर बैठे बैठे ही जान लेते थे। मोक्ष प्राप्त करना क्या है ? आत्म शक्ति की उन्नति करते करते उसे ईश्वर तुल्य बना देना है। उसी योग महाविद्या का एक छोटा सा भौतिक अँग तन्त्र शास्त्र है। इस तन्त्र विज्ञान की साधना अष्टाँग योग जितनी कठिन नहीं है किन्तु उससे लाभ भी सीमित ही होता है। मनोनिग्रह के बाद यह दूसरी मंजिल है। इससे आत्मशक्ति बढ़ाई जाती है और उसके द्वारा दूसरों को हानि लाभ पहुंचाया जा सकता है।

प्राचीन काल में गोरखनाथ, मछीन्द्रनाथ, नागार्जुन आदि उनके आचार्य इस विज्ञान के हो चुके हैं। महाप्रभु ईसा ने आत्मशक्ति के बल से असंख्य रोगियों को स्पर्श करके और दृष्टिपात करके अच्छा कर दिया था। महात्म्य त्रिक-उड्डीश-भगवान शंकर के कोप से जब आत्मशक्ति का तीसरा नेत्र खोला तो कामदेव सरीखा बलशाली योधा क्षण भर में जलकर भस्म होगया। अन्य ऋषियों के शाप वरदान से हजारों लोगों का हित अनहित होना पुराण इतिहासों से सिद्ध है। आज उस लुप्त प्रायः महाविद्या का पूर्ण अंश प्राप्त नहीं होता। पर जितना कुछ भी प्राप्त होता है, वही हम सब के लिये बड़ी मूल्यवान् वस्तु है और उसी से बहुत कुछ लाभ उठाया जा सकता है।

'आनन्द प्रतिष्ठान' तन्त्र विद्या की उपासना का एक केन्द्र है। इसके साधक तन्त्र विज्ञान की दुरूह क्रियाएं करके जो शक्ति प्राप्त करते हैं, उसे जन हित में बाँट देते हैं। अब यह निश्चित हो चुका है कि योरोप के डाक्टर मैस्मरेजम हिप्नोटिज्म, मैगनेटिज्म, मनो विज्ञान आदि के द्वारा लोगों पर जितना असर डालते हैं तन्त्र विज्ञान द्वारा उन सब से कई गुना असर लोगों पर डाला जा सकता है क्यों कि मैस्मरेजम आदि के जो सिद्धांत हैं वह सब तो तन्त्र विद्या के भीतर हैं ही, वरन् उससे भी बहुत अधिक बातें उसमें हैं।

मैस्मरेजम आदि की शक्ति स्थूल होने के कारण केवल इतनी ही होती है कि सामने बैठे हुए आदमी पर तात्कालिक असर डाला जासके। तंत्र-विद्या इससे कहीं सूक्ष्म है। इसकी गूढ़ क्रियाओं द्वारा उत्पन्न किये सूक्ष्म कम्पन इतने शक्तिशाली होते हैं कि हजारों मील बैठे हुए आदमी पर भी उतना ही असर डालते हैं जितना पास बैठे हुए पर। उन मंत्रों का प्रभाव क्षण भर खेल दिखाकर ही समाप्त नहीं होजाता वरन् जिसके ऊपर उपचार किया जाता है उसके गुप्त मन में इतना गहरा उतर जाता है कि साधक में शारीरिक तथा मानसिक विचित्र परिवर्तन हो जाते हैं।

'आनन्द प्रतिष्ठान' ने अपना एक ऐसा कार्यक्रम बना रखा है कि कठिन साधना द्वारा प्राप्त शक्ति को पीड़ितों की सेवा में लगाया जाय और इसके बदले किसी गरीब अमीर से पाई पैसा का कोई ठहराव न किया जाय। अर्थात् लोगों के कष्टों को दूर करने का उपचार बिल्कुल मुफ्त किया जाय। लाभ होने पर बिना माँगे कोई कुछ दे दे तो संतोष पूर्वक उसी से साधक जीवन निर्वाह करें।

तन्त्र विद्या द्वारा कठिन से कठिन शारीरिक रोग, मानसिक रोग बुरी आदतें, संतान सम्बन्धी चिन्ता, गृह कलह, बुरे दिन, अनिष्ट की आशंका, भूत बाधा, अशान्ति आदि का आसानी से उपचार हो सकता है। जिन लोगों को कोई ऐसा रोग है जिससे जिन्दगी को खतरा है उनका हम उपचार करते हैं (छोटे छोटे खांसी, जुकाम आदि रोगों के लिये हमें

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नहीं लिखना चाहिए) स्मरणशक्ति की कमी, शिर में भारी पन, उद्विग्नता, चिन्ता, उदासी, निराशा, निरुत्साह, भय, हीनता की भावना, बुरे कामों की ओर प्रवृत्ति, क्रोध, बुरी आदतें, चिड़चिड़ापन, नींद की कमी आदि मानसिक रोगों के लिए तंत्रोपचार रामबाण है। कुटुम्ब, मित्र या पत्नी से झगड़ा रहता है, संतान नहीं होती, होकर मर जाती हैं या लड़कियाँ ही लड़कियां होती हैं, किसी शत्रु द्वारा अपना अनिष्ट होने की आशंका है, भूत प्रेतादि के उपद्रव होते हैं तो भी इस विद्या द्वारा आश्चर्य जनक लाभ उठाया जा सकता है। एक बात हम स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि हम मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, स्तंभन आदि पाप-पूर्ण क्रियाएं किसी के पक्ष विपक्ष में किसी दशा में नहीं करते इसके लिए कोई सज्जन लिखा पढ़ी न करें। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि तेजी मन्दी का भाव, वृद्धा, सट्टा, फ्यूचर, गड़ा धन, चोरी का माल, भविष्य, हस्तरेखा, जन्म पत्र, आदि भी हम नहीं बताते इसलिए इन कामों के लिए भी कोई महानुभाव पूछने ताछने का कष्ट न उठावें।

एक और बात भी समझ रखनी चाहिये कि हमारा उद्देश्य शारीरिक, मानसिक तथा बाहरी कष्टों से अपने भाई बहिनों को बचाने का प्रयत्न करने मात्र का है। और इसके लिए मनोविज्ञान के डाक्टरों के मत से विशुद्ध वैज्ञानिक आध्यात्मिक क्रियाओं का ही उपयोग करते हैं। किसी अन्ध विश्वास, ढोंग, भ्रमजाल के फैलाने का हमारा कोई मन्तव्य नहीं है। स्पष्ट है कि जब हम किसी से कोई ठहराव नहीं करते, फीस नहीं मांगते, रुपये नहीं ऐंठते तो क्यों किसी को धोखे में डालेंगे ? और क्यों ढोंग फैलावेंगे ?

जिन्हें इस विज्ञान पर विश्वास हो, या कम से कम जितने दिनों इस विज्ञान से लाभ उठावें उतने ही दिन तक परीक्षा के तौर पर जो विश्वास रख सकें वे निःसंकोच बन्द लिफाफे में अपना पूरा विवरण लिख भेजें, हम तुरंत ही उपचार सामग्री भेजेंगे। इसके बदले में किसी प्रकार की कीमत नहीं लेंगे। उपचार आरंभ करते समय हमें रोगी की चार चीजों की जरूरत पड़ती है। (१) रोग का कारण, वर्तमान स्थिति और रोगी का वर्तमान समय का पूरा परिचय (२) रोगी का फोटो (यह पांच वर्ष से अधिक पुराना न हो) (३) रोगी के शिखा स्थान (चोटी) के ११ बाल. (४) सफेद स्याही सेख (ब्लाटिंग पेपर) पर पटकाया हुआ रोगी के बाँए अगूँठे में से एक बूँद खून। यह चारों चीजें पास होने पर पूरी तरह उपचार आरंभ हो जाता है, फोटो तैयार न हो तो भी उपचार आरंभ हो सकता है, वह पीछे भेजा जा सकता है। यदि रोगी छोटा बालक हो या बहुत उपरोक हो तो खून से भी छुट्टी दी जा सकती है। पर सफलता में जरा देर लग जाती है।

उपचार सामग्री जो हम भेजते हैं उसमें शक्ति आकर्षण, का एक ऐसा विधान है जिससे रोगी में कुछ समय के लिए अतिरिक्त शक्ति भर जाती है, उस समय उसका दम फूलने लगता है, और कंपकपी सी आ जाती है, उस समय की हिफाजत के लिए कोई साथी होना जरूरी है। उपचार के कुछ समय बाद ही रोगी को आश्चर्य जनक चमत्कारिक दृश्य स्वप्न और जाग्रत अवस्था में दीखने लगते हैं वह सब बातें गुप्त रखने की हैं। उसे पहले से ही निश्चय कर लेना चाहिए कि उन बातों को हर किसी से न कहूंगा। जिन लोगों को कोई कष्ट नहीं है वह भी आत्मोन्नति के लिए हमारी सेवा से लाभ उठा सकते हैं।

यह पहले ही कहा जा चुका है कि किसी भी रोग के उपचार के लिए न तो कुछ फीस माँगी जाती है और न ठहराई जाती है न पीछे कोई झगड़ा किया जाता है। कुछ देने न देने में रोगी बिल्कुल स्वतन्त्र है। बहु मूल्य-राम-बाण औषधियाँ, रसायनें जड़ी बूटियाँ, साधनायंत्र, कवच, रक्षा विधान आदि सब चीजें अपने पैसे से बिल्कुल मुफ्त भेजते हैं। हाँ, डाकखर्च का भी भार उठाने में हम अभी असमर्थ हैं। इसकेलिए तो रोगी को ही व्यवस्था करनी पड़ेगी। पत्र के साथ एक आने का टिकट जरूर भेजना चाहिए अन्यथा उत्तर न दिया जा सकेगा।

विज्ञान-सम्मत तन्त्र विद्या के अपूर्व लाभों को उठाने से आप वंचित न रहिये। हमसे अपनी कुछ सेवा खोजिये तो सही, शायद ईश्वर इसी बहाने आपका कुछ भला करने की सोच रहा हो।

पत्र व्यवहार का पता—

'आनन्द प्रतिष्ठान' फ्रीगंज, आगरा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देश के अनेक गण्यमान्य विद्वानों द्वारा प्रशंसित

'मनस्वी,'

(विविध विषय विभूषित सर्वाङ्गीय मासिक पत्र)

(सम्पादक—क्षेमचन्द्र 'सुमन' साहित्य रत्न,)

क्या आप अभी तक मनस्वी के ग्राहक नहीं बने ? यदि नहीं, तो आप अवश्य भारी भूल कर रहे हैं। 'मनस्वी' ही एक मात्र ऐसा पत्र है, जो शुद्ध भारतीयता का ध्यान में रखकर देश के स्त्री, पुरुष, युवक एवं वृद्धों में मनस्विता युक्त भावों का समन्वय करके जीवन, जागृति, बल और बलिदान की भावना उत्पन्न करता है। 'मनस्वी' को एक बार मनन पूर्वक पढ़कर आप अवश्य कहेंगे। आज ही १) रु० मनीआर्डर से भेज दीजिए।

व्यवस्थापक —'मनस्वी' अमेठी राज्य सुलतानपुर (अवध)

"ज्योति,,

[डिस्ट्रिक्ट कौंसिल, बैतूल की मासिक मुख पत्रिका

सम्पादक—पं० रामाशंकर जी मिश्र वकील और प्रबन्धक सम्पादक-श्रीकृष्णलालजी शरतोदे 'हंस' हैं। वार्षिक मूल्य २) एक प्रति =)

पत्रिका का मुख्य उद्देश्य शिक्षा-प्रचार और ग्राम सुधार है। अतएव इसमें ग्राम्य और शिक्षा, वर्धा-शिक्षा-योजना, स्त्री-शिक्षा, अनिवार्य शिक्षा शारीरिक शिक्षा, स्काउटिंग, ग्राम-पञ्चायत, ग्रामोद्योग, जीवनोपयोगी कानून, स्थानीय स्वराज्य, पुस्तकालय, कृषि, गार्हस्थ्यशास्त्र और संगीत विषयक लेख ही प्रकाशित होते हैं। लेख चुनाव उत्तम होने के साथ-साथ पत्रिका की छपाई, सफाई और सभी सुन्दर है। हम शिक्षित जगत् से इसे अधिक से अधिक संख्या में अपनाने की अपील करते हैं।

मिलने का पता—

कार्यालय "ज्योति" डिस्ट्रिक्ट कौंसिल बैतूल।

धार्मिक क्रान्ति करने वाली सचित्र मासिक पत्रिका।

भक्ति

सम्पादक—ब्रह्मचारी प्रभुदत्त शास्त्री,

मंगाया करें ! इसमें मनुष्य मात्र के सुख व कल्याण साधन के लिए शिक्षाप्रद अतीव लाभकारी भक्ति, ज्ञान, वेदान्त, योग, सदाचार, धर्म सम्बन्धी तथा आध्यात्मिक उच्च कोटि के लेख होते हैं जिन के पढ़ने से मनुष्य मात्र का हृदय सांसारिक वासनाओं को त्याग कर परमार्थ की ओर झुकता है। इसमें रामकृष्ण परमहंस, स्वामी रामतीर्थ जी, स्वामी विवेकानन्द जी, आदि महापुरुषों के उपदेश एवं कबीर जी, तुलसीदास जी, मीरां जी, गुरु नानक साहब आदि महात्माओं की वाणी संग्रहीत होती है। यह पत्रिका १३ वर्ष से लगातार जनता की सेवा कर रही है। इसका उद्देश्य केवल सच्ची शिक्षा द्वारा सर्व साधारण का हित करना है। इस पत्रिका का वार्षिक चन्दा केवल २) है =)। के टिकट भेजकर आज ही नमूना मंगाकर देखें। पता—भक्ति कार्यालय, भगवद्भक्त आश्रम, रेवाड़ी (पंजाब)

सर्वांग सुन्दर सचित्र आयुर्वेदिक पाक्षिक पत्र

राकेश

जिसकी विशाल ग्राहक संख्या और प्रचार सम्पन्न वैद्यक पत्रों से विशेष एवं सम्पादन कला से परिपूर्ण जिसका प्रत्येक अङ्क वैद्योपयोगी सामिग्री से लब लब भरा रहता है।

अवश्य ही देखिये, वार्षिक मूल्य केवल ३)

जिसमें १॥) रु० का विशेषांक मुफ्त भेंट

इसके सिवाय प्रत्येक पाक्षिक अंक में वर्ष भर—

१ शतशः परीक्षित प्रयोग २—पाण्डित्यपूर्ण कवितायें ३—सुन्दर अनेक चित्र ४—उत्तमोत्तम मौलिक लेख ५—अनेक दुःसाध्य रोगों पर खोजपूर्ण विवेचन और अनुभूत चिकित्सा ६—विलुप्त वनौषधी के अन्वेषण पूर्ण सचित्र वर्णन ७—रोग विषयक प्रश्नोत्तर ८—मनस्वी विद्वानों के प्रयोग विषयक परीक्षाफल ९.—आयुर्वेदिक जगत के आवश्यक समाचार और १०—सारगर्भित उपयोगी मनोरञ्जन इत्यादि-२

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अरे यह सोने का पिंजड़ा है !

(ले०— श्री० कालीप्रसाद जी 'विरही')

पथिक ? अरे हाँ, सभी पथिक हैं, कौन यहाँ रहने आया है ?
किसे प्रेम है इस 'पड़ाव' से ? किसे यहाँ रहना भाया है ?
कोई घड़ी, दो घड़ी, कोई, कुछ क्षण का मेहमान हुआ;
सभी बनेंगे चलते, किसने, भला यहां 'छप्पर' छाया है ? १ ॥
कोई ठहर गया यदि कुछ क्षण, तो उसने जागीर न लूटी।
कोई चला गया बे-ठहरे, तो उस की तकदीर न फूटी !
क्या पाया उसने जो ठहरा ? क्या खोया, जो चला गया ?
एक 'छलावा' यहां ठहरना, एक सान्त्वना है यह झूठी !! २ ॥
यहां ठहर कर कुछ क्षण खोना, कोई 'अनुपम त्याग' नहीं है।
राह भूल कर इस पड़ाव में, पड़ रहना सौभाग्य नहीं है !!
एक भूल है यहां ठहरना, एक 'प्रमाद' बसेरा है;
यहां ठहर कर एक पथिक भी, तो, निकला बेदाग नहीं है !! ३ ॥
इसे छोड़ना है यह निश्चय; किन्तु छोड़ना सरल नहीं है!
पुंछ जायेगा जो 'दाग' न, यह वह आंसू तरल नहीं है !!
यह वह रंग है, जिसका धुलना, कपड़े ही को ले बैठेगा;
जो पीयूष बना बैठा है, वही काल-सा गरल यही है !! ४ ॥
जो आया इस थल में फिर वह, तिल भर आगे चल न सका है!
लौट लौट आया है, धक्के, खाकर भी वह टल न सका है!
यह वह पथ है, जिसके आगे, चलते राह कांपते पग हैं;
यह वह महाव्याल है, जिसके, आगे दीपक बल न सका है ! ५ ॥
यही, यही है वह पड़ाव, जिसमें सब मेरा 'मेरा' है।
यही, यही है वह सराय, जिसमें 'माया' का डेरा है!
यही, वही चक्कर है, जिसका, आदि अन्त कुछ ज्ञात नहीं;
यह वह 'फेरा' है कहता जग, जिसको "जैन-बसेरा" है !! ६ ॥
क्यों न चलें खुलने से पहले, रात की आंखें, जब चलना है ?
पड़े-पड़े करवट क्यों बदलें यहां न जब कुछ भी मिलना है !!
कमर कसें, पथ अपना नापें, क्यों खोवें हम यहां कमाई ?
चोर भरा मग, हम एकाकी, फिर न किसी का वश चलना है ! ७ ॥
यह शीतल छाया, फल पत्तियां, यह सुन्दरता, सु-मधुर-स्वर।
अरे यही तो है वह जादू, जो न खिसकने देगा तिलभर।।
यह सोने का वह पिंजड़ा है, जिससे मुक्ति न जीवन भर भी;
यह 'दूध-भात' ही की तो कैंची, काट रही है उड़ने के पर ॥ ८ ॥

———— —जियाली प्रताप